धर्म बोध संस्कार

आशीर्वाद
श्वेतपिच्छाचार्य श्री 108 विद्यानंद जी मुनिराज

लेखक
आचार्य श्री 108 वसुनन्दी जी मुनिराज

प्रकाशक
निर्ग्रन्थ ग्रंथमाला समिति (रजि.) दिल्ली

कृति	:	धर्म बोध संस्कार
आशीर्वाद	:	श्वेतपिच्छाचार्य श्री 108 विद्यानंद जी मुनिराज
लेखक	:	आचार्य श्री 108 वसुनन्दी जी मुनिराज
सहयोगी	:	संघस्थ साधुगण एवं त्यागीव्रती
संस्करण	:	प्रथम-2008 (3100 प्रतियां), द्वितीय-2010 (1000 प्रतियां), तृतीय-2017 (1000 प्रतियां)
प्रतियाँ	:	1000
मुद्रक	:	अरिहंत ग्रॉफिक्स मो. 9958819046, 9811021402
प्राप्ति स्थान	:	अतिशय क्षेत्र जम्बूस्वामी तपोस्थली क्षेत्र, बौलखेड़ा, कामां, राज.
	:	अतिशय क्षेत्र जयशांतिसागर निकेतन, मंडौला, गाजियाबाद, उ.प्र.
	:	हिमांशु जैन, फरीदाबाद 9024182930

लेखक की कलम से

-आचार्य वसुनंदी मुनि

सम्यग्ज्ञान स्व-पर प्रकाशी चिन्मय दीपक है, जिसके बिना आत्मा से साक्षात्कार कर पाना कठिन ही नहीं असंभव भी है जिस प्रकार दीपक, टार्च या सूर्य आदि के प्रकाश के अभाव में बाह्य पथ या लौकिक मार्ग में सम्यक् गमन कर पाना कठिन होता है, उसी प्रकार सम्यग्ज्ञान या आत्मा ज्ञान वु बिना मोक्ष में गमन असंभव हैं।

धर्म आत्मा का स्वभाव है, उस स्वभाव को प्राप्त करने के जो कारण हैं, वे सभी कारण भी व्यवहार धर्म हैं। व्यवहार धर्म के बिना निश्चय धर्म की प्राप्तिउसी प्रकार असंभव है जिस प्रकार बीज बिना वृक्ष की उत्पत्ति या मेघ बिना जल वृष्टि। जीवन में धर्म बोध एवं धार्मिक संस्कारों की उतनी अही आवश्यकता है जितनी कि शरीर को जीवंत रखने के लिए भोजन की, तन में प्राणों की स्थिरता के लिए प्राण वायु की।

प्रस्तुत धर्म ग्रंथ ''धर्म बोध संस्कार'' एक लघु काय ग्रंथ है, किन्तु इसमें धर्म का स्वरूप, सम्यक् ज्ञान/तत्व ज्ञान व धार्मिक संस्कारों का कोश है। जो भी पाठक-आबाल-वृद्ध इसका स्वाध्याय-अध्ययन, पठन-पाठन व मनन चिन्तन करेंगे वे निश्चित ही सन्मार्ग को प्राप्त कर आत्मा की निधि को प्राप्त कर सकेंगे।

प्रस्तुत ग्रंथ के प्रकाशन व लेखन में सहयोगी संघस्थ मुनिराज जी, ऐलक जी, क्षुल्लक जी एवं संघस्थ समस्त त्यागी-व्रतीयों को यथायोग्य प्रति वंदना, सुसमाधिरस्तु व धर्म वृद्धि शुभाशीष ग्रंथ के प्रकाशन में अपने न्यायोपार्जित द्रव्य का सदुपयोग करने वाले श्रावक को तथा प्रकाशन संस्था-निर्ग्रंथ माला समिति दिल्ली (रजि.) को मुद्रक को भी हमारा वात्सल्य पूर्वक धर्म वृद्धि शुभाशीष।

प्रस्तुत ग्रंथ में जो कुछ आपको अच्छा लग रहा है, उसे प.पू. राष्ट्र संत सिद्धांत चक्रवर्ती आचार्य गुरुदेव श्री विद्यानंद जी महाराज का करुणा युक्त प्रसाद मानकर ग्रहण कर लें तथा जो कोई त्रुटि दिखें उन्हें हमारा प्रमाद मानकर छोड़ दें। हसं वत् गुण ग्राही दृष्टि बनाकर पाठक/शिविरार्थी इसे आद्योपांत अवश्य पढ़ें।

णाणं पयासाओ

सूर्योदय होने से केवल तमोपुंज का ही अंत नहीं होता अपितु दिव्य प्रकाश का भी उदय होता है। प्रकाश जीवंतता का प्रतीक है, दिवाकर का प्रकाश दिव्यता का द्योतक भी है, उसके माध्यम से प्राणी दिव्यता को प्राप्त करने में समर्थ होता है। प्रकाश को केवल ज्ञान का ही प्रतीक नहीं माना अपितु सुख का कारण भी स्वीकार किया गया है। इसीलिए न्याय ग्रन्थों में इसलिये दीपक को स्वपर प्रकाशी निरूपित करते हुये ज्ञान की महिमा को प्रदिर्शित किया है। जिस प्रकार प्रकाश के बिना अंधकार में जीया गया जीवन अनेक दु:ख क्लेश, अशांति, वैमनस्यता, ईर्ष्या, विद्वेष, चिन्ता आदि विकारों को जन्म देने वाला होता है एवं दुष्कृत्यों का निमित्त कारण बन जाता है, उसी प्रकार चेतना में विद्यमान अंधकार मिथ्यात्व, अज्ञान, असंयम और दु:ख रूप प्रवृत्ति कराने वाला होता है।

बहिर्जगत में विद्यमान तमसावृत्त निशा का निराकरण करने के लिये आदित्य समर्थ होता है। अनेक चंद्रादि ज्योतिर्ग्रह निशा में उदित होकर अपने अस्तित्व का बोध कराते हुये शीतल प्रकाश भी प्रदान करते हैं। चेतना के प्रदेशों पर विद्यमान मिथ्यात्वादि के अंधकार को दूर करने में सूर्यादि अनेक ग्रह भी समर्थ नहीं होते, आत्मप्रदेशों में विद्यमान अंधकार को सम्यक्त्व, सम्यक्ज्ञान एवं सम्यक्चारित्र के तीन रत्न ही तिरोहित करने में समर्थ होते हैं। इन तीन रत्नों की प्राप्ति सर्वज्ञ, वीतरागी, प्राणी मात्र के लिए हितोपदेशी जिनेन्द्र देव के माध्यम से ही संभव है किन्तु वर्तमान में दुखमा नाम का पंचमकाल उदयावस्था को प्राप्त है अत: भरत, ऐरावत क्षेत्र में केवली भगवान का यहाँ सद्भाव नहीं है, उनके अभाव में जिनवाणी भव्य प्राणियों के मिथ्यात्वादि अंधकार को दूर करने में समर्थ है।

आ. पद्मनन्दी स्वामी जी ने पद्मनंदीपंचविंशतिका में लिखा है-

सम्प्रत्यस्ति ने केवली किल किलौ त्रैलोक्यचूड़ामणि-
स्तद्वाच: परमासतेऽत्र भरत क्षेत्रो जगद्योतिका।
सद्रत्नत्रयधारिणो यतिवरास्तेषां समालम्बनं,
तत्पूजा जिनवाचिपूजनमत: साक्षाज्जिन: पूजित:।।

वर्तमान में इस कलिकाल में तीन लोक के पूज्य केवली प्रभु इस भरत क्षेत्र में साक्षात् नहीं हैं तथापि समस्त भरतक्षेत्र में जगत्प्रकाशिनी केवली प्रभु की वाणी मौजूद है तथा उस वाणी से आधारस्तंभ श्रेष्ठ रत्नत्रयधारी मुनि भी हैं इसीलिए उन मुनि का पूजन तो सरस्वती का पूजन है तथा सरस्वती का पूजन साक्षात् केवली का पूजन है।

जिनवाणी का संवर्धन, संरक्षण एवं संस्थिति वर्तमान में निर्ग्रंथ साधु आदि

चतुर्विध संघ से है। निर्ग्रंथ संत आदि आत्मसाधक जिनवाणी की दिव्य देशना के माध्यम से स्वपर का कल्याण करने में संलग्न हैं। जिनवाणी का प्रचार-प्रसार ज्ञानावरणी, दर्शनावरणी कर्म के क्षयोपशम को ही वृद्धिंगत नहीं करता अपितु मोहनीय कर्म के क्षयोपशम को वृद्धिंगत करने में भी कारण है तथा अशुभ आयु, अशुभ नाम, नीच गोत्र, असाता वेदनीय एवं अंतराय कर्म के बंधन से बचाने वाला है, आत्मकल्याण के मार्ग में आने वाले विघ्नों को विलुप्त करने वाला है। जिनवाणी के सम्यक् प्रचार-प्रसार असातावेदनीय को सातावेदनीय में, अशुभ नामकर्म को शुभ नामकर्म में, नीचगोत्र को उच्चगोत्र में संक्रमित भी किया जा सकता है। जिनवाणी के अध्ययन-अध्यापन से शुभास्रव, सातिशय पुण्य का बंध, अशुभ का संवर एवं पूर्वबद्ध कर्मों की निर्जरा होती है।

वर्ष 2016-2017 हम परम पूज्य अभीक्ष्ण ज्ञानोपयोगी आचार्य श्री वसुनंदी जी गुरुदेव के स्वर्ण जयन्ती वर्ष के रूप में अनेक धार्मिक अनुष्ठानों के साथ आयोजित कर रहे हैं। इसी श्रृंखला में आचार्य प्रणीत वर्तमान में अनुपलब्ध बहुपयोगी 50 शास्त्रों का प्रकाशन करने का संकल्प निर्ग्रंथ ग्रंथमाला समिति आदि संस्थाओं ने लिया है। उसी क्रम में प्रस्तुत ग्रंथ 'धर्म बोध संस्कार' आपके श्री करकमलों में स्वपर हित की मंगल भावना से समर्पित है।

हमें आशा ही नहीं अपितु पूर्ण विश्वास है कि आप प्रस्तुत ग्रंथ के माध्यम से स्व-पर कल्याण की भावना को वृद्धिंगत करते हुए जिनशासन की प्रभावना में भी निमित्त बनेंगे। सुधी पाठकों से सविनय अनुरोध है कि वे प्रस्तुत ग्रंथ से स्वकीय पात्रता के अनुसार आत्मा को पवित्र करने वाली सतत प्रवाही श्रुत गंगा से श्रुतामृत को ग्रहण कर उसका सदुपयोग ही करें। हंसवत् क्षीरग्राही दृष्टि बनाकर गुणों को ही ग्रहण करें, दोषों का परिमार्जन करने में तत्पर हों। प्रमादवश, अज्ञानतावश हुयी त्रुटियों को या चूक को मूल या चूक समझकर ही विसर्जित कर दें। आप जैसे सुधी पाठक इस ग्रंथ रूपी दधिका में उतरकर नवनीत को ही ग्रहण करें क्योंकि कोई भी ग्वाल या गोपी छाछ ग्रहण करने के उद्देश्य से दधि मंथन नहीं करती। अतः आप भी तदैव प्रवृत्ति करें।

मैं अंतस् की समग्र निष्ठा, भक्ति, समर्पण के साथ सर्वज्ञ देव, श्रुत सिंधु एवं निर्ग्रंथ गुरुओं के चरणों मे अनंतशः प्रणाम निवेदित करता हूँ तथा परम पूज्य आचार्य श्री वसुनंदी जी गुरुदेव के पद कमलों में सिद्ध, श्रुत, आचार्य भक्ति सहित कोटिशः नमन करता हुआ उनके स्वस्थ संयमी जीवन की एवं आत्म ध्यान के संवर्द्धन की भावना करता हूँ।

जिन श्रुताम्बुज चंचरीक

- मुनि प्रज्ञानंद

अनुक्रमणिका

भाग-1

अध्याय - 1	मंगल गान	9
अध्याय - 2	महामंत्र णमोकार	10
अध्याय - 3	विश्व मंगल पाठ	13
अध्याय - 4	तीर्थंकर	17
अध्याय - 5	देवदर्शन विधि	22
अध्याय - 6	हमारे परमाराध्य-देव-शास्त्र-गुरू	26
अध्याय - 7	बाल प्रार्थना	31
अध्याय - 8	भगवान-ऋषभ देव	32
अध्याय - 9	बालकों की दैनिक चर्या	36
अध्याय - 10	दर्शन पाठ	40

भाग-2

अध्याय - 1	धर्म बोध संस्कार	42
अध्याय - 2	पंचपरमेष्ठियों के मूलगुण	44
अध्याय - 3	जीव-अजीव	50
अध्याय - 4	इन्द्रिय और मन	53
अध्याय - 5	दु:ख के कारण-पाप	57
अध्याय - 6	बारह भावना	60
अध्याय - 7	कषाय	66
अध्याय - 8	सामान्य परिचय भगवान महावीर स्वामी का संक्षिप्त परिचय	69
अध्याय - 9	आहार दान विधि	72
अध्याय - 10	मेरी भावना	76

भाग-3

अध्याय - 1	श्री पार्श्वनाथ स्तुति	81
अध्याय - 2	सप्त तत्व व नव पदार्थ	84
अध्याय - 3	महापाप-सप्त व्यसन	89
अध्याय - 4	भक्ष्य-अभक्ष्य पदार्थ	93
अध्याय - 5	श्रावक के षट आवश्यक कर्त्तव्य	97
अध्याय - 6	श्रावक के बारह व्रत	101
अध्याय - 7	सोलह कारण भावना	105
अध्याय - 8	भगवान चन्द्र प्रभ स्वामी	109
अध्याय - 9	सम्यक् दर्शन	113
अध्याय - 10	आलोचना पाठ	117

भाग-4

अध्याय - 1	दर्शन पाठ	124
अध्याय - 2	श्रावक की ग्यारह प्रतिमायें	128
अध्याय - 3	माता के सोलह स्वप्न	132
अध्याय - 4	देव पूजन विधि	135
अध्याय - 5	देव पूजन जलाभिषेक व प्रक्षाल पाठ	139
अध्याय - 6	लेश्या	154
अध्याय - 7	ज्ञान	158
अध्याय - 8	गति मार्गणा	163
अध्याय - 9	सोलहवें तीर्थंकर भगवान शांतिनाथ का संक्षिप्त परिचय	167
अध्याय - 10	दर्शन स्तोत्र	169

भाग-1

अध्याय 1

''मंगल गान''

अरिहंतों को नमस्कार, श्री सिद्धों को नमस्कार।
आचार्यों को नमस्कार, उपाध्यायों को नमस्कार।।
जग में जितने साधुगण हैं, उन सबको बंदू बार-बार।
अरिहंतों .....।

सब पाप मिटाता नमस्कार, सब दुःख मिटाता नमस्कार।
सब विघ्न नशाता नमस्कार, सब सुख दाता नमस्कार।।
नमस्कार ही महामंत्र है, सब मंगल का ये आधार।
अरिहंतों .....।

जग में मंगल चार कहे हैं, और चार ही उत्तम हैं।
अरिहंत, सिद्ध साधु, जिन धर्मा, यही चार शरणोत्तम हैं।।
इन चारों की शरण को पाकर मिलता मोक्ष महल का द्वार।
अरिहंतों .....।

णमोकार मंत्र के जपने से, सब कर्मनष्ट हो जाते हैं।
महामंत्र के सुनने से, पशु भी सुरगति पा जाते हैं।।
तीन लोक में सर्वश्रेष्ठ है, महामंत्र ये नमस्कार।
अरिहंतों .....।

ये पाँचों पद पैंतीस अक्षर, सार जग में जानिये।
सब काम सिद्ध होंगे इसी से, विश्वास मन में मानिये।।
है अनन्त शक्ति इसी में ओंकार को नमस्कार।
अरिहंतों .....।

अध्याय 2

''महामंत्र णमोकार''

प्रश्न 1. णमोकार मंत्र किसे कहते हैं?

उत्तर जिस मंत्र के द्वारा पंच परमेष्ठियों को नमस्कार किया जाता है, उसे णमोकार मंत्र कहते हैं।

प्रश्न 2. णमोकार मंत्र को अर्थ सहित शुद्ध लिखो?

उत्तर

णमो अरिहंताणं	अरिहंतों को नमस्कार हो।
णमो सिद्धाणं	सिद्धों को नमस्कार हो।
णमो आइरियाणं	आचार्यों को नमस्कार हो।
णमो उवज्झायाणं	उपाध्यायों को नमस्कार हो।
णमो लोए सव्व साहूणं	लोक में विद्यमान (त्रिकालवर्ती पाँचों परमेष्ठियों को) समस्त साधुओं को नमस्कार हो।

प्रश्न 3. परमेष्ठी किसे कहते हैं?

उत्तर जो परम पद में स्थित हैं, उन्हें परमेष्ठी कहते हैं।

प्रश्न 4. परमेष्ठी कितने होते हैं, और कौन-कौन? नाम बताओ।

उत्तर परमेष्ठी पाँच होते हैं 1. अरिहंत, 2. सिद्ध, 3. आचार्य, 4. उपाध्याय, 5. साधु।

प्रश्न 5. अरिहंत परमेष्ठी किसे कहते हैं?

उत्तर जिन्होंने चार घातिया कर्मों को नष्ट कर दिया है, वे अरिहंत परमेष्ठी कहलाते हैं।

प्रश्न 6. सिद्ध परमेष्ठी किसे कहते हैं?

उत्तर जिन्होंने समस्त कर्मों को नष्ट कर दिया है, वे सिद्ध परमेष्ठी कहलाते हैं।

प्रश्न 7. आचार्य परमेष्ठी किसे कहते हैं?

उत्तर जो मुनि संघ के नायक होते हैं, दीक्षा व प्रायश्चित देते हैं, स्वयं पंचाचारों का पालन करते हैं, और सभी साधुओं से भी पालन कराते हैं, वे आचार्य परमेष्ठी होते हैं।

प्रश्न 8. उपाध्याय परमेष्ठी किसे कहते हैं?

उत्तर जो मुनि स्वयं पढ़ते हैं व संघ के सभी साधुओं को पढ़ाने का दायित्व संभालते हैं, वे उपाध्याय परमेष्ठी होते हैं।

प्रश्न 9. साधु परमेष्ठी किसे कहते हैं?

उत्तर जो जीवन पर्यंत के लिए विषय-कषायों का, हिंसादि पाँच पापों का त्याग करते हैं, दिगम्बर (नग्न) रहकर आत्म ज्ञान, ध्यान व तपस्या करते हैं वे साधु परमेष्ठी कहलाते हैं।

प्रश्न 10. पाँचों परमेष्ठी कब से हैं, कब तक रहेंगे?

उत्तर ये पाँचों परमेष्ठी अनादि काल से हैं, अनंत काल तक रहेंगे।

प्रश्न 11. णमोकार मंत्र का क्या महत्व है?

उत्तर एसो पंच णमोक्कारो, सव्व पावप्पणासणो।
मंगलाणं च सव्वेसिं, पढ़मं हवई मंगलम्।।

अर्थ यह पंच नमस्कार मंत्र सभी पापों को नष्ट करता है, एवं सभी मंगलों में पहला मंगल है।

प्रश्न 12. यह णमोकार मंत्र कब से है, कब तक रहेगा?

उत्तर यह णमोकार मंत्र अनादि काल से है, अनंत काल तक रहेगा।

प्रश्न 13. णमोकार मंत्र के प्रभाव से किसे क्या फल मिला?

उत्तर णमोकार मंत्र के प्रभाव से, कुत्ते, बैल, नाग-नागिन, बकरा आदि पशुओं को देवगति मिली। ये कहानियाँ गुरुजी से सुनो।

प्रश्न 14. णमोकार मंत्र के अपमान से किसे क्या फल मिला?

उत्तर सुभौम चक्रवर्ती नरक में गया। इसकी कहानी अपने गुरुजी से सुनो।

प्रश्न 15. णमोकार मंत्र में कितने अक्षर व मात्रायें हैं?

उत्तर णमोकार मंत्र में पैंतीस (35) अक्षर व अट्ठावन (58) मात्रायें हैं।

प्रश्न 16. णमोकार मंत्र के पर्यायवाची नाम कौन-कौन से हैं?

उत्तर णमोकार मंत्र, मूलमंत्र, महामंत्र, नमस्कार मंत्र, नवकार मंत्र, अपराजित मंत्र आदि।

प्रश्न 17. णमोकार मंत्र में विद्यमान पाँचों परमेष्ठी के कितने मूलगुण होते हैं?

उत्तर णमोकार मंत्र में विद्यमान पाँचों परमेष्ठी के एक सौ तैंतालीस (143) (46 + 8 + 36 + 25 +28 = 143) मूलगुण होते हैं।

प्रश्न 18. णमोकार मंत्र में इस पाठ को पढ़ने से आपको क्या शिक्षा मिलती है?

उत्तर महामंत्र णमोकार का कभी अपमान नहीं करना चाहिए, श्रद्धा, भक्तिपूर्वक सदैव पढ़ना चाहिए, कहीं लिखा हो तो उस पर कभी पैर आदि भूल कर भी नहीं रखना चाहिए।

अध्याय 3

''विश्व मंगल पाठ''

प्रश्न 1. विश्व का मंगल करने वाला कौन सा पाठ है?

उत्तर चत्तारि मंगलं, अरिहंता मंगलं, सिद्धा मंगलं।
साहू मंगलं, केवलि पण्णत्तो धम्मो मंगलम्।।

प्रश्न 2. इस मंगल पाठ का क्या अर्थ है?

उत्तर मंगल चार हैं? 1. अरिहंत मंगल हैं, 2. सिद्ध मंगल हैं, 3. साधु मंगल हैं, 4. केवली (सर्वज्ञ) भगवान द्वारा कहा हुआ धर्म मंगल है।

प्रश्न 3. क्या इसका पाठ करने से विश्व में मंगल हो जायेगा?

उत्तर हाँ! श्रद्धा से यदि सभी इसका पाठ करें, तो विश्व में अवश्य ही मंगल होगा।

प्रश्न 4. मंगल किसे कहते हैं?

उत्तर जिससे पाप नष्ट हों ओर सच्चे सुख की प्राप्ति हो, वही मंगल है।

प्रश्न 5. क्या मंगल चार ही हैं, इससे कम ज्यादा नहीं हैं?

उत्तर हाँ, विश्व में ये चार ही प्रकार के मंगल हैं, इन चार में ही विश्व के समस्त मंगलों का समावेश हो जाता हैं जिनका इनमें समावेश नहीं होता, वो मंगल ही नहीं हैं।

प्रश्न 6. क्या सभी पंच परमेष्ठी मंगल नहीं हैं यदि हैं तो उन सभी का नाम क्यों नहीं लिया?

उत्तर पाँचों परमेष्ठी नियम से मंगल हैं, उनका नाम लिया है, अरिहंत परमेष्ठी व सिद्ध परमेष्ठी कहने के उपरांत साधु परमेष्ठी में आचार्य, उपाध्यायों को समाविष्ट किया है।

प्रश्न 7. जिस प्रकार आचार्य, उपाध्याय को साधुओं में समाहित किया है, उसी प्रकार अरिहंत व सिद्धों को भगवान शब्द में समाहित क्यों नहीं किया?

उत्तर अरिहंत भगवान अभी संसार में हैं, उनके कर्म नष्ट नहीं हुए, इसलिए अरिहंतों को सिद्धों में समाविष्ट नहीं किया, और न ही सिद्धों को अरिहंतों में समाविष्ट कर सकते हैं।

प्रश्न 8. अरिहंत और सिद्धों में और भी कुछ भेद हैं, क्या?

उत्तर अरिहंत भगवान ने मात्र घातिया कर्म नष्ट किए हैं, अतः वे सकल परमात्मा हैं, शरीर सहित हैं, मध्यलोक में ही समवशरण या गंध कुटी में विराजते हैं, दिव्यध्वनि खिरती है। जब कि सिद्ध परमेष्ठी समस्त कर्मों से, शरीर से रहित निकल परमात्मा हैं, लोक के अग्रभाग सिद्ध शिला पर रहते हैं, उनकी ध्वनि भी नहीं खिरती।

प्रश्न 9. लोक में उत्तम कितने हैं?

उत्तर लोक में उत्तम चार हैं, 1. अरिहंत, 2. सिद्ध, 3. साधु, 4. केवली प्रणीत धर्म।

प्रश्न 10. उत्तम का पाठ अर्थ सहित बताओ?

उत्तर चत्तारि लोगुत्तमा लोक में चार उत्तम हैं।

अरिहंता लोगुत्मा अरिहंत भगवान लोक में उत्तम हैं।

सिद्ध लोगुत्तमा सिद्ध भगवान लोक में उत्तम हैं।

साहू लोगुत्तमो साधु (आचार्य, उपाध्याय, साधु) लोक में उत्तम हैं।

केवलि पण्णन्तों धम्मो लोगुत्तमा केवली प्रणीत धर्म लोक में उत्तम हैं।

प्रश्न 11. शरण किसे कहते हैं?

उत्तर शरण आश्रय या सहारे को कहते हैं, जिनका आश्रय लेने से आत्मा की पापों से रक्षा होती है, वही सच्ची शरण हैं।

प्रश्न 12. उत्तम किसे कहते हैं?

उत्तर जो तीन लोक में सर्वश्रेष्ठ या सार भूत (सर्वोत्कृष्ट) हैं, वे ही उत्त्म हैं।

प्रश्न 13. सच्ची शरण चार होती है 1. अरिहंत, 2. सिद्ध, 3. साधु, 4. केवली प्रणीत धर्म।

उत्तर माता-पिता, भाई-बहन, पति-पत्नी, पुत्र-पुत्री, मालिक-नौकर, पुलिस थाना व अदालत, धन सम्पत्ति आदि भी तो शरण कही जाती है, उनका नामोल्लेख आपने क्यों नहीं किया?

प्रश्न 14. सच्ची शरण पूर्व में कही हुई चार ही हैं। माता पिता आदि ये सब झूठी शरण हैं, क्योंकि इनका सहारा लेने से आत्मा की पापों से रक्षा नहीं होती।

उत्तर सच्ची शरण चार ही क्यों है?

प्रश्न 15. क्योंकि विश्व में ये चार ही मंगल करने वाले हैं?, यही सर्वश्रेष्ठ है।, और ये ही चार आत्मा की पापों से रक्षा करने वाले हैं, इन चार शरणों में ही विश्व की समस्त सच्ची शरणों का समावेश हो जाता है।

उत्तर सच्ची शरण का पाठ अर्थ सहित सुनाओ?

प्रश्न 16. चत्तारि सरणं पवज्जामि, अरिहंत सरणं पवज्जामि, सिद्धा सरणं पवज्जामि, साहू सरणं पवज्जामि, केवली पण्णत्तो ध म्मो सरणं पवज्जामि।

अर्थ मैं चार की शरण में जाता हूँ मैं अरिहंतों की शरण में जाता हूँ, मैं सिद्धों की शरण में जाता हूँ, मैं साधुओं (आचार्य, उपाध्याय, साधु) की शरण में जाता हूँ'' मैं केवली प्रणीत जिन धर्म की शरण में जाता हूँ।

प्रश्न 17. केवली प्रणीत धर्म को ही मंगल, उत्तम व शरणभूत क्यों कहा है?

उत्तर केवली भगवान सर्वज्ञ या अनन्त ज्ञानी हैं, अतः उनके द्वारा कहा हुआ धर्म ही समीचीन धर्म हो सकता है, आचार्य, उपाध्याय, साधु भी उसी धर्म का अनुकरण करते हैं, वे पूर्ण ज्ञानी भी नहीं हैं, तथा सिद्ध परमेष्ठी पूर्ण ज्ञानी तो हैं किन्तु शरीर से रहित है।, वे धर्म को कह नहीं सकते इसलिए ''केवली प्रणीत'' विशेषण का प्रयोग किया है।

प्रश्न 18. इस पाठ का पढ़ने से क्या शिक्षा मिलती है?

उत्तर मंगलोत्तम व शरणभूत, मंगल काव्यों को हमें आत्म कल्याण व विश्व शांति की भावना से नित्य पढ़ना चाहिए। इसके बिना आत्मा का कल्याण होना असंभव है तथा इसकी कभी अविनय नहीं करना चाहिए। अपने पूज्य गुरुजनों से नित्य मांगलीक स्वरूप सुनना चाहिए। ये भी एक सौ सत्ताइस (127) अक्षरों का शाश्वत मंत्र है।

अध्याय 4

''तीर्थंकर''

प्रश्न 1. तीर्थंकर किसे कहते हैं?

उत्तर जिनके कल्याणक होते हैं, समवशण ही जिनकी धर्म सभा होती है, जो धर्म तीर्थ के प्रवर्तक होते हैं वे तीर्थंकर कहलाते हैं।

प्रश्न 2. कल्याणक किसे कहते हैं?

उत्तर तीर्थंकर भगवान के गर्भादि पाँच महोत्सवों को कल्याणक कहते हैं।

प्रश्न 3. उन्हें महोत्सव न कहकर कल्याणक क्यों कहते हैं?

उत्तर तीर्थंकर भगवान के गर्भ आदि महोत्सव संसारी भव्य जीवों के कल्याण में निमित्त होते हैं, इसलिए कल्याणक कहे जाते हैं। ये महोत्सव भी संसार विच्छेदक होते हैं।

प्रश्न 4. गर्भ आदि पाँच कल्याणक कौन-कौन से हैं?

उत्तर गर्भ कल्याणक, जन्म कल्याणक, तप कल्याणक, ज्ञान कल्याणक, मोक्ष कल्याणक।

प्रश्न 5. इनमें दीक्षा कल्याणक व निर्वाण कल्याणक क्यों नहीं कहा, जबकि इनके नाम भी सुनने में आते हैं?

उत्तर दीक्षा कल्याणक, परिरिष्क्रमण कल्याणक, प्रवज्या कल्याणक ये ही तप कल्याणक के पर्यायवाची नाम हैं तथा निर्वाण कल्याणक, सर्वकर्म क्षय कल्याणक ये मोक्ष कल्याणक के ही पर्यायवाची नाम हैं।

प्रश्न 6. समवशरण किसे कहते हैं?

उत्तर तीर्थंकर भगवान की धर्म सभा का नाम समवशरण है। वह इन्द्र की आज्ञा से धन कुबेर द्वारा बनाई जाती है, इसमें अपरिमित वैभव होता है।

प्रश्न 7. समवशरण की और क्या विशेषता होती है?

उत्तर समवशरण में सभी भव्य जीव समान रूप से प्रेमपूर्वक बैठते हैं। सभी को समान रूप से शरण मिलती है, इसमें बारह सभायें होती हैं। विशेष समवशरण वाले अध्याय में आगे वर्णन करेंगे, वहाँ से पढ़ लें या गुरु जी से पूछ लें।

प्रश्न 8. धर्म किसे कहते हैं?

उत्तर जिसके माध्यम से भव्य जीव संसार के दुःखों से मुक्त होकर उत्तम सुख को प्राप्त करते हैं, उसे धर्म कहते हैं, अथवा वस्तु के स्वभाव का नाम ही धर्म है।

प्रश्न 9. तीर्थ किसे कहते हैं?

उत्तर जिसके माध्यम से प्राणी भव सागर तिरते हैं वहीं तीर्थ है, अर्थात् धर्म ही तीर्थ है अथवा तीर्थंकर प्रभु के निमित्त से वह भूमि तीर्थ कहलाती है, जहाँ भगवान के कल्याणक होते हैं।

प्रश्न 10. तीर्थंकर कितने होते हैं?

उत्तर तीर्थंकर अनन्त होते हैं, किन्तु एक चतुर्थ काल में भरत व ऐरावत क्षेत्र में चौबीस ही तीर्थंकर होते हैं।

प्रश्न 11. तीर्थंकर कहाँ-कहाँ होते हैं?

उत्तर तीर्थंकर भरत क्षेत्र, ऐरावत क्षेत्र व विदेह क्षेत्र में ही होते हैं, ये ही कर्म हैं, यहाँ का भव्य मनुष्य ही कर्म क्षय करने में समर्थ होता है।

प्रश्न 12. भरत क्षेत्र में कितने व कौन-कौन तीर्थंकर हुए?

उत्तर भरत क्षेत्र में भूतकाल में अनंत तीर्थंकर हुए, भविष्य में भी अनन्त होंगे, वर्तमान काल में आदिनाथ आदि 24 तीर्थंकर हुए।

प्रश्न 13. वर्तमान काल के चौबीस तीर्थंकरों के नाम बताओ?

उत्तर

1. श्री आदिनाथ जी	2. श्री अजितनाथ जी
3. श्री संभवनाथ जी	4. श्री अभिनंदननाथ जी
5. श्री सुमतिनाथ जी	6. श्री पद्मप्रभ जी
7. श्री सुपार्श्वनाथ जी	8. श्री चन्द्रप्रभ जी
9. श्री पुष्पदंत जी	10. श्री शीतलनाथ जी
11. श्री श्रेयांसनाथ जी	12. श्री वासपूज्य जी
13. श्री विमल नाथ जी	14. श्री अनंतनाथ जी
15. श्री धर्मनाथ जी	16. श्री शांतिनाथ जी
17. श्री कुंथुनाथ जी	18. श्री अरहनाथ जी
19. श्री मल्लिनाथ जी	20. श्री मुनि सुव्रतनाथ जी
21. श्री नमि प्रभ जी	22. श्री नेमिनाथ जी
23. श्री पार्श्वनाथ जी	24. श्री महावीर स्वामी जी

प्रश्न 14. चौबीस तीर्थंकरों के नामों को कण्ठस्थ करने हेतु कोई काव्य या छंद हो तो बताने की कृपा करें।

उत्तर ऋषभ अजित संभव अभिनंदन, सुमति पद्म सुपार्श्व जिनराय।।
चन्द्र पुहुप शीतल श्रेयांस जिन, वासपूज्य पूजित सुरराय।।
विमल अनन्त धर्म जस उज्जवल, शान्ति कुंथ अरु मल्लिमलाय।।
मुनि सुव्रत नमि नेमि पार्श्व प्रभु, वर्धमान पद शीश झुकाय।।

प्रश्न 15. क्या एक तीर्थंकर के एक से अधिक नाम हैं, यदि हाँ तो कौन-कौन से, बताने की कृपा करें

उत्तर प्रथम तीर्थंकर श्री ऋषभनाथ जी के आदिनाथ आदि 1008 नाम हैं, किन्तु दो नाम ही सुप्रसिद्ध हैं।

9वें तीर्थंकर श्री पुहुप दंत या पुष्पदंत का नाम श्री सुविधि नाथ भी है।

22 वें तीर्थंकर श्री नेमिनाथ का नाम श्री अरिष्टनेमि भी है।

24 वें तीर्थंकर श्री महावीर स्वामी के वर्धमान, सन्मति, वीर, अतिवीर ये चार नाम और भी हैं।

प्रश्न 16. बाल ब्रह्मचारी तीर्थंकर कितने व कौन-कौन से तीर्थंकर हुए?

उत्तर बाल ब्रह्मचारी पाँच तीर्थंकर हुए, इन्होंने स्वेच्छा से शादी नहीं करायीं, दीक्षा लेकर स्वपर कल्याण हेतु धर्म तीर्थ की प्रवृत्ति की।

1. श्री वासपूज्य जी, 2. श्री मल्लिनाथ जी, 3. श्री नेमिनाथ जी, 4. श्री पार्श्वनाथ जी, 6. श्री महावीर स्वामी जी।

प्रश्न 17. तीर्थंकर की पहचान कैसे होती है?

उत्तर तीर्थंकरों की पहचान चिन्हों से होती है, तीर्थंकर बालक के दाहिने पैर के अँगूठे के निचले भाग में जो चिन्ह होता है, वही चिन्ह सौधर्म इन्द्र, पाण्डुक शिला पर जन्माभिषेक के समय घोषित करता है।

प्रश्न 18. ऋषभ देव आदि चौबीस तीर्थंकरों के चिन्ह काव्य में बताने की कृपा करें, जिससे जल्दी हम कण्ठस्थ कर सकें?

उत्तर ऋषभदेव आदि चौबीस तीर्थंकरों के नाम चिन्ह यहाँ दे रहे है। आप गा-गाकर पढ़ें, इससे जल्दी कण्ठस्थ हो जायेंगे।

ऋषभनाथ का बैल बोलो, अजित नाथ के हाथी।
सम्भवनाथ के घोड़ा बोलो, अभिनन्दन के बन्दर।।
सुमतिनाथ के चकवा बोलो, पदम प्रभु के लाल कमल
सुपार्श्वनाथ के साथिया बोलो, चन्द्रप्रभु के चन्द्रमा।।
पुष्पदन्त के मगर बोला, शीतलनाथ के कल्प वृक्ष।
श्रेयांसनाथ के गेंडा बोला, वासपूज्य के भैंसा।।
विमलनाथ के सूकर बोलो, अनन्तनाथ के हरिण।।
कुंथुनाथ के बकरा बोला, अरहनाथ के मछली।
मल्लिनाथ के कलश बोला, मुनिसुव्रत के कछुआ।।
नमिनाथ के नीलकमल हैं, नेमिनाथ के शंख।
पार्श्वनाथ के सर्प बड़ा है, वर्धमान के सिंह।।

तीर्थंकरों के नाम एवं चिन्ह

नाम	चिन्ह	नाम	चिन्ह
1 ऋषभनाथ	बैल	13 विमलनाथ	शूकर
2 अजितनाथ	हाथी	14 अनन्तनाथ	सेही
3 संभवनाथ	घोड़ा	15 धर्मनाथ	वज्रदण्ड
4 अभिनन्दन	बंदर	16 शान्तिनाथ	हिरण
5 सुमतिनाथ	चकवा	17 कुन्थुनाथ	बकरा
6 पद्मप्रभ	कमल	18 अरहनाथ	मछली
7 सुपार्श्वनाथ	स्वस्तिक	19 मल्लिनाथ	कलश
8 चन्द्रप्रभ	चन्द्रमा	20 मुनिसुव्रतनाथ	कछुआ
9 पुष्पदन्त	मगर	21 नमिनाथ	नीलकमल
10 शीतलनाथ	कल्पवृक्ष	22 नेमिनाथ	शंख
11 श्रेयांसनाथ	गैंडा	23 पार्श्वनाथ	सर्प
12 वासुपूज्य	भैंसा	24 महावीर	सिंह

अध्याय 5

''देवदर्शन विधि''

प्रश्न 1. देवदर्शन करने का क्या अर्थ है?

उत्तर वीतरागी, सर्वज्ञ, हितोपदेशी, जिनेन्द्र भगवान को श्रद्धापूर्वक देखना अर्थात् श्रद्धा के नेत्रों से निहारना ही देव दर्शन है।

प्रश्न 2. देवदर्शन क्यों करना चाहिए?

उत्तर देवदर्शन करने से पापों का क्षय होता है, सच्चे सुख की प्राप्ति होती है, सभी मनोरथों की पूर्ति होती है, आत्मशान्ति मिलती है, इसलिए देवदर्शन करना चाहिए।

प्रश्न 3. देवदर्शन कब करना चाहिए?

उत्तर देव दर्शन प्रातःकाल, संध्याकाल में अवश्य ही करना चाहिए, इसके अतिरिक्त और भी कितनी भी बार कर सकते हैं।

प्रश्न 4. देवदर्शन प्रातःकाल कैसे करना चाहिए?

उत्तर प्रातःकाल स्नान करके, शुद्ध वस्त्र पहनकर बिना कुछ खाये पीये, हाथ में पूजा की सामग्री लेकर देवदर्शन हेतु जाना चाहिए।

प्रश्न 5. मंदिर में स्नान कर व शुद्ध वस्त्र पहनकर क्यों जाना चाहिए?

उत्तर मंदिर जिनेन्द्र भगवान का स्थान है, वह पवित्र क्षेत्र है, वहाँ हम स्नानकर व शुद्ध वस्त्र पहनकर ही जाना चाहिए?

प्रश्न 6. मंदिर जी में दर्शन हेतु बिना खाये-पीये क्यों जाना चाहिए?

उत्तर मंदिर जी में भगवान के दर्शन हेतु बिना कुछ खाये पीये जाने से मन पवित्र रहता है, प्रमाद नहीं आता, चित्त को शांति मिलती है, यह भोजन आदि के उपरांत संभव नहीं है।

प्रश्न 7. प्रातःकाल सबसे पहले देवदर्शन क्यों करना चाहिए, अन्य क्यों नहीं?

उत्तर धर्मात्मा के लिए भगवान सर्वश्रेष्ठ है, अन्य सभी का दर्शन अश्रेष्ठ। इसलिए सबसे पहले भगवान के दर्शन करना चाहिए। प्रातःकाल सबसे पहले जिन दर्शन करने से अपने सभी काम मंगलमय होते हैं। दिन भर शांति व आनंद की अनुभूति होती है।

प्रश्न 8. मंदिर के लिए खाली हाथ क्यों नहीं जाना चाहिए?

उत्तर वीतरागी भगवान के दर्शन हेतु जायें तो हम भी वहाँ कुछ त्याग करें, त्याग की भावना भायें, जिससे उन जैसे बन सकें, खाली हाथ जाने वाला खाली ही रह जाता है।

प्रश्न 9. देवदर्शन हेतु रोज-रोज क्यों जाना चाहिए?

उत्तर जिससे कि हम अपने लक्ष्य को भूल नहीं जायें, हमें भी भगवान बनना है, बार-बार दर्शन करने से हमें अपना लक्ष्य याद रहता है, वैसे ही संस्कार आते हैं, अतः जैसे भोजन रोज करते हैं, उसी प्रकार देवदर्शन भी नित्य करना चाहिए।

प्रश्न 10. मंदिर जाने की विधि क्या है?

उत्तर स्नानकर, शुद्ध वस्त्र पहनकर, श्रद्धा व भक्ति से युक्त हो पूजन की सामग्री लेकर, मार्ग में नीचे देखकर चलें, मन ही मन णमोकार मंत्र या स्तुति पाठ पढ़ते हुए जायें, किसी से वार्तालाप न करें।

प्रश्न 11. मंदिर जी में कैसे प्रवेश करना चाहिए?

उत्तर पैर धोकर, मंदिर जी को सिर झुकाकर प्रणाम, करके व देहरी के चरण स्पर्श करते हुए, निःसहि-3, ॐ जय-3, नमोस्तु-3, कहते हुए प्रवेश करना चाहिए।

प्रश्न 12. मंदिर जी में प्रवेश करते समय और किन-किन बातों का ध्यान रखना चाहिए?

उत्तर मंदिर जी में कभी मोजे, जूते, चप्पल, सैंडल, पहनकर, चमड़े के पर्स, बैल्ट, आदि लेकर, जूठें, मुँह, बिना स्नान किए अर्थात् शौच आदि के अपवित्र वस्त्रों को पहनकर व तीव्र कषाय व पाप के परिणामों से भी प्रवेश नहीं करना चाहिए।

प्रश्न 13. निःसहि, ॐ जय व नमोस्तु शब्दों के क्या अर्थ हैं? तथा तीन ही बार क्यों कहना चाहिए?

उत्तर निःसहि शब्द का अर्थ ''कृपया हमें भी स्थान दे दीजिए'' मंदिर में दर्शन हेतु देवगति के देव भी जाते हैं, किन्तु वे दिखायी नहीं देते, अतः उनकी विराधना न हो इसलिए बीज वर्ण रूप निःसहि शब्द का तीन बार प्रयोग करना चाहिए। तीन बार बोलने का आशय है, भूत, भविष्य व वर्तमान काल सम्बन्धी देवों से स्थान मांगना।

ॐ जय का अर्थ ॐ पंचपरमेष्ठी का वाचक है, अतः पाँचों परमेष्ठी की मन-वचन-काय से जयकार करना, जिससे हम भी उनकी तरह तीन प्रकार के कर्मों (द्रव्य, भाव, नोकर्म) को जीतने में समर्थ हो सकें।

नमोस्तु का अर्थ है नमस्कार करना, सच्चे देव, शास्त्र, गुरु को नमस्कार हेतु तीन बार नमोस्तु कहना चाहिए।

प्रश्न 14. देवदर्शन किस प्रकार करना चाहिए?

उत्तर मंदिर जी या वेदी की सर्वप्रथम तीन परिक्रमा लगाना चाहिए, पुनः जयकार ध्वनि के साथ तीन बार घंटा बजाना चाहिए, चावल या फल आदि सामग्री के पाँच ढेरी से पुंज चढ़ाकर, स्तुति बोलना चाहिए तथा कायोत्सर्ग पूर्वक नमस्कार करना चाहिए एवं गंधोदक लगाना चाहिए।

प्रश्न 15. कायोत्सर्ग किसे कहते हैं एवं नमस्कार कैसे करना चाहिए?

उत्तर शरीर से मोह-ममता का त्याग कर, निश्चल खड़े होकर या बैठकर नौ बार णमोकार मंत्र पढ़ना कायोत्सर्ग है, अर्थात् शरीर से मोह का त्याग। नमस्कार बैठकर पंचांग, अष्टांग या गवासन से करना चाहिए। महिला वर्ग को तो गवासन से ही करना चाहिए।

प्रश्न 16. गंधोदक कैसे व कहाँ लगाना चाहिए?

उत्तर गंधोदक शरीर के उत्तम अंग-मस्तिष्क, सिर-ब्रह्मद्वार या नेत्रों पर लगाना चाहिए, नाभि के नीचे अधोभाग में नहीं लगाना

चाहिए। गंधोदक लगाने का संस्कृत या हिन्दी का छंद भी बोलना चाहिए। यह छंद भी बोल सकते हैं।

गंधोदक जिनराज का गुण से भरा अनेक,
जो इसका सेवन करे दु:ख रहे ना एक।
दु:ख रहे ना एक, कोढ़ी निश-दिन इसे लगावे,
इसे लगाने वाले का तन-मन निर्मल हो जावे।।

अथवा

निर्मलं निर्मलीकरणं, पवित्रं पाप नाशकम्।
जिन गंधोदकं वंदे कर्माष्टक विनाशकम्।।

अर्थ यह निर्मल गंधोदक आत्मा को निर्मल बनाने वाला है, मन को पवित्र कर पापों का नाश करने वाला है, ऐसे जिनेन्द्र भगवान के अभिषिक्त जल-गंधोदक की अष्ट कर्मों के विनाश हेतु में वंदना करता हूँ।

प्रश्न 17. देवदर्शन के बाद पुनः क्या करना चाहिए?

उत्तर देव दर्शन के बाद जिनवाणी को व साधुओं को विनयपूर्वक सामग्री चढ़ाकर दर्शन करने चाहिए, जिनवाणी के सामने चार ढेरी चढ़ाकर दर्शन करना चाहिए, क्योंकि जिनवाणी चार अनुयोगों में विभक्त है, उसका ज्ञान मुझे हो, तथा दिगम्बर साधुओं के सामने रत्नत्रय प्राप्ति की भावना से तीन ढेरी पुंज चढ़ाकर दर्शन करना चाहिए, जिनवाणी का स्वाध्याय व साधुओं के प्रवचन भी सुनना चाहिए।

प्रश्न 18. देवदर्शन कर मंदिर जी से किस प्रकार लौटना चाहिए?

उत्तर देवदर्शन कर मंदिर जी से लौटते समय भगवान, जिनवाणी व गुरु को पीठ करके न लौटें, ''मुझे देव, शास्त्र, गुरु के दर्शन पुनः-पुनः हमेशा प्राप्त होते रहें'' ऐसी भावना के साथ लौटें, एवं असहि-3 कहकर लौटें। अर्थात् देव गति के जिन-जिन देवों से आपने जिनेन्द्र देव के दर्शनार्थ स्थान मांगा था, उसे विनयपूर्वक वापिस करके लौटें।

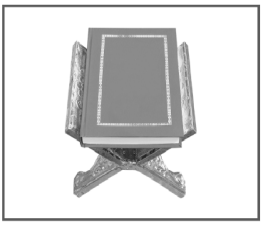
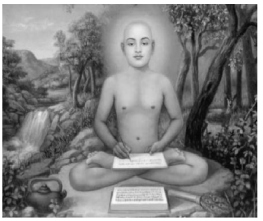

अध्याय 6

''हमारे परमाराध्य-देव-शास्त्र-गुरू''

प्रश्न 1. हमारे परमाराध्य कितने, कौन-कौन से हैं?

उत्तर हमारे परमाराध्य तीन हैं, सच्चे देव, शास्त्र, गुरू अथवा नवदेवता आराध्य हैं।

प्रश्न 2. सच्चे देव किन्हें कहते हैं?

उत्तर जो वीतरागी, सर्वज्ञ, हितोपदेशी होते हैं, वे ही सच्चे देव हैं।

प्रश्न 3. वीतरागी किसे कहते हैं?

उत्तर जो राग-द्वेष आदि अट्ठारह दोषों से सर्वथा रहित हैं, वे वीतरागी कहलाते हैं।

प्रश्न 4. सर्वज्ञ किसे कहते हैं?

उत्तर जो तीन काल एवं समस्त लोक अलोकवर्ती और समस्त द्रव्य, गुण, पर्यायों को (समस्त पदार्थों को) एक साथ जानते व देखते हैं, वही सर्वज्ञ सर्वदर्शी कहलाते हैं।

प्रश्न 5. हितोपदेशी किसे कहते हैं?

उत्तर जो भव्य जीवों को बिना राग, द्वेष या बिना स्वार्थ के आत्म कल्याण का उपदेश देते हैं, वे ही हितोपदेशी कहलाते हैं।

प्रश्न 6. सच्चे देव के कितने भेद हैं और कौन-कौन से?

उत्तर सच्चे देव के दो भेद हैं 1. अरिहंत जी, 2. सिद्ध जी।

प्रश्न 7. सच्चे शास्त्र किसे कहते हैं?

उत्तर जो जिनेन्द्र भगवान द्वारा प्रणीत यानि कथित हों, गणधर परमेष्ठी द्वारा संग्रहीत, म = मुनिराजों द्वारा रचित ऐसे आगम ग्रंथ ही सच्चे शास्त्र होते हैं।)

प्रश्न 8. सच्चे शास्त्रों की और क्या विशेषता होती है?

उत्तर सच्चे शास्त्रों में वस्तु के अनेक धर्मों का, स्याद्वाद पद्धति से कथन होता है, वे अहिंसा धर्म के पोषक होते हैं, प्राणी माात्र के कल्याण के लिए होते हैं। वस्तु तत्व का नय व प्रमाण की अपेक्षा यथार्थ स्वरूप वर्णन होता है।

प्रश्न 9. सच्चे शास्त्रों के मुख्य कितने भेद हैं और कौन-कौन से?

उत्तर सच्चे शास्त्रों में वस्तु के अनेक धर्मों का, स्याद्वाद पद्धति से कथन होता है, वे अहिंसा धर्म के पोषक होते हैं, प्राणी मात्र के कल्याण के लिए होते हैं। वस्तु तत्व का नय व प्रमाण की अपेक्षा यथार्थ स्वरूप वर्णन होता है।

प्रश्न 10. सच्चे शास्त्रों के मुख्य कितने भेद हैं और कौन-कौन से?

उत्तर सच्चे शास्त्रों के मुख्य चार भेद हैं और वे इस प्रकार हैं

1. प्रथमानुयोग, 2. करणानुयोग, 3. चरणानुयोग, 4. द्रव्यानुयोग।

प्रश्न 11. इन चारों अनुयोगों का क्या स्वरूप है तथा कौन-कौन से शास्त्र किस अनुयोग में आते हैं?

उत्तर 1. प्रथमानुयोग स्वाध्याय के क्रम में इन शास्त्रों का प्रथम स्थान है। तीर्थंकर आदि मोक्षमार्गी महापुरुषों के जीवन चरित्र का इसमें वर्णन होता है, यह अनुयोग बोधि समाधि का खजाना है। इस अनुयोग के मुख्य शास्त्र हैं आदि पुराण, हरिवंशरायपुराण, महापुराण, चौबीसी पुराण, पाण्डव पुराण, वर्धमान पुराण सुदर्शन चरित्र आदि।

2. करणानुयोग करणानुयोग में तीन लोक का वर्णन है, आत्मा के परिणामों का एवं कर्मों के बंध, उदय, सत्य आदि दश करणों का, जीवस्थान, गुणस्थान व मार्गणा स्थान आदि का वर्णन है। इस अनुयोग के शास्त्र हैं त्रिलोक सार, त्रिलोक प्रज्ञप्ति, जम्बू द्वीप प्रज्ञप्ति, लब्धिसार, गोम्मट सार, षट्खण्डागम, कषाय पाहुड़ धवलाजी, महाधवला जी इत्यादि।

3. चरणानुयोग इस अनुयोग में मुनियों और श्रावकों के (व्रत, समिति, गुप्ति, धर्म, भावना व अतिचार) आचरण का वर्णन होता है। इस अनुयोग के शास्त्र हैं मूलाचार, मूलाराधना, आचारसार, प्रवचन सार, नियमसार, रयणसार, रत्नकरण्डक श्रावकाचार, उमास्वामी श्रावकाचार, पूज्यपाद श्रावकाचार आदि।

4. द्रव्यानुयोग इस अनुयोग में शुद्ध स्वरूप का कथन होता है, यह अनुयोग द्रव्य की अशुद्ध अवस्था को न कहकर, शुद्ध स्वभाव का ही कथन करता है। इस अनुयोग के शास्त्र हैं द्रव्यसंग्रह, परमात्म प्रकाश, पंचास्तिकाय, तत्वानुशासन, योगसार, ध्यान सूत्राणि, समयसार आदि।

प्रश्न 12. सच्चे गुरु किन्हें कहते हैं?

उत्तर पंचेन्द्रिय सम्बन्धी विषयों से व क्रोधादि कषायों से जो विरक्त हैं, हिंसादि पाँच पाप व कृषि, व्यापार आदि समस्त आरम्भ के त्यागी हों, यथाजात दिगम्बर हों, सम्यक ज्ञान, ध्यान व तपस्या करने में सदैव लीन रहते हों, वे ही सच्चे गुरु होते हैं।

प्रश्न 13. इन सच्चे गुरुओं की बाह्य पहिचान क्या है? क्योंकि अंतरंग के परिणाम भी बाह्य स्वरूप ही आधारित होते हैं।

उत्तर दिगम्बर हों (समस्त वस्त्रों से रहित नग्न) सिर, दाढ़ी-मूंछ के केशलोंच करते हों, सदैव पैदल विहार करते हों, दिन में एक बार ही नवकोटि से विशुद्ध, श्रावक द्वारा नवधाभक्ति से युक्त दिया हुआ आहार-जल ग्रहण करते हों, स्वाध्याय, प्रवचन, अध्ययन, अध्यापन, चिन्तन-मनन, जाप ध्यान व तपस्या करने में संलग्न हों, वे सच्चे गुरु होते हैं।

प्रश्न 14. इन सच्चे गुरुओं के कितने भेद हैं?

उत्तर इन सच्चे गुरुओं के तीन भेद हैं 1. आचार्य, 2. उपाध्याय, 3. साधु।

प्रश्न 15. ये साधु अपने पास क्या-क्या उपकरण रखते हैं और कौन-कौन से?

उत्तर ये साधु महाराज (सच्चे गुरु) अपने पास मयूर पंखों से बनी पिच्छिका व लकड़ी या नारियल का कमण्डल एवं आप्त द्वारा कथित शास्त्र रखते हैं। क्योंकि ये तीनों साधुओं की साधना में सहायक उपकरण हैं। क्योंकि ये तीनों साधुओं की साधना में सहायक उपकरण हैं।

प्रश्न 16. उपकरण किसे कहते हैं और इनसे साधुओं का क्या उपकार होता है?

उत्तर उपकार करने वाली वस्तु उपकरण होती है, मयूर पंख से बनी पिच्छिका जीव रक्षा करने में सहायक हैं, अहिंसा, धर्म व संयम की साधना में उपकारक है। कमण्डल शरीर की शुद्धि में सहायक है, मल, विसर्जित करने पर मल द्वार व हाथ-पाँवों की शुद्धि जल से ही सम्भव है, उस हेतु कमण्डल भी उपकारक है, जिन वाणी/शास्त्र ज्ञान वृद्धि, वैराग्य वृद्धि, संयम वृद्धि, तप वृद्धि, ध्यान वृद्धि व सम्यकत्व की वृद्धि (दृढ़ता) और परिणामों की निर्मलता में कारण है, अतः परिणाम विशुद्धि में व मन की एकाग्रता में शास्त्र सहायक है, इसलिए ये भी उपकारक हैं, इसलिए साधु इन उपकरणों को अपने पास रखते हैं।

प्रश्न 17. देव शास्त्र, गुरु व जिन धर्म की अभिवन्दना में क्या बोलना चाहिए?

उत्तर देव, शास्त्र, गुरु या नवदेवताओं की अभिवन्दना में नमोस्तु या नमस्कार प्रणाम शब्द का प्रयोग करना चाहिए, आर्यिका माताजी को नमस्कार करते समय-वंदामि माताजी ऐसा कहना चाहिए, ऐलक जी, छुल्लक जी व छुल्लिका माताजी को इच्छामि कहना चाहिए, व्रती श्रावक-श्राविका या ब्रह्मचारी भैया व ब्रह्मचारिणी बहिनों को वन्दना कहना चाहिए, एवं शेष समस्त साधर्मी भाईयों से जय जिनेन्द्र कहना चाहिए।

प्रश्न 18. सच्चा धर्म कौन सा है? और उसकी क्या विशेषता है?

उत्तर जिनेन्द्र भगवान द्वारा कथित धर्म ही सच्चा धर्म है, वह प्राणी मात्र का कल्याण करने वाला है, संसार के दुःखों से निकाल कर

उत्तम सुखों में पहुँचाने वाला है। विचारों में अनेकता, वाणी में स्याद्वाद, आचरण में त्याग-तप व अहिंसा, व्यवहार में उपकार, कृतज्ञता व अपरिग्रह, मन में समता व निर्मलता, वीतरागता का लक्ष्य (पोषण) ये ही इस धर्म की विशेषतायें हैं।

प्रश्न 19. आपने प्रारम्भ में नव देवता भी आराध्य बताये थे, वे नव देवता कौन-कौन से हैं? बताने की कृपा करें।

उत्तर 1. श्री अरिहंत परमेष्ठी जी

2. श्री सिद्ध परमेष्ठी जी

3. श्री आचार्य परमेष्ठी जी

4. श्री उपाध्याय परमेष्ठी जी

5. श्री साधु परमेष्ठी जी

6. श्री पंच परमेष्ठी जी के कृत्रिम या अकृत्रिम बिम्ब

7. श्री अरिहंत जी व सिद्ध परमेष्ठी के मंदिर

8. प्राणिमात्र का कल्याणक केवली प्रणीत जिन धर्म

9. सर्वज्ञ देव द्वारा कथित जिनागम ये नव देवता हैं, इनकी भाव सहित भक्ति, पूजा, वन्दना करने से कर्मों का क्षय होता है।

अध्याय 7

''बाल प्रार्थना''

हे प्रभु! आनन्द दाता, ज्ञान हमको दीजिए।
शीघ्र सारे दुर्गुणों को, दूर हमसे कीजिए।।
लीजिए हमको शरण में, हम सदाचारी बनें।
ब्रह्मचारी धर्म रक्षक, शीलव्रतधारी बनें।।
जीव रक्षा नित करें हम, स्व-पर हितकारी बनें।
उपकार ही हम करें, निशदिन आशीष हमको दीजिए।।1।।
हे प्रभु! आनन्द दाता, ज्ञान हमको दीजिए।
शीघ्र सारे दुर्गुणों को, दूर हमसे कीजिए।
जैन में पैदा हुए हम, वीर की सन्तान हैं।
धर्म ही है मान मेरा, धर्म ही मेरी शान है।।
देश धर्म समाज हित, अर्पित हमारे प्राण हैं।
भगवान की भक्ति करें, वरदान ऐसा दीजिए।
हे प्रभु! आनन्द दाता, ज्ञान हमको दीजिए।
शीघ्र सारे दुर्गुणों को, दूर हमसे कीजिए।।2।।
धर्मराष्ट्र और जीव रक्षा ही हमारे टेक हो।
प्राणी परस्पर रहें मिलकर, भाव सबका नेक हो।।
एक हो आराध्य सबका, धर्म सबका एक हो।
हो जगत में शान्ति हर दम, मान ऐसा दीजिए।
हे प्रभु! आनन्द दाता, ज्ञान हमको दीजिए।
शीघ्र सारे दुर्गुणों को, दूर हमसे कीजिए।

साहस धैर्य, विवेक रख हम, नित्य ही आगे बढ़ें।
लग्न, उद्यम, आस्था से, धर्म मार्ग पर चढ़ें।।
हो स्व-पर रक्षा व्रत हमारा, त्याग पाठ नित्य पढ़ें।
दूर हो अज्ञान सबका, ज्ञान ऐसा दीजिए।।
हे प्रभु! आनन्द दाता, ज्ञान हमको दीजिए।
शीघ्र सारे दुर्गुणों को, दूर हमसे कीजिए।

अध्याय 8

''भगवान-ऋषभ देव''

समय सदैव परिवर्तनशीन है, और समस्त द्रव्यों के परिवर्तन में नियम से निमित्त रूप में सहयोगी होता है, कालपरिवर्तन भरत और ऐरावत क्षेत्रों में होता है। जब भोग भूमि का अवसान काल और कर्मभूमि का प्रारम्भिक काल था तब सुखमा-दुःखमा नामक तृतीय काल के अन्त में भगवान ऋषभदेव (आदिनाथ) स्वामी का जम्बूद्वीप के भरत क्षेत्र आर्यखण्ड के अजनाभ वर्ष देश की अयोध्या नामक नगरी में जन्म हुआ था। भगवान ऋषभदेव ने पूर्वभव में तीर्थंकर प्रकृति का बंध कर सर्वार्थसिद्धि विमान से चयकर आषाढ़ कृष्ण द्वितीया के दिन पिता राजा नाभिराय की सहधर्मिणी रानी मरुदेवी के गर्भ में आये। सौधर्म इन्द्र की आज्ञा से कुबेर ने बारह योजन लम्बी व नौ योजन चौड़ी अयोध्या नगरी की रचना करायी, गर्भ के 6 माह पूर्व से ही नित्य 14 करोड़ रत्नों की वर्षा दिन में चार बार होती थी, कहीं कहीं 4 बार में साढ़े दस करोड़ रत्न वर्षा का भी उल्लेख है। मासोपरांत चैत्र कृष्ण नवमी के दिन ऋषभ देव स्वामी का जन्म हुआ। सौधर्म इन्द्र आदि असंख्यात देव समूह ने सुमेरुपर्वत की पाण्डुक शिला पर क्षीर सागर के जल द्वारा 1008 कलशों से अभिषेक किया। गर्भकल्याणक की तरह जन्म कल्याणक का भी महोत्सव मनाया। ऋषभदेव नाम रखा तथा दाहिने पैर के अंगूठे पर स्थित बैल का चिन्ह घोषित किया। राजकुमार ऋषभदेव का विवाह कक्ष व महाकक्ष विद्याधर राजाओं की बहन यशस्वती (नन्दा) व सुनन्दा से हुआ।

ऋषभ की यशस्वती रानी से भरत आदि सौ पुत्र व ब्राह्मी नामक एक कन्या उत्पन्न हुई, तथा सुनन्दा रानी से बाहुबलि नामक पुत्र व सुन्दरी नामक एक कन्या उत्पन्न हुई।

महाराजा नाभिराय ने राज्य भार राजकुमार ऋषभदेव को सौंप दिया, महाराज ऋषभदेव ने प्रजा के समीचीन परिपालन हेतु असि, मसि, कृषि वाणिज्य, शिल्प और कला, ये छह आजीविका हेतु कर्मोपदेश दिये। भरत, बाहुबलि आदि एक सौ एक पुत्र व ब्राह्मी सुन्दरी आदि दोनों पुत्रियों को यथायोग्य वर्ण विद्या, अंक विद्या, अर्थशास्त्र, ज्योतिष शास्त्र, आयुर्वेद व धनुर्विद्या आदि की शिक्षायें दीं। प्रजा का पुत्रवत न्याय-नीति अनुसार पालन करते हुए जब उनकी आयु तिरासी लाख पूर्व व्यतीत हो चुकी तब सौधर्म इन्द्र को उनके वैराग्य की चिंता हुई। तभी राज्य सभा में मनोरंजन हेतु अल्पायु की धारक नीलांजना नाम की नृत्यांगना को भक्ति नृत्य व आमोद-प्रमोद हेतु भेजा। अल्पायु की मृत्यु को देखकर उन्हें संसार की असारता व अपनी मृत्यु का बोध हुआ, वहीं उन्हें आत्मज्ञान प्रकट हुआ।

तब वे संसार से विरक्त हो अपने सभी पुत्रों को यथायोग्य राज्य सौंपकर दीक्षा हेतु तत्पर हुए। पंचम स्वर्ग के ऊर्ध्व भाग में रहने वाले बाल ब्रह्मचारी एक भवातारी, देवऋषी कहे जाने वाले लौकान्तिक देवों ने आकर उनकी स्तुति की एवं वैराग्य की अनुमोदना की। तब ऋषभदेव ने समस्त राज पाठ, ग्रह, कुटुम्ब, परिवार को छोड़कर चार हजार राजाओं के साथ सिद्धार्थ वन में चैत्र कृष्ण नवमी के दिन उत्तराषाढ़ नक्षत्र में यथाजात दिगम्बर मुनि दीक्षा को अंगीकार किया। सिद्ध परमेष्ठी की साक्षी में 'नमः सिद्धेभ्यः' बोलकर पंच मुष्टि से केशलोंच किया तथा आत्म ध्यान में लीन हो गये। छह माह आत्म ध्यान करते रहे, जिससे उनके बाल बहुत बढ़ गए इसलिए उनकी प्राचीन मूर्तियों में लम्बे केश भी दिखाये जाते हैं। छह माह बाद वे आहार चार्य हेतु निकले, किन्तु उस समय मुनियों को आहार देने की विधि कोई नहीं जानता था इसलिए सात माह तक उनका आहार नहीं हुआ। वैसाख सुदी तृतीया के दिन राजा श्रेयांस को शुभ स्वप्न दिखे, नगर में आते हुए मुनि ऋषभदेव को देखकर राजा श्रेयांस को जातिस्मरण हुआ, जिस कारण से मुनिराज की आहार विधि जानकर अपने भाई सोमप्रभ के साथ आहार दिया।

वह दिन जैन इतिहास में आज भी अक्षय तृतीया के नाम से प्रसिद्ध है। ऋषभदेव ने मात्र तीन अंजुलि प्रमाण इच्छुरस का आहार व जल लिया था। यह उनका मध्यलोक का प्रथम आहार था।

एक हजार वर्ष तक मुनि ऋषभदेव छद्मस्थ अवस्था में रहे, फाल्गुन कृष्ण एकादशी को चार घातिया कर्मों को नष्ट कर केवल ज्ञान आदि अनंत चतुष्टय व नव लब्धियों को प्राप्त किया। भगवान ऋषभदेव के सभी कल्याणक उत्तराषाढ़ नक्षत्र में ही हुए। केवली अवस्था में भगवान ऋषभदेव ने एक हजार वर्ष कम एक लाख पूर्व वर्ष तक विहार किया। पूरे आर्यखण्ड में भगवान ऋषभदेव का समवशरण गया, धर्म का उपदेश संसार के असंख्यात जीवों को दिया, उनके समवशरण में वृषभसेन आदि चौरासी गणधर थे। चौरासी हजार मुनि थे पांच महाव्रत, पाँच समिति आदि का पालन करने वाली स्त्री पर्याय की सर्वोत्कृष्ट अवस्था में साधना करने वाली बाल ब्रह्मचारिणी ब्राह्मी नामक मुख्य आर्यिका को आदि लेकर तीन लाख पचास हजार आर्यिकायें थीं, तीन लाख श्रावक तथा पाँच लाख श्राविकायें थीं। गोवदन यक्ष व चक्रेश्वरी यक्षिणी तथा असंख्यात देव-देवियों समवशरण में विराजमान थे।

अपने पिता के स्वाभिमान की रक्षा हेतु-ब्राह्मी सुन्दरी ने बाल्यावस्था में ही अखण्ड ब्रह्मचर्य व्रत को धारण किया। ऋषभदेव के प्रथम पुत्र भरत इस आर्यवर्त भरत क्षेत्र के प्रथम चक्रवर्ती हुए। जिनके नाम से इस देश का नाम अजनाभ वर्ष से भारत वर्ष प्रसिद्ध हुआ। बाहुबलि इस काल के प्रथम कामदेव थे। ऋषभदेव के भरत, बाहुबलि, वृषभसेन, अनन्तवीर्य आदि सभी पुत्रों ने जिन दीक्षा लेकर सर्वपरिग्रह का त्याग कर दिया तथा दुर्धर तप कर मोक्ष को प्राप्त हुए।

ऋषभदेव स्वामी के एक हजार आठ नाम हैं। युग के आदि में होने से व प्रथम तीर्थंकर होने से आदिनाथ नाम भी प्रसिद्ध है। बीस लाख पूर्व वर्ष कुमार काल, तिरेसठ लाख पूर्व वर्ष राज्य काल एवं एक लाख पूर्व वर्ष संयमी व केवली काल रहा। ऋषभदेव भगवान के शरीर की ऊँचाई पाँच सौ धनुष अर्थात् दो हजार हाथ तथा शरीर का वर्ण तपाये हुए स्वर्ण के समान था।

''ऋषि बनो या कृषि करो''

यही उनका मुख्य उपदेश रहा।

तृतीय काल में जब तीन वर्ष आठ माह पन्द्रह दिन शेष रहे तब भगवान

ऋषभदेव ने कैलाश पर्वत (अष्टापद) पहुँचकर स्थूल योगों का निरोध किया तथा माघ वदी चतुर्दशी के शुभ उत्तराषाढ़ नक्षत्र व प्रशस्त योग की प्रत्यूष बेला में समस्त कर्मों का क्षय कर मोक्ष को प्राप्त किया। उनका दिव्य उपदेश आज भी भव्य जीवों का कल्याण कर रहा है, उनका तत्वोपदेश व अहिंसादि धर्म व कर्म सिद्धांत तब से लेकर आज तक विश्व में समग्र रूप से व्याप्त है। आज भी संसार में ऐसा कोई धर्म नहीं जिसमें अंशतः ऋषभदेव भगवान के सिद्धांत न हों।

ऐसे आदि ब्रह्मा, आदि तीर्थंकर, ऋषभदेव भगवान को हम बार-बार नमस्कार करते हैं वे भगवान ऋषभदेव हमें मुक्ति प्रदान करें।

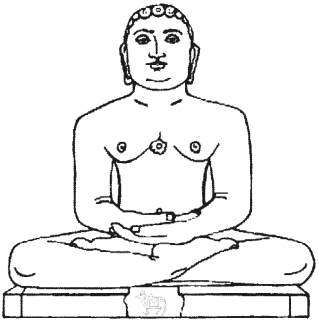

अभ्यास

1. भगवान ऋषभदेव के पाँचों कल्याणकों की तिथि बताओ।
2. भगवान ऋषभदेव के माता-पिता, जन्मस्थली व मोक्षस्थली बताओ।
3. भगवान ऋषभदेव के समवशरण में कितनी संख्या में विराजमान मुनि आर्यिका श्रावक-श्राविका थे?
4. प्रथम आहार से कौन-सा पर्व मनाया जाने लगा?
5. भगवान ऋषभदेव ने क्या संदेश दिया था?
6. भगवान ऋषभदेव के जीवन पर अति संक्षिप्त में लिखो।

अध्याय 9

''बालकों की दैनिक चर्या''

प्रश्न 1. हमें प्रातः काल सोकर कब उठना (जागना) चाहिए?

उत्तर हमें प्रातःकाल सूर्योदय के पहले-ब्रह्ममुहूर्त में उठ जाना चाहिए।

प्रश्न 2. उठकर सबसे पहले क्या करना चाहिए?

उत्तर कम से कम नौ बार णमोकार मंत्र पढ़ना चाहिए, पंच परमेष्ठियों का व सच्चे देव शास्त्र, गुरु का स्मरण कर उन्हें-श्रद्धा-भक्तिपूर्वक नमस्कार करना चाहिए।

प्रश्न 3. बिस्तर से उठकर फिर क्या काम करना चाहिए?

उत्तर बिस्तर से उठकर, लघुशंका, दीर्घशंका, (पेशाब व शौच) से निवृत्त हो, माता-पिता, दादा-दादी, बड़े भाई बहनों के नियमपूर्वक चरण स्पर्श करना चाहिए, अथवा जय जिनेन्द्र बोलना चाहिए।

प्रश्न 4. दंत मंजन कैसे करना चाहिए?

उत्तर दंत मंजन शुद्ध मंजन से करना चाहिए, पेस्ट आदि से नहीं करना चाहिए, अधिकांश पेस्ट अशुद्ध होते हैं, उनमें अशुद्ध वस्तु का प्रयोग होता है, इसलिए हल्दी, नमक, सरसों का तेल व फिटकरी इन चारों से मंजन करने से दांत मजबूत होते हैं, स्वच्छ रहते हैं, कोई भी रोग नहीं होता, इसलिए शुद्ध मंजन ही करना चाहिए।

प्रश्न 5. स्नान कैसे पानी से करना चाहिए,

उत्तर स्नान छने हुए पानी से करना चाहिए, जिस साबुन में चर्बी का प्रयोग हुआ हो, ऐसे साबुनों का प्रयोग नहीं करना चाहिए, जो साबुन शुद्ध हैं जिनमें चर्बी आदि अशुद्ध पदार्थ नहीं हैं, उसका

ही प्रयोग करना चाहिए, पानी भी अनावश्यक नहीं फैलाना चाहिए।

प्रश्न 6. स्नान के बाद, कपड़े पहनकर सबसे पहले क्या करना चाहिए?

उत्तर स्नान के बाद शरीर में शुद्ध तेल की मालिश अपने हाथ से करें, क्रीम पाउडर का प्रयोग नहीं करें क्योंकि क्रीम अधिकांश अशुद्ध होती हैं। इसके बाद शुद्ध वस्त्र पहनकर सबसे पहले जिन मंदिर देवदर्शन करने जाना चाहिए।

प्रश्न 7. जिन मंदिर किस प्रकार जाना चाहिए?

उत्तर हाथ में पूजन की सामग्री की डिब्बी लेकर नंगे पैर जाना चाहिए, मार्ग नीचे देखकर मौन से या णमोकार मंत्र पढ़ते हुए चलना चाहिए। मंदिर जी में भगवान के, जिनवाणी के मुनिराजों के दर्शन करके गंधोदक लगाकर व चन्दन का तिलक लगाकर आना चाहिए।

प्रश्न 8. जिन मंदिर से देव दर्शन कर लौटकर आने के बाद क्या करना चाहिए?

उत्तर मंदिर से आने के बाद दूध, गरम पराठे या लड्डू या शाकाहारी नाश्ता ग्रहण करना चाहिए। ग्रीष्म काल में सत्तू, दूध या फलों का रस, ठण्डाई, शिकंजी या दूध/दही की लस्सी पीना चाहिए। चाय कभी नहीं पीनी चाहिए, क्योंकि चाय से बुद्धि घटती है, सहन शक्ति घट जाती है, गुणों का नाश हो जाता है, स्वास्थ्य खराब हो जाता है।

प्रश्न 9. स्कूल जाते समय क्या करना चाहिए?

उत्तर स्कूल (विद्यालय या पाठशाला) जाते समय माता-पिता के व अपने से बड़ों के चरण स्पर्श करके या जय जिनेन्द्र बोल करके जाना चाहिए।

प्रश्न 10. विद्यालय या पाठशाला में क्या करना चाहिए?

उत्तर गुरुजी के चरण स्पर्श या नमस्कार करना चाहिए, मन लगाकर

पढ़ना चाहिए, अच्छे मित्रों से मित्रता करनी चाहिए, सबसे ''जी'' लगाकर बोलना चाहिए, गुरुजी की आज्ञा से कक्षा में प्रवेश करना चाहिए व कक्षा से बाहर जाना चाहिए।

प्रश्न 11. विद्यालय में कौन-कौन से कार्य नहीं करने चाहिए?

उत्तर विद्यालय या पाठशाला में ऊधम या शरारत नहीं करनी चाहिए, लड़ाई झगड़ा नहीं करना चाहिए, क्रोध नहीं करना चाहिए, झूठ नहीं बोलना चाहिए, किसी को अपशब्द नहीं कहने चाहिए, बिना पूछे किसी की वस्तु नहीं लेनी चाहिए।

प्रश्न 12. विद्यालय से आने के बाद क्या करना चाहिए?

उत्तर शुद्ध, सात्विक, मर्यादित व शाकाहारी और ताजा भोजन करना चाहिए, विद्यालय में जो पढ़ा है या उसे याद करना चाहिए, लिखने का काम भी नित्य पूरा करना चाहिए, अच्छे बच्चों की संगति में थोड़ा-बहुत खेलना चाहिए, घर के कामों में माता-पिता व भाई-बहनों की सहायता करना चाहिए, धार्मिक कार्यों में भी शामिल होना चाहिए। प्रेरणादायी-नैतिक व धार्मिक कथा कहानी सुनना व सुनाना चाहिए।

प्रश्न 13. शाम को क्या करना चाहिए?

उत्तर भोजन दिन में करना चाहिए, बड़े भाई बहनों से या मम्मी-पापा से पढ़ना चाहिए, छोटे भाई-बहनों को पढ़ाना चाहिए, आपस में मिलजुलकर स्नेह पूर्वक रहना चाहिए। शाम को भगवान की आरती हेतु या स्वाध्याय सुनने अथवा गुरु भक्ति हेतु मंदिर जाना चाहिए।

प्रश्न 14. मंदिर जी से लौटने के बाद क्या करना चाहिए?

उत्तर मंदिर जी से लौटने के बाद अपना पाठ याद करना चाहिए, लिखने का काम आदि यदि शेष रह गया हो, तो वह भी पूरा कर लेना चाहिए, सूर्यास्त के पूर्व की दूध व पानी आदि पी लेना चाहिए जिससे रात में न पीना पड़े।

प्रश्न 15. रात्रि में सोने से पूर्व और क्या करना चाहिए?

उत्तर रात्रि में सोने से पूर्व वृद्ध दादा-दादी व माता-पिता की यथायोग्य

कुछ समय सेवा करनी चाहिए, दिन भर की सब बातें माता-पिता आदि को बता देना चाहिए, जिससे मन में कोई विकल्प न बनें। विद्यार्थियों को टी.वी. नहीं देखना चाहिए क्योंकि उससे मन चंचल, नेत्र ज्योति कमजोर और स्वास्थ्य खराब हो जाता है।

प्रश्न 16. माता-पिता आदि के चरण स्पर्श या सेवा आदि क्यों करना चाहिए, इससे क्या फल मिलता है?

उत्तर माता-पिता, दादा-दादी या अन्य वृद्ध जन या गुरुजनों के चरण स्पर्श व सेवा करने से आरोग्य लाभ होता है, शरीर सुन्दर, तन्दुरुस्त व हृष्ट-पुष्ट होता है, आयु दीर्घ होती है, बुद्धि विकसित होती है, जिससे विषय जल्दी याद हो जाता है, मन में शांति मिलती है, सबका स्नेह मिलता है, अच्छे कार्यों में सफलता व यशकीर्ति की प्राप्ति होती है?

प्रश्न 17. सोने से पूर्व और क्या करना चाहिए?

उत्तर सोने से पूर्व णमोकार मंत्र कम से कम नौ बार पढ़ना चाहिए, सोने से पूर्व लघुशंका से निवृत्त हो हाथ-पाँव धोकर, पुनः कपड़े से बदन पोंछकर, बाई करवट से सोना चाहिए। इससे नींद भी पूरी तरह आती है, स्वास्थ्य ठीक रहता है, दुःस्वप्न भी नहीं आते हैं।

प्रश्न 18. रात्रि में कितने बजे तक सो जाना चाहिए?

उत्तर रात्रि में आठ बजे से नौ बजे तक सो जाना चाहिए, जो देर रात तक जागते हैं उनकी बुद्धि कमजोर हो जाती है, शरीर रोगी रहता है, दिन में पढ़ाई करने में मन नहीं लगता, उनका पेट खराब हो जाता है, अतः जल्दी सो जाना चाहिए। कहा भी है

जल्दी सोवे जल्दी जागे, तनिक नहीं दुःख पावे।
बुद्धि और बल बढ़े, बहुत धन उसके घर में आवे॥

अध्याय 10

''दर्शन पाठ''

प्रभु पतित पावन मैं अपावन, चरण आयो शरण जी।
यो विरद आप निहार स्वामी, मेट जामन मरण जी॥1॥

अर्थ हे प्रभु! भगवान!। आप पतितों को पावन करने वाले हैं, मैं अपवित्र जीव/प्राणी हूँ, पापी हूँ, आपकी महिमा को जानकर, देखकर मैं आपके चरण कमलों की शरण में आया हूँ, मेरा जन्म-मरण नष्ट कर दीजिए।

तुम ना पिछान्यो, आन मान्यो, देव विविध प्रकार जी।
या बुद्धि सेती निज न जान्यो, भ्रम गिन्यो हितकर जी॥2॥

अर्थ हे भगवान! मैंने आजतक आपको नहीं पहचाना अन्य रागी द्वेषी देवी-देवताओं की पूजा-अर्चना करता रहा, इस भ्रम बुद्धि से निज के यथार्थ स्वरूप को न जानकर संसार भ्रमण को ही हितकारी समझता रहा।

भव विकट वन में कर्म बैरी, ज्ञान धन मेरो हर्‌यो।
तब इष्ट भूल्यों भ्रष्ट होय, अनिष्ट गति धरतो फिर्‌यो॥3॥

अर्थ इस संसार रूपी महाभयानक जंगल में कर्म रूपी शत्रुओं ने मेरा ज्ञान रूपी धन हरण कर लिया है, इस कारण मैं इष्ट मार्ग व मंजिल को भूलकर पथ भ्रष्ट होकर अनिष्ट गति व दुर्गतियों को प्राप्त हुआ हूँ/हो रहा हूँ।

धन घड़ी यो धन दिवस यों ही धन जनम मेरो भयो।
अब भाग्य मेरो उदय आयो, दरश प्रभुजी को लख लयो॥4॥

अर्थ धन्य है आज की यह घड़ी/समय, धन्य है, आज का यह दिन धन्य, सफल हो गया आज मेरा जीवन आज मेरे परम सौभाग्य/सातिशय पुण्य का

उदय हुआ है, जो मैंने वीतरागी जिनेन्द्र भगवान के भाव सहित दर्शन किए हैं।

छवि वीतरागी नगन मुद्रा, दृष्टि नाशा पै धरैं।

वसु प्रातिहार्य अनन्त गुण जुत, कोटि रवि छवि को हरें।।5।।

अर्थ हे भगवान! आपकी छवि वीतरागी है, आप यथा जात दिगम्बर मुद्रा के धारी हो, आपकी दृष्टि नाशिका के अग्र भाग पर स्थित है, आप अष्ट प्रातिहार्य व अनन्त गुणों से युक्त हैं, आपके परमौदारिक शरीर की कांति करोड़ों सूर्यों की कांति को तिरस्कृत करने वाली है।

मिट गयो तिमिर मिथ्यात्व मेरो, उदय रवि आतम भयो।

मो उर हरष ऐसो भयो, मनु रंक चिंतामणि लयो।।6।।

अर्थ हे भगवान! आपके दर्शन मात्र से अनादि काल से विद्यमान मेरा मिथ्यात्व रूपी अंधकार दूर हो गया और मेरी आत्मा में सम्यक्त्व रूपी सूर्य का उदय हो गया है, आपके दर्शन पाने से मेरे अंतरंग में इतना आनन्द व हर्षोल्लास हुआ है मानो कि किसी अत्यन्त निर्धन व्यक्ति को चिंतामणि रत्न की प्राप्ति हुई हो।

मैं हाथ जोड़ नवाऊँ मस्तक, वीनऊँ तुम चरण जी।

सर्वोत्कृष्ट त्रिलोकपति जिन, सुनहू तारण तरण जी।।7।।

अर्थ हे भगवान! मैं दोनों हाथ जोड़कर विनय पूर्वक मस्तक झुकाकर नमस्कार करता हुआ आपके चरणों में विनती करता हूँ, हे भगवान! आप ही तीन लोक में सर्वश्रेष्ठ! उत्कृष्ट हो, तीन लोक के स्वामी हो, हे जिनेन्द्र भगवान! आप की संसार से तिरने व तिराने वाले हो, मेरी विनती को सुनो।

जाँचू नहीं सुरवास पुनि नर, राज परिजन साथ जी।

''बुध'' जाँच हूँ तव भक्ति भव-भव, दीजिए शिवनाथ जी।।8।।

अर्थ हे भगवन! मैं आपके दर्शन का फल स्वर्ग सुख, राजा, महाराज व चक्रवर्ती का वैभव या माता-पिता, भाई-बहन, पुत्र-पुत्री, नौकर-चाकर, धन-सम्पत्ति आदि नहीं चाहता हूँ। मैं बुद्धिमान (बुधजन कवि) आप के दर्शन व जिन चरणों की भक्ति प्राप्त हो। हे मुक्ति रमा के स्वामी! यही मुझे दीजिए।

भाग-2

अध्याय 1

''धर्म बोध संस्कार''

वीतराग सर्वज्ञ हितंकर, भविजन की अब पूरो आस।
ज्ञान भानु का उदय करो, मम मिथ्यातम का होय विनाश॥1॥

अर्थ हे वीतराग! सर्वज्ञ! सर्व हित करने वाले जिनेन्द्र प्रभु! भव्य जीवों की आस को पूरी करो, अब मेरे अन्दर सम्यक्ज्ञान रूपी सूर्य का उदय हो, जिससे मिथ्यात्व रूपी अंधकार नाश को प्राप्त हो सके।

जीवों की हम करुणा पालें, झूठ वचन नहिं कहें कदा।
परधन कबहूँ न हरहूँ स्वामी, ब्रह्मचर्य व्रत रखें सदा॥2॥

अर्थ हे भगवान! हम सदैव जीव मात्र के प्रति करुणा का भाव रखें, कभी झूठ वचन नहीं बोलें, कभी पराये धन का हरण (चोरी) न करें, तथा सदैव ब्रह्मचर्य व्रत/शील व्रत का पालन करें।

तृष्णा लोभ बढ़े न हमारा, तोष सुधा नित पिया करें।
श्री जिन धर्म हमारा प्यारा, तिसकी सेवा किया करें।

अर्थ हे भगवान! हमारे अन्दर तृष्णा और लोभ कषाय वृद्धि को प्राप्त न हों तथा नित्य संतोषामृत का सेवन करें। श्री जिनेन्द्र देव द्वारा प्रणीत धर्म ही हमें प्राणों से ज्यादा प्रिय हो, और हम सभी सदैव उसी की समर्पित भाव से सेवा करें।

दूर भगावें बुरी रीतियाँ सुखद रीति का करें प्रचार।
मेल मिलाप बढ़ावें हम सब, धर्मोन्नति का करें प्रसार॥4॥

अर्थ हे प्रभो! बुरी रीतियों को समाज दूर करे, समाज में सुख देने वाली रीति-नीति व प्रथाओं को प्रचारित करें, हम सभी आपस में मेल मिलाप या

प्रेम भाव को वृद्धिंगत करें तथा धर्म की उन्नति करें, व धर्म प्रभावना को पूरे विश्व में फैलायें।

सुख-दुःख में हम समता धारें, रहे अचल जिमि सदा अटल।
न्याय मार्ग को लेख न त्यागें, वृद्धि करें निज आतम बल॥5॥

अर्थ हे भगवन! हम सदैव सुख प्राप्त होने पर एवं दुःखों का पहाड़ टूटने पर भी समता भाव को धारण करें, कभी भी व रंच मात्र भी न्याय मार्ग का परित्याग न करें तथा निज आत्म बल को सदैव बढ़ाते रहें।

अष्ट कर्म जो दुःख हेतु हैं, जिनके क्षय का करें उपाय।
नाम आपका जपैं निरन्तर, विघ्न रोग सब ही टल जाय॥6॥

अर्थ हे भगवन्! प्राणी मात्र के लिए दुःख के कारण ज्ञानावरणादि आठ कर्म ही हैं, अतः हम सदैव उन अष्ट कर्मों को नष्ट करने के लिए उद्यम/पुरुषार्थ करें, और हम सभी सदैव, लगातार आपके नाम का स्मरण व जाप करते रहें, जिससे सभी विघ्न एवं सभी (शारीरिक, मानसिक, सामाजिक व आध्यात्मिक) रोगों का नाश किया जा सके।

आतम शुद्ध हमारा होवे, पाप मैल नहिं चढ़े कदा।
विद्या की हो उन्नति हम में, धर्म ज्ञान हू बढ़े सदा॥7॥

अर्थ हे भगवन! हमारी आत्मा समस्त कर्मों को नष्ट करके परम शुद्ध परमात्मा हो जावे तथा हमारी आत्मा पर कभी पाप रूपी मल न चिपके, हमारे अंदर लौकिक विद्या का भी विकास हो एवं धर्म भावना (रत्नत्रय) व सम्यक्/आध्यात्मिक/आत्मिक ज्ञान की भी सदैव वृद्धि हो।

हाथ जोड़ कर शीश नवावें, तुमको भविजन खड़े-खड़े।
यह सब पूरों आस हमारी, चरण शरण में आन पड़े॥8॥

अर्थ हे भगवन्! हम सभी भव्य जीव आपके चरण कमलों में हाथ जोड़ व सिर नवाकर, खड़े होकर स्तुति कर रहे हैं। हम भगवन! हमारी इन समस्त भावनाओं को पूर्ण करो। हम सब बालक आपके चरणों की शरण में पड़े हैं, अर्थात् साष्टांग प्रणाम कर रहे हैं।

अध्याय 2

''पंचपरमेष्ठियों के मूलगुण''

प्रश्न 1. अरिहंत परमेष्ठी किसे कहते हैं, व उनके कितने मूलगुण होते हैं? और कौन-कौन से बताने की कृपा करें?

उत्तर अरिहंत परमेष्ठी चार घातिया कर्मों से रहित होते हैं, व अनंत चतुष्टय से सहित होते हैं। इनके जन्म के 10 अतिशय + चौदह (14) देवकृत अतिशय + आठ (8) प्रातिहार्य + चार (4) अनंत चतुष्टय + इस (10) केवल ज्ञान अतिशय = 46 (छियालीस) इस प्रकार अरिहंत परमेष्ठी के 46 मूलगुण होते हैं।

प्रश्न 2. जन्म के दस अतिशय कौन-कौन से हैं?

उत्तर ''अतिशय रूप सुगंध तन, नाहिं पसेव निहार।
प्रिय हित वचन अतुल बल, रुधिर श्वेत आकार।।1।।''

''लक्षण सहस्र रु आठ तन, समचतुस्र संठान।
वज्र वृषभ नाराच जुत, ये जनमत दस जान।।2।।''

1. अत्यंत सुंदर रूप, 2. सुगंधित शरीर, 3. पसीना नहीं आना, 4. अनिहार अर्थात मल-मूत्र आदि न होना, 5. प्रिय हित वचन, 6. अतुल बल, 7. श्वेत रुधिर, 8. व्रजवृषभ नाराच संहनन, 9. समचतुस्रसंस्थान, 10. शरीर में एक हजार आठ शुभ लक्षणों का होना।

प्रश्न 3. केवल ज्ञान के दस अतिशय कौन-कौन से हैं?

उत्तर योजन शत इक चतु में सुभिख, गगन मगन मुख चार।
नहिं अदया उपसर्ग नहिं, नाहिं (कवलाहार)।।3।।

सब विद्या ईश्वर पनों, नाहीं बढ़ें नख केश।
अनिमिष दृग छाया रहित, दस केवल के भेष।।4।।

1. चारों तरफ सौ-सौ योजन तक सुभिक्ष का होना, 2. आकाश गमन होना, 3. चार मुख दिखाई देना, 4. उस क्षेत्र में हिंसा नहीं होना, 5. उपसर्ग नहीं होना, 6. (कवलाहार) का अभाव, 7. समस्त विद्याओं के स्वामी होना, 8. नख केशों का नहीं बढ़ना, 9. टिमकार रहित नेत्र दृष्टि, 10. शरीर की छाया नहीं पड़ना।

प्रश्न 4. देव कृत चौदह अतिशय कौन-कौन से हैं?

उत्तर देव रचित है चार दश, अर्ध मागधी भाष।
आपस माहिं मित्रता, निर्मल दिश आकाश।।5।।
होत फूल फल ऋतु सवै, पृथ्वी काँच समान।
चरण कमल तल कमल दल, नभते जय-जय वान।।6।।
मंद सुगंध वयार पुनि, गंधोदक की वृष्टि।
भूमि विषैं कंटक नहि, हर्षमयी सब सृष्टि।।7।।
धर्म चक्र आगे चले, पुनिवसु मंगल सार।
अतिशय श्री अरिहंत के, ये चौंतीस प्रकार।।8।।

1. अर्द्ध मागधी भाषा होना, 2. आपस में मित्रता, 3. दिशाओं का निर्मल होना, 4. छह ऋतु के फल-फूल एक साथ आ जाना, 5. पृथ्वी का कांच के समान होना, 6. चरणों के नीचे कमल रचना, 7. शीतल मंद सुगंधित हवा का चलना, 8. गंधोदक की वृष्टि होना, 9. कंटक रहित भूमि, 10. सर्वत्र हर्ष होना, 11. आगे-आगे धर्म चक्र चलना, 12. अष्ट मंगल द्रव्य होना, 13. आकाश में जय-जयकार होना, 14. आकाश का निर्मल होना।

प्रश्न 5. अष्ट मंगल द्रव्य व अष्ट प्रातिहार्य कौन-कौन से हैं?

उत्तर 1. दर्पण, 2. छत्र, 3. छारी (कलश), 4. पंखा, 5. चमर, 6. स्वस्तिक, 7. ध्वजा, 8. घंटा।

तरु अशोक के निकट में, सिंहासन छविदार।
तीन छत्र सिर पै लसै, भामण्डल पिछवार।।9।।

दिव्य ध्वनि मुख तैं खिरैं, पुष्प वृष्टि सुर होय।
ढौरें चौंसठ चमर यख, बाजें दुंदुभि जोय।।10।।

1. अशोक वृक्ष, 2. सिंहासन, 3. तीन छत्र, 4. भामण्डल, 5. दिव्यध्वनि का सर्वांग से खिरना, 6. देवों द्वारा पुष्प वृष्टि का होना, 7. यक्षों द्वारा चौसठ चमर ढोरना, 8. दुंदुभि बाजे बजना।

प्रश्न 6. चार घातिया कर्म कौन-कौन से हैं जिनके नष्ट होने से अनंत चतुष्टय प्राप्त होता है?

उत्तर जो आत्मा के अनुजीवी गुणों का घात करें, वे घातिया कर्म कहलाते हैं, वे चार हैं

1. ज्ञानावरण, 2. दर्शनावरण, 3. मोहनीय, 4. अंतराय।

इनके क्षय से ये चार गुण प्रकट होते हैं

1. अनंत ज्ञान, 2. अनंत दर्शन, 3. अनंत सुख, 4. अनंत वीर्य।

प्रश्न 7. सिद्ध परमेष्ठी के आठ मूल गुण कौन-कौन से हैं?

उत्तर समकित दर्शन ज्ञान, अगुरुलघु अवगाहना।
सूक्ष्म वीरज बाल, निराबाध गुण सिद्ध के।।11।।

1. सम्यक्त्व-अनंत सुख, 2. अनंत दर्शन, 3. अनंत ज्ञान, 4. अगुरुलघुत्व, 5. अवगाहनत्व, 6. सूक्ष्मत्व, 7. अनंत वीर्य-शक्ति, 8. अव्याबाधत्व।

प्रश्न 8. आचार्य परमेष्ठी के कितने मूलगुण हैं? कौन-कौन से हैं?

उत्तर आचार्य परमेष्ठी के छत्तीस मूल गुण होते हैं।

बारह तप + दस धर्म + पंचाचार + छह आवश्यक + तीन गुप्ति।

छह बहिरंग तप 1. अनशन, 2. ऊनोदर, 3. वृत्ति परिसंख्यान, 4. रस परित्याग, 4. विविक्त शय्याशन, 6. काय क्लेश।

छह अंतरंग तप 1. प्रायश्चित्त, 2. विनय, 3. वैय्यावृत्ति, 4. स्वाध्याय, 5. व्युत्सर्ग, 6. ध्यान।

दस धर्म 1. उत्तम क्षमा धर्म, 2. मार्दन, 3. आर्जव, 4. शौच, 5. सत्य, 6. संयम, 7. तप, 8. त्याग, 9. आकिंचन, 10. ब्रह्मचर्य धर्म।

पंचाचार 1. ज्ञानाचार, 2. दर्शनाचार, 3. चारित्राचार, 4. तपाचार, 5. वीर्याचार।

छह आवश्यक 1. समता, 2. वन्दना, 3. स्तुति, 4. प्रतिक्रमण, 5. प्रत्याख्यान, 6. कायोत्सर्ग।

तीन गुप्ति 1. मन:गुप्ति, 2. वचन गुप्ति, 3. काय गुप्ति।

प्रश्न 9. उपाध्याय परमेष्ठी के कितने मूलगुण होते हैं और कौन-कौन से?

उत्तर उपाध्याय परमेष्ठी के पच्चीस मूलगुण होते हैं। ग्यारह अंग और चौदर पूर्व।

प्रश्न 10. ग्यारह अंग कौन-कौन से हैं नाम बताओ?

उत्तर 1. आचारांग, 2. सूत्रकृतांग, 3. स्नानांग, 4. समवायायांग, 5. व्याख्या प्रज्ञप्ति अंग ज्ञातृधर्म, 6. कथांग, 7. उपासकाध्ययन अंग, 8. अंत:कृत दशांग, 9. अनुत्तरापपादिक दशांग, 10. प्रश्न व्याकरणांग, 11. विपाक सुत्रांग।

द्वादशांग का बारहवां अंग (12 भेद) दृष्टि वाद अंग है। इसके पाँच भेद होते हैं

1. परिकर्म, 2. सूत्र, 3. प्रथमानुयोग, 4. पूर्वगत, 5. चूलिका।

प्रश्न 11. चौदह पूर्व कौन-कौन से हैं? नाम बताओ?

उत्तर 1. उत्पादपूर्व, 2. अग्राणीय पूर्व, 3. वीर्यानुप्रवाद पूर्व, 4. अस्ति नास्ति प्रवाद पूर्व, 5. ज्ञान प्रवाद पूर्व, 6. सत्य प्रवाद पूर्व, 7. आत्म प्रवाद पूर्व, 8. कर्म प्रवाद पूर्व, 9. प्रत्याख्यान पूर्व, 10. विद्यानुवाद पूर्व, 11. कल्याणवाद पूर्व, 12. प्राणानुवाद पूर्व, 13. क्रिया विशाल पूर्व, 14. लोक बिन्दु सार।

प्रश्न 12. साधु परमेष्ठी के कितने व कौन-कौन से मूलगुण होते हैं?

उत्तर साधु परमेष्ठी के अट्ठाईस मूलगुण होते हैं। पाँच महाव्रत + पाँच समिति + पाँच इन्द्रिय विजय + छह आवश्यक + सात विशेष गुण।

प्रश्न 13. साधु परमेष्ठी के अट्ठाईस मूल गुणों के पृथक-पृथक नाम बताओ?

उत्तर **पाँच महाव्रत** 1. अहिंसा, 2. सत्य, 3. अचौर्य, 4. ब्रह्मचर्य, 5. अपरिग्रह।

पाँच समिति 1. ईर्या समिति, 2. भाषा समिति, 3. ऐषणा समिति, 4. आदान-निक्षेपण समिति, 5. उत्सर्ग समिति।

पाँच इन्द्रिय विजय 1. स्पर्शन, 2. रसना, 3. प्राण, 4. चक्षु, 5. कर्ण।

षडावश्यक 1. समता, 2. वन्दना, 3. स्तुति, 4. प्रतिक्रमण, 5. प्रत्याख्यान, 6. कार्योसर्ग।

सात विशेष गुण 1. अस्नान, 2. अदंत धावन, 3. केशलोंच, 4. एक भुक्ति, 5. स्थिति भोजन/खड़े होकर आहार लेना, 6. अचेलक/नग्न रहना, 7. भूमि पर शयन करना

प्रश्न 14. साधु परमेष्ठी के उत्तर गुण कितने व कौन-कौन से हैं?

उत्तर साधु परमेष्ठी के उत्तर गुण चौंतीस होते हैं? बाईस परीषह जय + बारह तप।

प्रश्न 15. ये पाँचों परमेष्ठी जी किस प्रकार और कब पूज्य हैं?

उत्तर त्रिकालवर्ती ये पाँच परमेष्ठी जी समस्त संसारी जीवों द्वारा सदैव, पूज्यनीय, वंदनीय, अर्चनीय, श्रद्धेय, ध्यातव हैं।

प्रश्न 16. पंचम काल में इस भरत क्षेत्र में कितने परमेष्ठी होते हैं?

उत्तर पंचम काल में इस भरत क्षेत्र में तीन परमेष्ठी होते हैं, क्योंकि पंचम काल में जन्मा हुआ व्यक्ति मोक्ष नहीं जा सकता, न ही अरिहंत अवस्था को प्राप्त कर सकता है। अत: श्री आचार्य जी, उपाध्याय जी, साधु परमेष्ठी ये तीन परमेष्ठी ही होते हैं?

प्रश्न 17. पाँचों परमेष्ठी में देव परमेष्ठी कितने हैं एवं गुरु परमेष्ठी कितने हैं?

उत्तर पाँचों परमेष्ठी में श्री अरिहंत जी व श्री सिद्ध जी देव (परमात्मा)

भगवान कहलाते हैं, तीन गुरु परमेष्ठी कहलाते हैं।

प्रश्न 18. पाँचों परमेष्ठियों में सबसे बड़े परमेष्ठी कौन हैं और क्यों? तथा नमस्कार करने का जो क्रम है, क्या वह ठीक है? यदि हाँ तो कैसे/क्यों?

उत्तर पाँचों परमेष्ठियों में सबसे बड़े परमेष्ठी सिद्ध भगवान हैं, क्योंकि उन्होंने समस्त कर्मों का क्षय कर दिया है, अरिहंतों ने तो मात्र चार घातिया कर्म ही तो नष्ट किये हैं, फिर भी णमोकार मंत्र में नमस्कार करने का क्रम भी ठीक है, क्योंकि अरिहंत परमेष्ठी ही हमारे निकटवर्ती व साक्षात् उपकारक हैं। इसलिए अरिहंत परमेष्ठी को प्रथम नमस्कार करना उचित ही है।

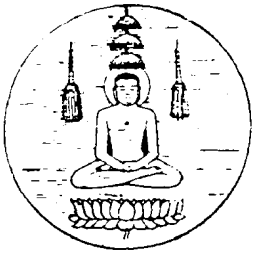

अरिहंत परमेष्ठी

सिद्ध परमेष्ठी

आचार्य परमेष्ठी

उपाध्याय परमेष्ठी

साधु परमेष्ठी

अध्याय 3

''जीव-अजीव''

प्रश्न 1. जीव किसे कहते हैं?

उत्तर जिसमें जानने व देखने की शक्ति पायी जाती है, वे जीव कहलाते हैं, अथवा ज्ञान चेतना व दर्शन चेतना से युक्त द्रव्य जीव कहलाते हैं।

प्रश्न 2. जीव के कितने भेद होते हैं?

उत्तर जीव के दो भेद होते हैं 1. संसारी जीव, 2. मुक्त जीव।

प्रश्न 3. संसारी जीव किसे कहते हैं?

उत्तर जो जीव कर्मों से सहित हैं, संसार में परिभ्रमण कर रहे हैं, जन्म-मरण आदि दु:खों से सहित हैं, वे संसारी जीव कहलाते हैं।

प्रश्न 4. संसारी जीव के कितने भेद हैं, और कौन-कौन से हैं?

उत्तर संसारी जीव के दो भेद होते हैं 1. त्रस, 2. स्थावर।

प्रश्न 5. मुक्त जीव किसे कहते हैं?

उत्तर जो समस्त कर्मों से रहित हैं (द्रव्य कर्म, भाव कर्म और नो कर्म) सिद्ध शिला पर विराजमान हैं, वे सभी मुक्त जीव कहलाते हैं।

प्रश्न 6. त्रस जीव किसे कहते हैं? और इनके कितने भेद हैं, और नाम बताओ?

उत्तर जिन जीवों के दो या दो से अधिक इन्द्रियाँ पायी जाती हैं वे त्रस

जीव कहलाते हैं। इनके चार भेद होते हैं 1. दो इन्द्रिय, 2. तीन इन्द्रिय, 3. चार इन्द्रिय, 4. पाँच इन्द्रिय।

प्रश्न 7. दो इन्द्रिय जीव किसे कहते हैं? उदाहरण देकर समझाओ?

उत्तर जिन जीवों के स्पर्शन, रसना, ये दो इन्द्रियां पाई जाती है, वे दो इन्द्रिय जीव कहलाते हैं। उदाहरण लट, केंचुआ, इल्ली, शंख, कोड़ी, सीप, बघूटी, पई, गिजाई इत्यादि।

प्रश्न 8. तीन इन्द्रिय जीव किसे कहते हैं? उदाहरण देकर समझाओ?

उत्तर जिन जीवों के स्पर्शन, रसना, घ्राण ये तीन इन्द्रियाँ पाई जाती है, वे तीन इन्द्रिय जीव कहलाते हैं। उदाहरण चींटी, चींटा, जुआँ, बिच्छू, कनखजूरा, कुंथु, खटमल, तिरुला, इन्द्रगोप इत्यादि।

प्रश्न 9. चार इन्द्रिय जीव किसे कहते हैं? उदाहरण देकर बताओ?

उत्तर जिन जीवों के स्पर्शन, रसना, घ्राण और चक्षु ये चार इन्द्रियाँ पाई जाती है, वे चार इन्द्रिय जीव कहलाते हैं। उदाहरण मक्खी, मच्छर, भौंरा, तितली, पतंगा, बर्र, मकड़ी, मधुमक्खी, डांस इत्यादि।

प्रश्न 10. पंचेन्द्रिय जीव किसे कहते हैं? उदाहरण देकर बताओ?

उत्तर जिन जीवों के स्पर्शन, रसना, घ्राण, चक्षु और कर्ण ये पाँच इन्द्रियाँ होती हैं, वे जीव पंचेन्द्रिय कहलाते हैं। उदाहरण समस्त देव, समस्त नारकी, समस्त मनुष्य व तिर्यंचों में हाथी, घोड़ा, ऊँट, बैल, शेर, चीता, भालू, खरगोश, चूहा, गिलहरी, भेड़, बकरी, मयूर, सारस, कबूतर, उल्लू, हंस, बगुला, बतख, सर्प, मेंढक, बन्दर आदि।

प्रश्न 11. स्थावर जीव किसे कहते हैं, कितने भेद हैं, नाम बताओ?

उत्तर जिन जीवों के मात्र एक स्पर्शन इन्द्रिय पाई जाती है, वे सभी स्थावर जीव कहलाते हैं, उनके पाँच भेद हैं। 1. पृथ्वीकायिक, 2. जलकायिक, 3. अग्निकायिक, 4. वायुकायिक, 5. वनस्पति कायिक।

प्रश्न 12. पृथ्वीकायिक जीव किसे कहते हैं? उदाहरण देकर बताओ?

उत्तर पृथ्वी ही जिन जीवों का शरीर है, वे पृथ्वीकायिक जीव कहलाते हैं अथवा पृथ्वीकायिक नाम कर्म के उदय से प्राप्त होने वाली

जीव की अवस्था विशेष से युक्त पृथ्वी कायित जीव होते हैं। इस प्रकार की परिभाषा आगे के स्थावरों में भी लगा लेना चाहिए। उदाहरण पर्वत, खदान में लगा पत्थर, मिट्टी, जमीन के अंदर के स्थावर जीव।

प्रश्न 13. जलकायिक जीव किसे कहते हैं उदाहरण देकर बताओ?

उत्तर जल ही जिन जीवों का शरीर है, वे जलकायिक जीव कहलाते हैं। जैसे नदी, तालाब, कुएँ, वापी, समुद्र का जल, ओस की बूँद इत्यादि।

प्रश्न 14. अग्निकायिक जीव किसे कहते हैं, उदाहरण देकर बताओ?

उत्तर अग्नि ही जिन जीवों का शरीर होता है, वे सभी जीव अग्निकायिक जीव कहलाते हैं। जैसे दीपक, लालटेन, चूल्हे, गैस बत्ती, जंगल की अग्नि, बड़वाग्नि इत्यादि।

प्रश्न 15. वायुकायिक जीव किसे कहते हैं? उदाहरण देकर बताओ।

उत्तर वायु ही जिन जीवों का शरीर होता है, वे वायुकायिक जीव कहलाते हैं, जैसे आँधी तूफान, मंद वायु, पंखे, कूलर इत्यादि से उत्पन्न वायु आदि।

प्रश्न 16. वनस्पतिकायिक जीव किसे कहते हैं? उदाहरण देकर बताओ?

उत्तर वनस्पति ही जिन जीवों का शरीर होता है, वे सभी जीव वनस्पतिकायिक जीव कहलाते हैं। जैसे पौधे, पेड़, घास, लता, बेल, झाड़ी, अंकुर तृण आदि।

प्रश्न 17. अजीव किसे कहते हैं, उसके कितने व कौन-कौन से हैं?

उत्तर जिसमें जानने व देखने की क्षमता नहीं है, उसे अजीव कहते हैं उसके पाँच भेद होते हैं, पुद्गल, धर्म, अधर्म, आकाश, काल।

प्रश्न 18. पुद्गल द्रव्य क्या है?

उत्तर जिसमें स्पर्श, रस गंध, वर्ण ये गुण पाये जाते हैं तथा आँखों से देखने में आये वह पुद्गल है। धर्म, अधर्म, काल व शुद्ध जीव अमूर्तिक या अदृश्यमान ही होते हैं।

अध्याय 4

''इन्द्रिय और मन''

प्रश्न 1. इन्द्रिय किसे कहते हैं?

उत्तर जिससे संसारी प्राणी की पहचान होती है, उसे इन्द्रिय कहते हैं, अथवा आत्मा के सूक्ष्म अस्तित्व का बोध कराने वाले चिह्न को इन्द्रिय कहते हैं।

प्रश्न 2. इन्द्रिय के कितने भेद होते हैं, और कौन-कौन से नाम बताओ?

उत्तर इन्द्रिय के पाँच भेद होते हैं 1. स्पर्शन इन्द्रिय, 2. रसना इन्द्रिय, 3. घ्राण इन्द्रिय 4. चक्षु इन्द्रिय, 5. कर्ण इन्द्रिय।

प्रश्न 3. क्या सभी संसारी जीवों के पाँच इन्द्रियाँ ही पाई जाती है, इनसे कम या अधिक नहीं पाई जातीं?

उत्तर संसारी जीवों के कम से कम एक स्पर्शन इन्द्रिय पाई जाती है, और अधिक से अधिक पाँच इन्द्रियाँ पाई जाती हैं।

प्रश्न 4. जिनके एक इन्द्रिय पाई जाती है, उसे क्या कहते हैं?

उत्तर जिन जीवों में मात्र एक इन्द्रिय (स्पर्शन इन्द्रिय) पाई जाती है, वे सभी जीव स्थावर जीव कहलाते हैं।

प्रश्न 5. दो या दो से अधिक इन्द्रियाँ जिन जीवों के पाई जाती है, उन्हें क्या कहते हैं?

उत्तर जिन जीवों के दो या दो से अधिक इन्द्रियाँ पाई जाती हैं वे त्रस जीव कहलाते हैं, उन त्रस जीवों के दो भेद होते हैं 1. विकलेन्द्रिय, 2. सकलेन्द्रिय।

प्रश्न 6. विकलेन्द्रिय जीव किसे कहते हैं?

उत्तर जिन जीवों के दो, तीन या चार इन्द्रियाँ पाई जाती है, वे सभी जीव विकलेन्द्रिय (विकलत्रय) जीव कहलाते हैं।

प्रश्न 7. सकलेन्द्रिय जीव किसे कहते हैं?

उत्तर जिन जीवों के स्पर्शन, रसना, घ्राण, चक्षु और कर्ण ये पाँचों इन्द्रियाँ पाई जाती है, वे सभी जीव सकलेन्द्रिय कहलाते हैं। ये पाँचों इन्द्रियाँ सदैव क्रमानुसार ही पाई जाती हैं, ये कभी क्रम का उल्लंघन नहीं करती।

प्रश्न 8. ये इन्द्रियाँ अपने विषयों को कैसे ग्रहण करती हैं?

उत्तर प्रत्येक इन्द्रिय अपने आप स्वतंत्र व स्वाधीन हैं, अपने विषय में ही प्रवृत्ति करती है। एक इन्द्रिय दूसरी इन्द्रिय का काम नहीं करेगी जैसे सूँघने, चखने वाली घ्राण इन्द्रिय सुनने व छूने का नहीं।

प्रश्न 9. स्पर्शन इन्द्रिय किसे कहते हैं?

उत्तर जिस इन्द्रिय के द्वारा पदार्थों के स्पर्श (छूने) से स्पर्श का ज्ञान होता है, वह स्पर्श इन्द्रिय हैं, यह इन्द्रिय नियम से सभी देह धारी संसारी जीवों में पाई जाती है।

प्रश्न 10. स्पर्शन इन्द्रिय के कितने विषय हैं, और कौन-कौन से उदाहरण सहित बताओ?

उत्तर स्पर्शन इन्द्रिय के आठ विषय हैं?

हल्का रुई, गुब्बारा, सूखे पत्ते आदि।

भारी पत्थर, लोहा, सीमेंट आदि।

कड़ा सोना, सीसा, चाँदी आदि।

नरम रबड़ी, नवनीत, दही आदि।

रूखा बालू, बुरादा, सूखी मिट्टी, आटा आदि।

चिकना घी, तेल, दूध, गोंद, गंवारपाठा आदि।

ठंडा हिमखण्ड, आईसक्रीम, बर्फ के टुकड़े, चन्द्रमा की किरणें,

जल ग्लैसियर आदि।

गरम अग्नि, दहकते अंगारे, कोयला, अग्नि संसर्गित पदार्थ।

प्रश्न 11. रसना इन्द्रिय किसे कहते हैं?

उत्तर जिस इन्द्रिय के माध्यम से पदार्थों के रस को चखकर ज्ञान किया जाता है, वह रसना इन्द्रिय कहलाती है, यह रसना इन्द्रिय दो जीवों में या इनसे अधिक इन्द्रिय वाले जीवों में पाई जाती है।

प्रश्न 12. रसना इन्द्रिय के कितने व कौन-कौन से विषय हैं, उदाहरण देकर बताओ।

उत्तर रसना इन्द्रिय के पाँच विषय हैं

खट्टा नींबू, कच्चा आम, इमली, कच्चा टमाटर आदि।

मीठा गुड़, शक्कर, बूरा, मुनक्का, पके फल।

कड़वा नीम, चिरायता, करेला, गिलोय, कोई-कोई तूमड़ी खीरा आदि।

कषायला पीतल के बर्तन में रखा दही, छाछ आदि।

चटपटा लाल मिर्ची, काली मिर्ची, हरी मिर्ची आदि।

प्रश्न 13. घ्राण इन्द्रिय किसे कहते हैं? इसके विषयों को भी उदाहरण सहित समझाओ।

उत्तर जिस इन्द्रिय के द्वारा पदार्थ की गंध का सूँघने से ज्ञान होता है, वह घ्राण इन्द्रिय है। इसके दो विषय हैं

सुगंध पुष्प, इत्र आदि।

दुर्गन्ध सड़े गले पदार्थ आदि।

प्रश्न 14. चक्षु इन्द्रिय किसे कहते हैं? इसके विषयों को उदाहरण देकर समझाओ?

उत्तर जिस इन्द्रिय के द्वारा देखने से पदार्थों के रूप, रंग, आकार आदि का ज्ञान हो उसे चक्षु इन्द्रिय कहते हैं, इसके पाँच विषय हैं क्योंकि मूल वर्ण हैं, अन्य सभी रंग इनके आपस में मिलाने से ही बनते हैं।

लाल टमाटर, सेब, अनार, तरबूज आदि।

सफेद दूध, दही, घी, छाछ, हंस, सूर्य का प्रकाश आदि।

पीला पका आम, पपीता, सरसों का फूल आदि।

नीला मयूर का कण्ठ, आकाश, जामुन, बैंगन आदि।
काला कौआ, कोयल आदि।

प्रश्न 15. कर्ण इन्द्रिय किसे कहते हैं?

उत्तर जिस इन्द्रिय के द्वारा शब्दों का या विभिन्न प्रकार की ध्वनियों को सुनने से ज्ञान होता है, वह कर्ण इन्द्रिय कहलाती है।

प्रश्न 16. कर्ण इन्द्रिय के कितने विषय हैं और कौन-कौन से उदाहरण देकर समझाओ?

उत्तर कर्ण इन्द्रिय के विषय समस्त प्रकार की ध्वनि या भाषा वर्गणाओं का समूह है जो मुख्य रूप से सात भेदों में कहे हैं सार, रे, ग, म, प, ध, नि, ये सात संगीत के स्वर कहलाते हैं।
स षड़ज, रे रैवत, ग गांधर्व, म मध्यम, प पंचम, ध धैवत, नि निषाध ।

प्रश्न 17. सकलेन्द्रिय जीव के कितने व कौन-कौन से भेद हैं, उदाहरण देकर बताओ।

उत्तर सकलेन्द्रिय जीव के दो भेद हैं 1. संज्ञी, 2. असंज्ञी।
संज्ञी जीव उन्हें कहते हैं, जिनके मन पाया जाता है, जैसे देव, मनुष्य, नारकी, हाथी, घोड़ा, बैल, ऊँट, बंदर, मोर, तोता, हंस, सारस आदि।
असंज्ञी जीव वे कहलाते हैं जिनके मन नहीं पाया जाता, जैसे बिना कण्ठी वाला तोता, कोई-कोई मेढक, जल में रहने वाले सर्प। इसके अतिरिक्त एक इन्द्रिय व विकलेन्द्रिय सभी जीव नियम से असंज्ञी होते हैं।

प्रश्न 18. मन किसे कहते हैं? तथा इसके कितने व कौन-कौन से भेद हैं?

उत्तर जिसके द्वारा प्राणी हिता-हित को जानता है, समझता है, ग्रहण करता है, अर्थात् जिसके द्वारा शिक्षा, उपदेश को ग्रहण व धारण करने की योग्यता होती है वह मन है। इसके दो भेद होते है। 1. द्रव्यमन, 2. भावमन।

अध्याय 5

दु:ख के कारण-''पाप''

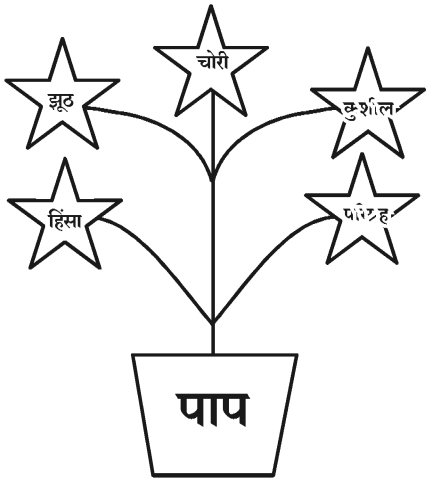

प्रश्न 1. दु:ख के कारण कौन-कौन से हैं?

उत्तर पाप कर्म, विषय वासना, कषाय भाव एवं आर्त-रौद्र ध्यान ही संसार में दु:ख के कारण हैं।

प्रश्न 2. पाप किसे कहते हैं?

उत्तर निंद्य (बुरे) कार्य, निंद्य (बुरे) परिणाम, व खोटी क्रियायें पाप कहलाती हैं।

प्रश्न 3. पाप के कितने व कौन-कौन से भेद हैं? नाम बताओ।

उत्तर पाप अनंत होते हैं, किन्तु उनके पाँच ही भेद हैं, पाँच में ही समस्त पापों का समावेश हो जाता है 1. हिंसा, 2 असत्य, 3. चोरी, 4. कुशील, 5. परिग्रह।

प्रश्न 4. हिंसा किसे कहते हैं?

उत्तर किसी भी प्राणी को मन से, वचन से या शरीर से कष्ट देना या दु:ख देना पहुँचाना या दुखियों को देखकर खुश होना ये हिंसा कहलाती है।

प्रश्न 5. हिंसा के कितने और कौन-कौन से भेद हैं नाम बताओ?

उत्तर हिंसा चार प्रकार की होती है 1. संकल्पी हिंसा, 2. आरम्भी हिंसा, 3. उद्योगी हिंसा, 4. विरोधी हिंसा।

प्रश्न 6. असत्य पाप किसे कहते हैं?

उत्तर झूठ बोलने को असत्य पाप कहते हैं, जो बातें जैसी हैं उसे ज्यों का त्यों न कहकर फेर-बदलकर कहना भी असत्य कहलाता है।

प्रश्न 7. चोरी किसे कहते हैं?

उत्तर किसी व्यक्ति की भूली हुई, पड़ी हुई, रखी हुई या छोड़ी हुई वस्तु को भी उस व्यक्ति (वस्तु के मालिक) को बिना पूछे ग्रहण कर लेना या उठाकर किसी को देना या उपयोग कर लेना चोरी कहलाता है।

प्रश्न 8. कुशील पाप किसे कहते हैं?

उत्तर ब्रह्मचर्य व्रत का पालन न करना ही कुशील पाप है अथवा अब्रह्म ही क्रिया व मैथुन रूप गंदे विचार भी कुशील कहलाता है।

प्रश्न 9. ब्रह्मचर्य व्रत का पालन न करने से क्या हानि है?

उत्तर एक बार के अब्रह्म सेवन/कुशील सेवन में 9 करोड़ जीवों की हिंसा होती है एवं कुशील का सेवन तीव्र विषयानुराग का प्रतीक है, विषयानुराग नियम से दुर्गति का कारण होता है।

प्रश्न 10. परिग्रह पाप किसे कहते हैं?

उत्तर जो परिग्रह रखता है, उसे ही नव ग्रह दु:ख देते हैं, परिग्रह प्राप्त करने के लिए कष्ट उठाना पड़ता है, रक्षा करने की चिंता होती है, नष्ट होने पर दु:ख उत्पन्न होता है तथा यह नरकायु का बंध कराने वाला है और समस्त दु:खों का बीज है।

प्रश्न 11. परिग्रह के मुख्य कितने भेद होते हैं, और वे कौन-कौन हैं? नाम बताओ।

उत्तर परिग्रह के मुख्य रूप से दो भेद होते हैं
1. बहिरंग परिग्रह, 2. अंतरंग परिग्रह अथवा चेतन परिग्रह और अचेतन परिग्रह इस प्रकार भी परिग्रह के दो भेद होते हैं।

प्रश्न 12. बहिरंग परिग्रह किसे कहते है। और उसके कितने व कौन कौन से भेद होते हैं?

उत्तर जो बाहर दिखाई देता है, वह बहिरंग परिग्रह होता है, उसके दस भेद होते हैं वे इस प्रकार हैं 1. क्षेत्र खेत, बाग आदि। 2. वास्तु मकान आदि, 3. धन पशुधन आदि, 4. धान्य अनाज

आदि, 5. हिरण्य रुपया पैसा आदि, 6. स्वर्ण सोना, चाँदी आदि, 7. दास नौकर, चाकर, सेवक आदि, 8. दासी नौकरानी, सेविका, दूती आदि, 9. कुप्य बर्तन आदि, 10. माण्य वस्त्रादि।

प्रश्न 13. अंतरंग परिग्रह किसे कहते हैं? उसके कितने भेद हैं? नाम बताओ।

उत्तर जो परिग्रह बाहर में दिखाई नहीं दे, वह अंतरंग परिग्रह कहलाता है उसके चौदह 14 भेद होते हैं, वे इस प्रकार हैं 1. क्रोध, 2. मान, 3. माया, 4. लोभ, 5. हास्य, 6. रति, 7. अरति, 8. शोक, 9. भय, 10. जुगुप्सा, 11. स्त्रीवेद, 12. नपुंसकवेद, 13. पुरुषवेद, 14. मिथ्यात्व अथवा (चार कषाय + नौ नोकषाय + मिथ्यात्व।)

प्रश्न 14. पाँचों पापों में क्रमशः कौन-कौन प्रसिद्ध हुआ?

उत्तर हिंसा में धन श्री
असत्य में सत्यघोष
चोरी में जराजूट धारी तापस
कुशील में कोतवाल
परिग्रह में शमश्रु नवनीत (लुब्धदप्त)

प्रश्न 16. पाँच अणुव्रतों में कौन-कौन प्रसिद्ध हुआ?

उत्तर अहिंसा व्रत में यमपाल चाण्डाल, सत्यव्रत में धन देव श्रेष्ठ, अचौर्यव्रत, में राजकुमार वारिषेण, ब्रह्मचर्य व्रत में सेठपुत्री नीलीबाई, परिग्रह त्याग व्रत में जयकुमार सेठ।

प्रश्न 17. पाँचों पापों का एक देश व सकल देश त्याग करने से कौन-कौन से व्रत होते हैं?

उत्तर पाँचों पापों का एक देश त्याग करने से अणुव्रत होते हैं एवं सम्पूर्ण रूप से त्याग करने से महाव्रत होते है।

प्रश्न 18. अणुव्रत व महाव्रतों का पालन करने से किस फल की प्राप्ति होती है?

उत्तर अणुव्रत का पालन करने से सौधर्म स्वर्ग से आदि लेकर अच्युत स्वर्ग तक की प्राप्ति होती है तथा महाव्रत का पालन करने से स्वर्ग व मोक्ष की प्राप्ति होती है।

अध्याय 6

''बारह भावना''

प्रश्न 1. भावना किसे कहते हैं?

उत्तर संसार, शरीर व भोगों के स्वरूप का बार-बार यथार्थ रूप में चिंतवन करने को ही भावना कहते हैं, अथवा किसी वस्तु, स्वरूप या अवस्था की प्राप्ति हेतु किया गया विग्रह हीन अंतरंग पुरुषार्थ ही भावना कहलाता है।

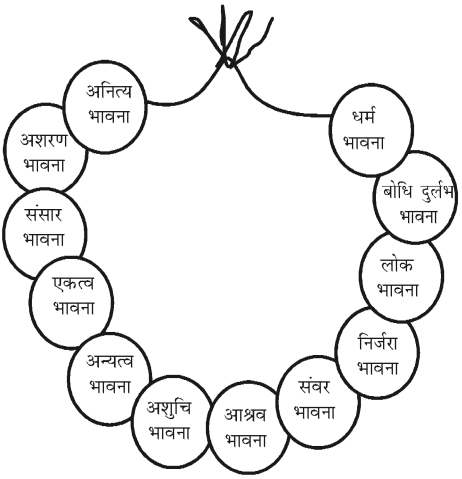

प्रश्न 2. भावनायें कितनी होती है, मुख्य भावनाओं के नाम बताओ?

उत्तर भावनायें अनंत होती है, संसार में जितने जीव हैं, उनकी उतनी ही भावनायें होती हैं।

प्रश्न 3. वैराग्योत्पादक मुख्य बारह भावनायें होती है, नाम बताओ?

उत्तर वैराग्योत्पादक मुख्य बारह भावनायें इस प्रकार हैं

1. अनित्य भावना, 2. अशरण भावना, 3. संसार भावना, 4. एकत्व भावना, 5. अन्यत्व भावना, 6. अशुचि भावना, 7. आश्रव भावना, 8. संवर भावना, 9. निर्जरा भावना, 10. लोक

भावना, 11. बोधि दुर्लभ भावना, 12. धर्म भावना।

प्रश्न 4. अनुप्रेक्षा किसे कहते हैं, अनुप्रेक्षा भावना में क्या अन्तर है?

उत्तर बार-बार आत्म स्वरूप को प्राप्त करने हेतु स्वरूप का चिंतन करना अथवा अनु का अर्थ है पीछे, प्रेक्षा का अर्थ है देखना। अर्थात् स्वाध्याय के उपरांत अपनी आत्मा के स्वरूप व स्वभाव का चिंतवन करना/या संसार शरीर भोगों के स्वरूप का चिंतवन करना, कथंचित् भावना का अर्थ एक ही है।

प्रश्न 5. क्या बारह भावना के अतिरिक्त आत्म कल्याण में कारण भूत और भी भावनाएँ हैं?

उत्तर हाँ! बारह भावनाओं के अतिरिक्त सोलह कारण भावना, वैराग्य भावना, समाधि भावना, संयम भावना, भक्ति भावना, सम्यक् दृष्टि की मैत्री आदि चार भावना, पंचाणुव्रत व महाव्रतों का निर्दोष पालन करने हेतु पाँच-पाँच भावना, मेरी भावना इत्यादि भावनायें ही आत्मकल्याण में कारणभूत हैं।

प्रश्न 6. भूधरदास कृत बारह भावना के अतिरिक्त क्या अन्य आचार्यों व कवियों ने भी बारह भावनायें लिखी हैं?

उत्तर हाँ! आ. कुन्दकुन्द स्वामी, आ. कार्तिकेय स्वामी, आ. शिवकोटि, आ. शुभचन्द्र, आ. अमृत चन्द्र, आ. वादीभसिंह, आ. गुणभद्र, आ. जिनसेन, आ. देवसेन, आ. जटासिंह, आ. सकलकीर्ति, आ. रविषेण, आ. सोमसेन, आ. ब्रह्मसेन, आ. उमास्वामी, आ. पदमनंदि, आ. वीरसेन, आ. महासेन, आ. वीरनंदि आदि अनेक आचार्य उपाध्याय व साधुओं ने एवं मंगलराय, द्यानतराय, भूधरदास, भागचन्द आदि कवियों ने भी बारह भावनायें लिखी हैं।

प्रश्न 7. 7-18 पं. भूधरदास कृत बारह भावनाओं को अर्थ सहित लिखो। अनित्य भावना/अथिर भावना का स्वरूप क्या है?

उत्तर **राजा राणा छत्रपति, हाथीनि के असवार।**
मरना सबको एक दिन, अपनी-अपनी बार॥1॥

अर्थ राजा, महाराजा, छत्रपति, चक्रवर्ती, हाथी, घोड़े व रथों पर सवारी करने वाले सभी नर पुंगवों को भी अपनी-अपनी आयु की समाप्ति पर मरना पड़ता है। संसार में जो कुछ भी दिखाई देता है, वह सब विनश्वर है, ऐसा चिंतन करना अनित्य भावना है।

प्रश्न 8. अशरण भावना का स्वरूप क्या है?

उत्तर दल-बल देवी देवता, मात-पिता, परिवार।
मरती विरिया जीव को, कोई न राखन हार॥2॥

अर्थ मनुष्यों का समूह, विभिन्न प्रकार का बल देव-देवियों की सामूहिक शक्ति, माता-पिता, कुटुम्बी जन, धन, वैभव, व मणि, मंत्र-तंत्र कोई भी जीवों को मृत्यु से नहीं बचा सकते हैं, संसार में कोई शरण नहीं है, ऐसा चिंतन करना अशरण भावना है।

प्रश्न 9. संसार भावना का क्या आशय है?

उत्तर दाम बिना निर्धन दु:खी, तृष्णा वश धनवान।
कहूँ (कबहूँ) न सुख संसार में सब जग देख्यों छान॥3॥

अर्थ धन के बिना निर्धन दुखी है, तृष्णा (अधिक पाने की इच्छा) से धनवान भी दु:खी है, इस संसार में कहीं और कभी भी सुख नहीं मिला, मैंने एक-एक प्रदेश को छान-छानकर (सर्वत्र जन्म-मरण कर) देख लिया है, संसारी प्राणी अपने ही कर्मों के कारण दु:खी है, कोई दर्द तन से, कोई मन से, कोई धन से, कोई अन्य कई कारणों से। सुखी कोई नहीं है, ऐसा चिन्तन करना ही संसार भावना है।

प्रश्न 10. एकत्व भावना से क्या तात्पर्य है?

उत्तर आप अकेला अब तरे, मरे अकेला होय।
यूँ, कबहूँ इस जीव को, साथी सगा न कोय॥4॥

अर्थ यह जीव अकेला ही जन्म लेता है, अकेला ही मरण करता है, अपने किये पुण्य का फल, भौतिक सुख व पाप का फल

दु:ख भी अकेला भोगता है सर्व कर्म क्षय कर अकेला ही मुक्ति प्राप्त करता है। इस संसार में इस जीव का स्थाई न कोई साथी है न कोई निजी सम्बन्धी, ऐसा चिन्तन करना ही एकत्व भावना है।

प्रश्न 11. अन्यत्व भावना किसे कहते हैं?

उत्तर **जहाँ देह अपनी नहीं, तहाँ न अपना कोय।**
घर सम्पत्ति पर प्रकट ये, पर है, परिजन लोय॥5॥

अर्थ जन्म के पूर्व से ही (गर्भावास से ही) साथ रहने वाला यह शरीर भी जब अपना नहीं है, वह भी मौत के आते ही साथ छोड़ देता है, जो कि आत्मा के साथ एकमेक हो रहा है तब प्रकट में ही अलग/पृथक् दिखने वाले घर-सम्पत्ति, माता-पिता, बन्धु-बांधव, अपने कैसे हो सकते हैं, अर्थात् वे भी मेरी आत्मा से भिन्न हैं, इस प्रकार का चिन्तन करना अन्यत्व भावना है।

प्रश्न 12. अशुचि भावना का स्वरूप क्या है?

उत्तर **दिपै चाम चादर मढ़ी, हाड़ पींजरा देह।**
भीतर या सम जगत में, और नहीं घिन गेह॥6॥

अर्थ यह शरीर हड्डी, माँस, खून, मज्जा, मैधा, वीर्य, वात-पित्त, कफ, मल-मूत्र आदि अपवित्र पदार्थों से निर्मित व परिपूरित है, इसके ऊपर लगी चमड़ी ही चमकती है।

इसके अन्दर इतनी गन्दगी है जितनी संसार में अन्यत्र कहीं नहीं है। ऐसे घृणित व अपवित्र शरीर से मुझे प्रीति नहीं करना चाहिए, ऐसा चिंतन करना अशुचि भावना है।

प्रश्न 13. आस्त्रव भावना किसे कहते हैं?

उत्तर **मोह नींद के जोर, जगवासी घूमे सदा।**
कर्म चोर चहूँ ओर, सरवस, लूटें सुध नहीं॥7॥

अर्थ संसारी प्राणी अनादि काल से मोह नींद में बेहोश हो, भव भ्रमण कर रहे हैं, कर्म रूपी चोर इस संसारी जीव की ज्ञान,

संयम आदि सम्पत्ति को, अनंत सुखादि गुणों को लूट रहे हैं। वह जीव मिथ्यात्व, अविरति, प्रमाद, कषाय व योग के वशीभूत होकर विचित्र कर्मों का आस्रव करता है, फिर कर्म बांधकर भव भ्रमण करता रहता है। कर्मों के आने के द्वारों को ही आस्रव कहते हैं। कर्मों के आगमन के कारणों का चिंतन करना आस्रव भावना है।

प्रश्न 14. संवर भावना का क्या स्वरूप है?

उत्तर **सत गुरु देय जगाय, मोह नींद जब उपशमे।**
तब कुछ बने उपाय, कर्म चोर आवत रुकैं॥8॥

अर्थ यह जीव सच्चे गुरु के उपदेश से तथा मोहनीय कर्म का मंद उदय व उपशम होने पर मोह की निंदा को छोड़ने का उपाय करता है। आते हुए कर्मों को रोक देना ही संवर है, वह संवर सम्यक्त्व, व्रत, समिति गुप्ति, धर्म, अनुप्रेक्षा, चारित्र व परीषहों को समतापूर्वक जीतने से प्राप्त होता है, उपरोक्त संवर के कारण का चिंतन करना ही संवर भावना है।

प्रश्न 15. निर्जरा भावना किसे कहते हैं?

उत्तर **ज्ञानदीप तप तैल भर, घर शौधे भ्रम छोर।**
या विधि बिन निकसै नहीं पैठे परब चोर॥9॥
पंच महाव्रत संचरण, समिति पंच परकार।
प्रबल पंच इन्द्रिय विजय, धार निर्जरा सार॥10॥

अर्थ अपनी आत्मा में ज्ञान रूपी दीपक जलाकर, उसमें तप रूपी तैल भरकर अपनी आत्मा रूपी घर की भ्रम बुद्धि छोड़कर शुद्धि करना है, अन्यथा इसके बिना अनादि काल से जमकर बैठे हुए कर्म निकल नहीं सकते। समितियों का पालन करना भी आवश्यक है तथा पाँचों इन्द्रियों पर विजय भी प्राप्त करना चाहिए। निर्जरा का आशय है ''कर्मों का एक देश क्षय करना'' वह निर्जरा तपस्या से होती है जिन कारणों से निर्जरा होती है, उन्हीं को प्राप्त करने हेतु चिंतन करना निर्जरा भावना है।

प्रश्न 16. लोक भावना किसे कहते हैं?

उत्तर **चौदह राजू उत्तंग नभ, लोक पुरुष संठान।**
तामैं जीव अनादितें, भरमत हैं बिन ज्ञान॥11॥

अर्थ यह लोक चौदह राजू ऊँचा है, चौड़ाई नीचे सात राजू मध्य में घटती हुई एक राजू है। ऊर्ध्व लोक के मध्य बढ़ती हुई पाँच राजू पुनः घटती हुई अंत में एक राजू है, इसका धन फल तीन सौ तैंतालीस घन राजू हैं। इसका आकार पैर फैलाकर खड़े मनुष्य की तरह है, एक राजू का अर्थ है असंख्याता संख्यात योजन होता है। इस असंख्यात प्रकाश वर्ष वाले लोक में यह जीव अनादि काल से मिथ्यात्व, अज्ञान व असंयम के कारण भ्रमण कर रहा है, ऐसा चिंतन करना लोक भावना है।

प्रश्न 17. बोधि दुर्लभ भावना किसे कहते हैं?

उत्तर **धन कन कंचन राजसुख सबहिं सुलभ कर जान।**
दुर्लभ है संसार में एक जथारथ ज्ञान॥12॥

अर्थ धन पशुधन, कन अनाज आदि, कंचन स्वर्ण आदि, एवं राज्यावस्था के सुख को इस लोक में सुलभ हैं, किन्तु यथार्थ ज्ञान (आत्म ज्ञान) की प्राप्ति इस लोक/संसार में महादुर्लभ है, ऐसा चिन्तन करना ही दुर्लभ भावना है।

प्रश्न 18. धर्म भावना किसे कहते हैं?

उत्तर **जाँचे सुरतरू देय सुख, चिंतन चिंता रैन।**
बिन जाँचे बिन चिंतये, धर्म सकल सुख दैन॥12॥

अर्थ याचना/कल्पना करने पर कल्प वृक्ष सुख देता है, चिंतवन करने पर चिंतामणि चिंतित वस्तु को देता है, किन्तु धर्म बिना याचना किये, बिना चिंतवन कल्पना व मांग के किए सम्पूर्ण सुखों को देने वाला होता है। धर्म आत्मा का स्वभाव है, अहिंसा, दया, उत्तम क्षमा, सम्यक् दर्शन आदि उसी धर्म के लक्षण हैं, उस धर्म की पूर्ण प्राप्ति हेतु, उन उपायों का निरंतर चिंतन करना ही धर्म भावना है।

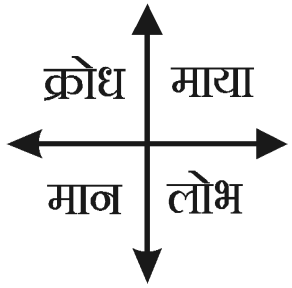

अध्याय 7

''कषाय''

प्रश्न 1. कषाय किसे कहते हैं?

उत्तर जो आत्मा को कसे अथवा कृषे उसे कषाय कहते हैं, जैसे रस्सी में लकड़ी आदि को कसकर बांधना या किसान की तरह आत्मा रूपी खेत को जोतना, जिससे कर्म रूपी फल अधिक उत्पन्न हों, उसे कषाय कहते हैं।

प्रश्न 2. कषाय के मूल कितने भेद हैं?

उत्तर कषाय (चरित्र मोहनीय) के मूल दो भेद हैं 1. कषाय, 2. नो कषाय।

प्रश्न 3. कषाय वेदनीय के कितने भेद हैं?

उत्तर 1. अनन्तानुबन्धी कषाय, 2. अप्रत्याख्यानावरण कषाय
3. प्रत्याख्यानावरण कषाय 4. संज्ज्वलन कषाय

प्रश्न 4. अनंतानुबंधी कषाय किसे कहते हैं?

उत्तर जो अनंत संसार की कारण है, ऐसी कषाय अनंतानुबंधी कषाय कहलाती है, यह कषाय आत्मा के सम्यक्त्व गुण का घात करती है। इसका वासना काल 6 माह से अधिक होता है, अर्थात् जो छह माह से ज्यादा रहे, तो वह अनन्तानुबंधी कषाय बन जाती है।

प्रश्न 5. अप्रत्याख्यानावरण कषाय किसे कहते हैं?

उत्तर जो कषाय श्रावकोचित व्रतों को (अणुव्रतों को) नहीं होने दे, वह अप्रत्याख्यानावरण कषाय कहलाती है, यह देशव्रत (अणुव्रतों) की घातक होती है, इसका अधिकतम ठहरने का काल छः माह के अन्दर ही होता है।

प्रश्न 6. प्रत्याख्यानावरण कषाय किसे कहते हैं?

उत्तर जो कषाय सकल व्रत (महाव्रतों) को नहीं होने दे वह प्रत्याख्यानावरण कहलाती है, यह सकल चारित्र की घातक होती है, इसका वासना काल अधिकतम पन्द्रह दिन होता है।

प्रश्न 7. संज्वलन कषाय किसे कहते हैं?

उत्तर जो कषाय केवल दर्शन व केवल ज्ञानादि अनंत चतुष्टय को नहीं होने दें अथवा यथाख्यात चरित्र का घात करती है, वह संज्वलन कषाय होती है, यह अधिकतम अन्तर्मुहूर्त प्रमाण काल तक रहती है।

प्रश्न 8. अनंतानुबंधी आदि कषायों के भी भेद हैं क्या?

उत्तर अनंतानुबंधी आदि चारों कषायों के (प्रत्येक के) चार भेद हैं, उनके नाम निम्नलिखित है।

1. क्रोध, 2. मान, 3. माया, 4. लोभ।

प्रश्न 9. क्रोध कषाय किसे कहते हैं?

उत्तर गुस्सा करने को या नाराज होने को क्रोध कषाय कहते हैं।

प्रश्न 10. मान कषाय किसे कहते हैं?

उत्तर अहंकार या घमण्ड करने को मान कषाय कहते हैं, अथवा दूसरों का तिरस्कार कर अपने आप को ही सब कुछ मान लेना मान कषाय है।

प्रश्न 11. माया कषाय किसे कहते हैं?

उत्तर छल-कपट या धोखा धड़ी या ठगाई करने का नाम है मायाचारी या माया कषाय है।

प्रश्न 12. लोभ कषाय किसे कहते हैं?

उत्तर लालच करने को या कंजूस प्रवृत्ति को लोभ कषाय कहते हैं अथवा युक्त कार्य में धन का व्यय नहीं करना लोभ कषाय है।

प्रश्न 13. क्रोधादि कषायों में कौन-कौन से व्यक्ति प्रसिद्ध हुए?

उत्तर क्रोध कषाय में तूंकारी या द्वैपायन

मान कषाय में रावण लक्ष्मीमती

माया कषाय में मृदुमति मुनि, सत्यघोष

लोभ कषाय में लुब्धदत्त, ब्रह्मदत्त

प्रश्न 14. मान कषाय करने से क्या हानि है?

उत्तर मान कषाय के कारण विनय गुण नष्ट होता है, जिससे आत्मा के सम्यक् ज्ञानादि गुण नष्ट हो जाते हैं, मित्रता टूट जाती है, दूसरों के प्रति प्रेम-वात्सल्य भाव नष्ट हो जाता है, परलोक में नरकादि दुर्गति की प्राप्ति होती है।

प्रश्न 15. माया कषाय करने से क्या हानि है?

उत्तर माया कषाय करने वाला नियम से तिर्यंच होता है, अत्यंत भीरू होता है, आर्त-रौद्र ध्यान वाला होता है, ईर्ष्यालु व स्व पर का घातक भी होता है, माया कषाय की तीव्रता वाला तिर्यंच, नारकी या स्त्री पर्याय को प्राप्त करता है।

प्रश्न 16. लोभ कषाय करने से क्या हानि है?

उत्तर लोभी व्यक्ति समस्त पापों का करने वाला होता है, लोभ समस्त पापों का बाप है, लोभी के कभी कर्म ध्यान नहीं होता, लोभी व्यक्ति अस्वस्थ, दु:खी निर्धन व अधर्मी होता है, वह मरण कर दुर्गति में जाता है।

प्रश्न 17. नो कषाय किसे कहते हैं, व इसके कितने भेद हैं?

उत्तर कषाय से कुछ कम घात करने वाली कषाय नो कषाय है, अथवा जो कषाय सहयोग प्राप्त करके जीव विशेष का घात करती है, वह नौ कषाय या ईषत् कषाय हैं इसे अकषाय भी कहते हैं। इसके नौ भेद हैं

1. हास्य, 2. रति, 3. अरति, 4. शोक, 5. भय, 6. जुगुप्सा, 7. स्त्रीवेद, 8. पुरुषवेद, 9. नपुंसकवेद।

प्रश्न 18. नो कषाय करने से जीव की क्या हानि है?

उत्तर नो कषाय भी कषाय की तरह से जीव का घात करने वाली है, अत: हमें इनसे भी बचना चाहिए।

अध्याय 8

''सामान्य परिचय भगवान महावीर स्वामी का संक्षिप्त परिचय''

- तीर्थंकर का नाम : महावीर स्वामी जी
- पूर्व भव का नाम (जब उन्होंने
- तीर्थंकर प्रकृति का बंध किया : नंद/सुनंद
- पूर्व भव के पिता का नाम : प्रौष्ठिल्य
- चयकर कहाँ से आये : पुष्पोत्तर विमान से
- जन्म नगरी : कुण्डलपुर
- भगवान महावीर स्वामी के माता पिता का नाम : श्रीमती महारानी त्रिशला (मनोहरा, प्रियकारिणी) श्री सिद्धार्थ महाराज
- दादा-दादी का नाम : श्री सर्वार्थ-श्रीमती श्रीमती जी
- नाना-नानी का नाम : महाराज चेटक-महारानी सुभद्रा
- वंश, जाति तथा गोत्र का नाम : नाथवंश/ज्ञात्रीवंश, लिच्छवी जाति तथा कश्यप गोत्र
- भगवान के शरीर का रंग : तपाये हुए स्वर्ण के समान
- भगवान के अन्य पाँच नाम कौन-कौन से हैं : वर्धमान, महावीर, वीर, सन्मति, अतिवीर
- भगवान महावीर के पांच नाम होने का कारण

श्रीवृद्धि सर्वत्र हुई थी, जनता ने सुख पाये थे।
इससे जग में त्रिशला नन्दन ''वर्धमान'' कहलाये थे॥
तरु लिपटे विषधर को वशकर ''महावीर'' कहलाये थे।
सर्वहितैषी शांति ''वीर'' के सब ने ही गुण गाए थे॥

अतिवीर वन सभी कर्म का तुमने काम तमाम किया
दर्शन से शंकायें मिट गयीं, मुनि जन सन्मति नाम दिया॥

- भगवान महावीर स्वामी का शासन काल : 21 हजार 34 वर्ष
- भगवान महावीर स्वामी के काल में ''सात्यकि'' नाम का ''रुद्र'' हुआ था, उनके काल में चक्रवर्ती नारायण, प्रतिनारायण तथा बलभद्र कोई नहीं हुए थे।
- भगवान महावीर स्वामी की कुल आयु : लगभग 72 वर्ष

''भगवान महावीर स्वामी का विशेष परिचय''

- भगवान महावीर स्वामी का ''गर्भ कल्याण'' तिथि : अषाढ़ सुदी षष्ठी (शुक्रवार-27 जून, ईसा पूर्व-599 वर्ष)

''जन्म कल्याणक''

- जन्म तिथि : चैत्र सुदी त्रयोदशी (सोमवार 17 मार्च ईस्वी से सन् 598 वर्ष पूर्व) (भगवान पार्श्वनाथ स्वामी के 250 वर्ष बाद हुआ।)
- चिन्ह : सिंह
- वैराग्य का कारण : जातिस्मरण

''दीक्षा कल्याणक''

- भगवान महावीर स्वामी की दीक्षा कल्याण तिथि : मंगशिर वदी दशमी (सोमवार 20 दिसम्बर, ईस्वी सन् से 269 वर्ष पूर्व)
- दीक्षा आयु : 30 वर्ष
- सहदीक्षित : अकेले
- पालकी : चन्द्रप्रभा

  प्रथम आहार दाता : राजा कूल (स्थान कूलग्राम)
- भगवान महावीर स्वामी की छद्मस्थ काल : 12 वर्ष
- भगवान की दिव्य ध्वनि कितने दिन नहीं खिरी : 66 दिन तक
- शासन देवी/यक्ष-यक्षणी का नाम : गुहयक-सिद्धायनी

''ज्ञान कल्याणक''

- भगवान महावीर स्वामी की ज्ञान कल्याणक (केवल ज्ञान) तिथि : वैशाख सुदी दशमी (रविवार 26 अप्रैल, ईस्वी सन् से 557 वर्ष पूर्व)

- केवल ज्ञान की उत्पत्ति का स्थान (किस नदी, वन, तथा वृक्ष के पास): ऋजुकूला नदी के तट पर, वन में, साल वृक्ष के नीचे।
- भगवान महावीर स्वामी के समवशरण में मुख्य गणधर व गणिनी: मुख्य गणधर - इन्द्रभूति गौतम, गणिनी : चन्दन बाला।
- भगवान महावीर स्वामी के ग्यारह गणधरों के क्रमशः नाम:
  1. इन्द्रभूति, 2. अग्निभूति, 3. वायु भूति, 4. शुचिदत्त, 5. सुधर्मस्वामी, 6. मोण्डव्य, 7. मौर्यपुत्र, 8. अकम्पन, 9. अचल, 10. मेदार्य, 11. प्रभास।
- भगवान महावीर स्वामी के ग्यारह गणधरों की क्रमशः आयुः
  1. 92 वर्ष, 2. 24 वर्ष, 3. 70 वर्ष, 4. 80 वर्ष, 5. 100 वर्ष
  6. 83 वर्ष, 7. 95 वर्ष, 8. 78 वर्ष, 9. 72 वर्ष, 10. 60 वर्ष
  11. 40 वर्ष।
- समवशरण में कुल मुनिराज : 14 हजार मुनि
- समवशरण में कुल आर्यिका : 36 हजार आर्यिका
- समवशरण में कुल श्रावक-श्राविका : 1 लाख श्रावक, तीन लाख श्राविका
- भगवान महावीर स्वामी के समवशरण में मुख्य श्रोता : राजा श्रेणिक
- भगवान महावीर स्वामी की केवली काल : 30 वर्ष

''मोक्ष कल्याणक''

- भगवान महावीर स्वामी की मोक्ष कल्याणक तिथि : कार्तिक वदी 14/30 (अमावस्या) (मंगलवार 15 अक्टूबर-ईस्वी से 527 वर्ष पूर्व) चौथे काल के 3 वर्ष 8 माह तथा 15 दिन शेष रहने पर भगवान महावीर स्वाकी का मोक्ष हुआ।
- नक्षत्र : स्वाति नक्षत्र
- मोक्ष स्थान : पावापुर

''वीर शासन जयंती'' कब से मनाई जाती है?

श्रावण वदी एकम् (बुधवार 1 जुलाई ईस्वी सन् से 557 वर्ष पूर्व)

अध्याय 9

''आहार दान विधि''

प्रश्न 1. दान किसे कहते हैं?

उत्तर अपने न्योपार्जित धन से प्राप्त सुयोग्य वस्तु का स्व व पर के कल्याणर्थ त्याग करना दान कहलाता है।

प्रश्न 2. दान किसे देना चाहिए और किसे नहीं देना चाहिए?

उत्तर दान सत्पात्रों को देना चाहिए, कुपात्रों व अपात्रों को नहीं देना चाहिए?

प्रश्न 3. सत्पात्र किसे कहते हैं? उनके कितने व कौन-कौन से भेद हैं?

उत्तर समीचीनता से युक्त अर्थात् समीचीन धर्माचरण करने वाले सत्पात्र होते हैं, उनके तीन भेद होते हैं 1. उत्तम पात्र, 2. मध्यम पात्र, 3. जघन्य पात्र।

प्रश्न 4. उत्तम, मध्यम व जघन्य पात्र कौन-कौन से होते हैं?

उत्तर उत्तम पात्र : पांच महाव्रत धारी, दिगम्बर मुनिराज होते हैं।
मध्यम पात्र : अर्जिका माता जी, ऐलक जी छुल्लक जी महाराज, प्रतिमाधारी व्रती श्रावक व श्राविकायें होती हैं।

प्रश्न 5. अपात्र व कुपात्र किन्हें कहते हैं?

उत्तर सम्यग्दर्शन आदि आत्मा के सद्गुणों से रहित, संसार मार्ग से प्रवर्धमान अपात्र हैं, तथा पापिष्ठ अदयालु, विषय लम्पटी, मिथ्यादृष्टि, कुमेषी कुपात्र होते हैं, इन्हें दान देने से पापों का ही आस्त्रव व बंध होता है।

प्रश्न 6. दान के कितने प्रकार और कौन-कौन से भेद हैं?

उत्तर दान के चार भेद हैं 1. आहाद दान से भोगभूमि स्वर्ग व कर्मभूमि

में उत्तमोत्तम भोगों की प्राप्ति, 2. औषधि दान से निरोग, सुदृढ़, सुन्दर शरीर की प्राप्ति, 3. ज्ञानदान व शास्त्रदान से श्रुत केवलीपद या सर्वत्रता की प्राप्ति, 4. अभय दान से तीन लोक में निर्भयता की प्राप्ति होती है। चारों दानों का परम्परागत फल मोक्ष की प्राप्ति है।

प्रश्न 7. उपरोक्त चारों प्रकार के दानों में कौन-कौन व्यक्ति प्रसिद्ध हुए?

उत्तर आहार दान में राजा श्रीषेण, राजा श्रेयांस, वज्रजंघ, चंदन बाला, अकृतपुण्य, अग्निला ब्राह्मणी, अष्टम बलभद्र रामचन्द्र जी, व सीता, भरत चक्रवर्ती, भामण्डल आदि।

औषधि दान में वृषभसेन, जीवक वैद्य, श्रीकृष्ण आदि।

शास्त्र दान में गोविन्द ग्वाला (कौण्डेश)

अभयदान में शूकर आदि।

प्रश्न 8. करुणा दान किसे कहते हैं?

उत्तर किसी दीन-हीन, निर्धन व्यक्ति को या पशु पक्षियों को करुणापूर्वक भोजन पानी आदि देकर सहायता करना करुणा दान है, इस दान में करुणा की प्रधानता होती है।

प्रश्न 9. आहार दान की विधि क्या है?

उत्तर आहारदान देने वाला दाता, अपनी योग्यताओं से युक्त होकर नवधा भक्तिपूर्वक दान देता है।

प्रश्न 10. आहार दान देने वाले दाता की क्या विशेषतायें होती हैं?

उत्तर आहार दाता मानव कुलीन हो, अभक्ष्य का त्यागी व सच्चे देव-शास्त्र-गुरु का परम भक्त हो, सप्त व्यसन का त्यागी, अष्ट मूलगुण धारी हो, द्रव्य रत्नत्रय के चिन्ह यज्ञोपवीत (जनेऊ) से युक्त होना चाहिए।

प्रश्न 11. नवधा भक्ति किसे कहते हैं? तथा वे कौन-कौन-सी हैं?

उत्तर नौ प्रकार की भक्ति नवधा भक्ति कहलाती है, मन, वचन, काय से आहारादि दान के समय भक्ति को स्वयं करना व दूसरों से कराना, कार्य करने वालों की अनुमोदना करना नवधा भक्ति कहलाती है। इसके नौ भेद हैं 1. पड़गाहन, 2. उच्च आसन देना, 3. पद प्रक्षालन करना, 4. पूजा करना, 5. नमस्कार करना, 6. मन की शुद्धि बनाए रखना, 7. वचन की शुद्धि बनाये रखना,

8. शरीर की शुद्धि बनाये रखना, 9. योग्य मर्यादित व भक्ष्य आहार की शुद्धि रखना।

प्रश्न 12. नवधा भक्तियों की संक्षिप्त परिभाषा क्या है?

उत्तर 1. पड़गाहन सत्पात्रों को आहारार्थ वन, नगर आदि से भ्रमण करते समय उन्हें भक्तिपूर्वक बुलाना पड़गाहन करना कहलाता है। जैसे मुनिराज को आहारार्थ आते समय कहना हे स्वामिन! नमोऽस्तु-नमोऽस्तु... अत्र तिष्ठ-3

2. उच्च स्थान देना मुनिराज आदि को गृह (भोजन शाला) में प्रवेश कराने के उपरान्त उच्च स्थान (पाटा आदि) पर विराजमान करने हेतु निवेदन करना।

3. पाद प्रक्षालन मुनिराज आदि के चरण कमलों का प्रक्षालन करना।

4. अष्ट द्रव्य से पूजन चरण कमल का प्रक्षालन करने के उपरांत सत्पात्रों (मुनिराज आदि) की अष्ट द्रव्य से पूजन करना।

5. नमस्कार पूजन के उपरांत सत्पात्रों को (मुनिराज आदि को) गवासन से बैठकर नमोऽस्तु करना।

6. मन शुद्धि आहारादि दान के समय दाता का मन अत्यन्त निर्मल होना चाहिए।

7. वचन शुद्धि आहारादि दान के समय दाता मिष्ठ और शिष्ट वचनों का ही प्रयोग करें।

8. काय शुद्धि आहारादि के दान के समय दाता की शारीरिक शुद्धि (पिण्ड शुद्धि व वस्त्रादि की शुद्धि भी) आवश्यक है।

9. आहार जल शुद्ध आहार (भोजन सामग्री) थाली आदि में लगाकर दिखाना और कहना हे स्वामिन्! यह भोजन/आहारजल शुद्ध है।

उपरोक्त नौ प्रकार की विधि ही नवधा भक्ति कहलाती है।

प्रश्न 13. दाता के सात गुण कौन-कौन से हैं?

उत्तर 1. श्रद्धा, 2. भक्ति, 3. तुष्टि, 4. अलुब्धता, 5. क्षमा, 6. विवेक, 7. सत्व।

प्रश्न 14. उपरोक्त सातों गुणों का संक्षिप्त स्वरूप क्या है?

उत्तर 1. श्रद्धा आहारादि दान में सत्पात्र में, विश्वास होना श्रद्धा गुण है।

2. भक्ति मुनिराजों आदि सत्पात्रों को आचार्य, उपाध्याय, साधु, आर्यिका व ऐलक जी, छुल्लक जी को प्राप्त कर उसमें संतुष्ट होना।

4. अलुब्धता दान देते समय अथवा हर समय लोभ कषाय से मुक्त रहना।

5. क्षमा आहार आदि दान देते समय क्षमा सहित भाव रखना, किसी पर क्रोध नहीं करना।

6. विवेक आहार देते समय विवेकपूर्वक क्रिया करना, पात्रों की प्रकृति, मौसम, वायु, तपस्या शरीर की स्थिति देखकर आहारादि देना विवेक नाम का गुण है।

7. सत्व प्राणी मात्र के प्रति दयाभाव कोमल परिणाम रखना दाता का सत्व नाम का सातवाँ गुण है।

प्रश्न 15. आहार दान के पाँच दूषण कौन-कौन से हैं? दाता के द्वारा त्याज्य होते हैं?

उत्तर 1. विलम्ब से दान देना, 2. निरादर/उपेक्षा पूर्वक दान देना, 3. अशिष्ट वचन कहकर दान देना, 4. संक्लेशता पूर्वक दान देना, 5. दान देकर पश्चाताप करना।

प्रश्न 16. आहार के पाँच आभूषण कौन-कौन से हैं, जिन से दान के फल में विशेषता आती है?

उत्तर 1. आदरपूर्वक दान देना, 2. मिष्ट/प्रिय वचन बोलते हुए दान देना, 3. निर्मल भावों से युक्त होकर दान देना, 4. सही समय पर विधिपूर्वक दान देना, 5. दान देकर अपना अहोभाग्य मानना।

प्रश्न 17. आहार दान के पाँच अतिचार कौन-कौन से हैं?

उत्तर 1. सचित्त पत्र या बर्तनों में आहारादि (कच्चे पानी से धुले बर्तनों में भोजन सामग्री रखना)

2. सचित्त पत्ते या बर्तन आदि को भोजन आदि पर ढाकना।

3. अनुकूलता एवं सामर्थ्य होते हुए भी स्वयं आहार न देकर मात्र दूसरों को आहार देने का उपदेश देना।

4. आहार दान देने वालों से ईर्ष्या या मात्सर्य भाव रखना।

5. समय का उल्लंघन करके आहारादि दान देना।

अध्याय 10

''मेरी भावना''

प्रश्न 1. सच्चे देव का क्या स्वरूप है?

उत्तर **जिसने रागद्वेष कामादिक जीते, सब जग जान लिया।**
सब जीवों को मोक्षमार्ग का, निस्पृह हो उपदेश दिया॥
बुद्ध, वीर, जिन, हरि हर ब्रह्मा, या उस को स्वाधीन कहो।
भक्ति भाव से प्रेरित हो यह, चित्त उसी में लीन रहो॥1॥

अर्थ जिसने (जिस महापुरुष ने) राग, द्वेष, मोह व कामादि भावों को जीतकर वीरागता प्राप्त कर ली है, जिनने ज्ञानावरण व दर्शनावरण कर्म को नष्ट कर सर्वज्ञता व सर्वदर्शित्व को प्राप्त कर लिया है, तथा जो संसार के समस्त पदार्थों में निस्पृह हैं व निष्पृहता के साथ संसारी प्राणियों को मोक्षमार्ग का उपदेश देते हैं वे बुद्ध, वीर, जिन, हरि (विष्णु), हर (महादेव शंकर) ब्रह्मा या सर्व कर्म बन्धनों से मुक्त स्वाधीन हैं, किसी भी नाम के धारक हो, ऐसे परम आराध्य परमात्मा के चरणों में मेरा चित्त सदैव लीन रहे॥1॥

प्रश्न 2. सच्चे गुरुओं का क्या स्वरूप है?

उत्तर **विषयों की आशा नहिं जिनके, साम्यभाव धन रखते हैं।**
निज पर के हित साधन में जो, निशदिन तत्पर रहते हैं।
स्वार्थ त्याग की कठिन तपस्या, बिना खेद जो करते हैं।
ऐसे ज्ञानी साधु जगत के दुःख समूह को हरते हैं॥2॥

अर्थ जो पंचेन्द्रिय विषयों की आशा से रहित हैं, तथा सदैव संतोष (समता) रूपी धन को धारण करते हैं, जो सदैव स्व पर के कल्याण में तत्पर रहते हैं, सांसाररिक समस्त स्वार्थों को त्याग

कर परमार्थ की सिद्धि हेतु जो साधना करते हैं, ऐसे साधु ही संसार के प्राणियों के दु:ख दूर करने में समर्थ हैं व सच्चे गुरु हैं।।2।।

प्रश्न 3. सत्संग की भावना व पाँच पापों का त्याग भी क्या गृहस्थ का धर्म है?

उत्तर हाँ, सत्संग, साधु भक्ति, पाँच पापों का त्याग और अणुव्रतों का नियम रखना ही श्रावक का धर्म है। कहा भी है

रहे सदा सत्संग उन्हीं का, ध्यान उन्हीं का नित्य रहे।
उन्हीं जैसी चर्या में यह, चित्त सदा अनुरक्त रहे।
नहीं सताऊँ किसी जीव को, झूठ कभी नहीं कहा करूँ।
पर धन वनिता पर न लुभाऊँ, संतोषामृत पिया करूँ।।3।।

अर्थ हे भगवान! मुझे ऐसी वीतरागी छवि व सच्चे साधुओं का पावन सानिध्य सदैव मिलता रहे, मैं सदैव अपने अंतरंग में उनका ध्यान करता रहूँ, मैं कभी किसी जीव को नहीं सताऊँ, कभी झूठ नहीं बोलूँ, कभी परधन देखकर अपनी नीयत खराब नहीं करूँ, कभी परस्त्री के प्रति गलत भाव नहीं रखूँ, तथा मैं यथा उपलब्ध साधन-सामग्री में ही संतुष्ट रहूँ, अधिक परिग्रह की वांछा नहीं करूँ। अर्थात् अहिंसा, सत्य, अचौर्य, ब्रह्मचर्य व परिग्रह प्रमाण आदि अणुव्रतों का पालन करूँ।।3।।

प्रश्न 4. धर्मात्मा पुरुष की और क्या-क्या भावनायें होती हैं?

उत्तर

अहंकार का भाव न रखूँ, नहीं किसी पर क्रोध करूँ।
देख दूसरों की बढ़ती को, कभी न ईर्ष्या भाव धरूँ।।
रहे भावना ऐसी मेरी सरल सत्य व्यवहार करूँ।
बने जहाँ तक इस जीवन में औरो का उपकार करूँ।।4।।

अर्थ हे भगवन्! मेरे अन्दर कभी अहंकार का भाव नहीं आये, मैं कभी किसी पर भी क्रोध नहीं करूँ, अन्य जनों की बुद्धि को देखकर मेरे मन में कभी ईर्ष्या का भाव न आये, हे भगवन्! मैं सदैव सबके प्रति सरल व सत्य ही व्यवहार करूँ, तथा यथा शक्ति में अपने मन से, वचन से, काय से, एवं धनादि पदार्थों से दूसरों के उपकार में ही संलग्न रहूँ।।4।।

प्रश्न 5. सम्यक् दृष्टि जीव की मैत्री आदि चार भावनायें कौन-सी हैं?

उत्तर **मैत्री भाव जगत में मेरा, सब जीवों से नित्य रहे।**
दीन दुःखी जीवों पर मेरे, उर से करुणा श्रोत बहे॥
दुर्जन, क्रूर, कुमार्ग रतों पर, क्षोभ नहीं मुझको आवे।
साम्य भाव रक्खूँ में उन पर, ऐसी परणति हो जावे॥
गुणी जनों को देख हृदय में मेरे, प्रेम उमड़ आवे।
बने जहाँ तक उनकी सेवा करके यह मन सुख पावे॥

अर्थ हे भगवन्! संसार के समस्त प्राणियों के प्रति नित्य ही मेरा मैत्री भाव रहे, दीन-दुःखी जीवों के प्रति मेरे हृदय में सदैव करुणा का झरना बहता रहे, जो दुर्जन हैं, क्रूर हैं, दुष्ट हैं, खोटे मार्ग में लीन हैं, धर्म से विपरीत प्रवृत्ति करने वाले हैं उनके प्रति में मध्यस्थ रहूँ तथा हे भगवन्! मेरे मन में गुणी जनों को देखकर अंतरंग-श्रद्धा भक्ति, समर्पण व वात्सल्य, जल से परिपूरित श्याम मेघ घटा की तरह उमड़ पड़े और उनके चरणों की रज पाकर, उनकी सेवाकर यह मन अत्यंत सुखद व शांति की अनुभूति को प्राप्त हो।।5।।

प्रश्न 6. उस भद्र परिणामी मंदकषायी व्यक्तियों के द्वारा और कौन-सी भावना भायी जाती है?

उत्तर **होऊ नहीं कृतघ्न कभी मैं, द्रोह न मेरे उर आवे।**
गुण ग्रहण का भाव रहे नित, दृष्टि न दोषों पर जावे॥6॥
कोई बुरा कहे या अच्छा, लक्ष्मी आवे या जावे।
लाखों वर्षों तक जीऊ, या मृत्यु आज ही आ जावे॥
अथवा कोई कैसा भी भय, या लालच देने आवे।
तो भी न्याय मार्ग से मेरा, कभी पग डिगने पावे॥7॥

अर्थ वह भद्र परिणामी, मंद कषायी व्यक्ति भावना भाता है कि हे भगवन! मैं सदैव कृतज्ञ (उपकारी के उपकारी को न मानने वाला) कभी मेरे मन में न आवे। मैं कभी भी साधर्मी के प्रति विद्रोह का भाव नहीं रखूँ। दूसरों के दोषों को मेरी दृष्टि ग्रहण

न करें। हे भगवन्! मुझे कोई बुरा कहे या अच्छा और मेरे घर में लक्ष्मी आवे या चाहे चली जावे, मैं लाखों वर्षों तक पृथ्वी पर जीवित रहूँ या मेरा आज ही मरण काल आ जावे किन्तु मेरा मन दोनों परिस्थितियों (अनुकूल व प्रतिकूल) समता भाव को प्राप्त हो, हे प्रभु! मेरे जीवन में कितनी भयानक/खतरनाक स्थिति आ जाये या मुझे कोई लोभ लालच देवे, किन्तु न्याय मार्ग/सत्यता व ईमानदारी के मार्ग से मेरे कदम डिगें नहीं।।7।।

प्रश्न 7. सम्यक दृष्टि/धर्मात्मा जीव और किन-किन परिस्थितियों में समता भाव रखने की भावना भाता है?

उत्तर होकर सुख में मगन न फूलें, दु:ख में कभी न घबरायें।
पर्वत नदी शमशान भयानक अटवी से नहीं भय खावें।।
रहे अडोल अकम्प निरन्तर यह मन दृढ़तर बन जावें।
इष्ट वियोग अनिष्ट संयोग में, सहन शीलता दिखलायें।।8।।

अर्थ हे भगवन! मैं भौतिक सुखों में मगन न हूँ, अहंकार में फूलूँ नहीं और दु:ख आने पर कभी घबराऊँ नहीं। पर्वत की गुफाओं में, नदी के किनारे, शमशान में निर्जन वन में, भटक जाने पर अकेले में भी मैं कभी भयभीत नहीं होऊँ, मेरा मन सदैव अडोल, अकंप दृढ़तर हो जाये, मेरा मन इष्ट वियोग व और अनिष्ट संयोग होने पर समता धारण करे।।8।।

प्रश्न 8. धर्मात्मा व्यक्ति संसार के प्राणियों के प्रति कैसी भावना भाता है?

उत्तर सुखी रहे सब जीव जगत के कोई कभी न घबरावें।
बैर पाप अभिमान छोड़ जग, नित्य नये मंगल गावें।।
घर-घर चर्चा रहे धर्म की, दुष्कर-दुष्कृत हो जावें।
ज्ञान चरित उन्नत कर अपना, मनुज जनम सब फल पावें।।

अर्थ हे भगवन! संसार के सभी प्राणी सदैव सुखी रहें, कोई जीव कभी न दु:खी हो और न कभी घबरायें, सभी प्राणी बैर, पाप, अभिमान को छोड़कर धर्म ध्यान में संलग्न हों, सबका मंगल हो, हर घर में प्रत्येक व्यक्ति के मुख पर नित्य धर्म की चर्चा हो, संसार में दुष्कर व दुर्लभ हों, अर्थात् कोई भी जीव कभी पाप नहीं करें, प्राणी अपने जीवन में सम्यक् दर्शन, ज्ञान चारित्र को

प्राप्त करें व उसकी अपनी उन्नति करें।

प्रश्न 9. धर्मात्मा व्यक्ति संसारी प्राणियों के हितार्थ भगवान से क्या प्रार्थना करता है?

उत्तर **ईति भीति व्यापे नहीं जग में, वृष्टि समय पर हुआ करें।**
धर्म निष्ठ होकर राजा भी, न्याय प्रजा का किया करे॥
रोग मरी दुर्भिक्ष न फैले, प्रजा शांति से जिया करे।
परम अहिंसा धर्म जगत में, फैल सर्वहित किया करें॥10॥

अर्थ हे भगवन्! संसार में सात प्रकार की ईतियाँ न हों तथा सप्त प्रकार के भय न हों, समय पर वर्षा हो, छह ऋतुओं का सबको समीचीन फल मिले। देश का राजा धर्म के प्रति निष्ठावान हो, संसार के प्रत्येक प्राणी को न्याय मिले, संसार में बेईमानी, अनाचार, क्रूरता आदि न हो, कभी महामारी न हो, दुष्काल न पड़े, भूकम्प, महादुर्घटना आदि प्राकृतिक प्रकोप न हो, प्रत्येक जीव सुख-शांति से अपना जीवन यापन करें, सम्पूर्ण विश्व में परम अहिंसा रूपी सर्वश्रेष्ठ धर्म प्रचार-प्रसार हो, संसार के समस्त प्राणियों का हित हो॥10॥

प्रश्न 10. धर्मात्मा व्यक्ति देश के प्रति एवं देश भक्तों के प्रति क्या मंगल भावना रखते हैं?

उत्तर **फैले प्रेम परस्पर जग में, मोह दूर ही रहा करे।**
अप्रिय कटुक कठोर शब्द नहीं, कोई मुख से कहा करे॥
बनकर सब "युगवीर" हृदय से, देशोन्नति रत रहा करें।
वस्तु स्वरूप विचार खुशी से, सब दुःख संकट सहा करें॥11॥

अर्थ हे भगवन! संसार के सभी प्राणी परस्पर प्रेमपूर्वक रहें, किन्तु मोह से दूर रहें, (मोह का आशय है अपने स्वरूप को भूलकर, पर में लीन हो जाना, पर स्वरूप को अपना स्वरूप मान लेना) कोई भी व्यक्ति अपने मुख से अप्रिय, कटुक, कठोर वचनों का प्रयोग न करें, सभी युगवीर बनकर रहें।

III

भाग-3

अध्याय 1

''श्री पार्श्वनाथ स्तुति''

तुम से लागी लगन, लेलो अपनी शरण, पारस प्यारा।
मेटो-मेटो जी संकट हमारा।
निश दिन तुमको जपूँ, पर से नेहा तजूँ।
जीवन सारा, तेरे चरणों में बीते हमारा॥
मेटो-मेटो जी संकट हमारा॥1॥
अश्वसेन के राज दुलारे, वामा देवी के सुत प्राण प्यारे।
सबसे नेहा तोड़ा, जग से मुँह को मोड़ा, संयम धारा॥
मेटो-मेटो जी सकट हमारा॥2॥
इन्द्र और धरणेन्द्र भी आये, देवी पद्मावती मंगल गाये।
आशा पूरो सदा, दुःख नहीं पावे कदा, सेवक थारा॥
मेटो-मेटो जी संकट हमारा॥2॥
जग के दुख की तो परवाह नहीं है,
स्वर्ग-सुख की भी चाह नहीं है।
मेटो जामन मरन, होवे ऐसा यतन, पारस प्यारा।
मेटो-मेटो जी संकट हमारा॥2॥
लाखों बार तुम्हें शीश नवाऊँ, जग के नाथ तुम्हें कैसे पाऊँ।
पंकज, व्याकुल भया, दर्शन बिन ये जिया, लागे खारा।
मेटो-मेटो जी संकट हमारा॥2॥

आराधना पाठ

मैं देव नित अरिहंत चाहूँ, सिद्ध का सुमरन करौं।
मैं सूर गुरुमुनि तीन पद ये, साधु पद हृदय धरौं॥
मैं धर्म करुणामय जु चाहूँ, जहाँ हिंसा रंच ना।
मैं शास्त्र ज्ञान विराग चाहूँ, जासु में परपंच ना॥1॥
चौबीस श्री जिनदेव चाहूँ, और देव न मन वसैं।
जिन वीस क्षेत्र विदेह चाहूँ, वंदितैं पातक नसैं॥
गिरनार शिखर सम्मेद चाहूँ, चम्पापुर पावापुरी।
कैलाश श्री जिनधाम चाहूँ, भजत भाजै भ्रमजुरी॥2॥
नवतत्व का सरधान चाहूँ, और तत्व न मन धरौं।
षट द्रव्य गुन परजाय चाहूँ, ठीक जासों भय हरौं॥
पूजा परम जिनराज चाहूँ, और देव न चहूँ कदा।
तिहूँकाल की मैं जाप चाहूँ, पाप नहिं लागै कदा॥3॥
सम्यक्त्व दर्शन ज्ञान चारित, सदा चाहूँ भाव सौं।
दशलक्षणी मैं धर्म चाहूँ, महा हरख उछाव सौं॥
सोलह जु कारण दुख निवारन, सदा चाह प्रीति सौं।
मै। निज अठाई पर्व चाहूँ, महा मंगल रीति सौं॥4॥
अनुयोग चारों सदा चाहूँ, आदि अन्त निवाह सौं।
पाये धरम के चार ये, चाहूँ अधिक उत्साह सौं॥
मैं दान चारों सदा चाहूँ, भवन बस लाहो लहूँ।
आराधना मैं चारि चाहूँ, अन्त मैं ये ही गहूँ॥5॥

भावना बारह जु भाऊँ, भाव निरमल होत हैं।
मैं व्रत जु बारह सदा चाहूँ, त्याग भाव उद्योत हैं॥
प्रतिमा दिगम्बर सदा चाहूँ, ध्यान आसन सोहना।
वसुकर्म तैं मैं छुटा चाहूँ, शिव लहूँ जहाँ मोह ना॥6॥
मैं साधुजन को संग चाहूँ, प्रीति तिन ही सों करो।
मैं पर्व के उपवास चाहूँ, अवर आरम्भ परिहरों॥
इस दुक्ख पंचमकाल माहीं, सुकूल श्रावक में लह्यो।
अरु महाव्रत धरि सको नाहीं, निबल तल मैंने गह्यो॥7॥
आराधना उत्तम सदा, चाहूँ सुनो जिनराय जी।
तुम कृपानाथ अनाथ 'द्यानत', दया करना न्याय जी॥
वसुकर्म नाश विकास, ज्ञान प्रकाश मोकों दीजिए।
करि सुगति गमन समाधिमरन, सभक्ति चरनन दीजिए॥8॥

अध्याय 2

''सप्त तत्व व नव पदार्थ''

प्रश्न 1. तत्व किसे कहते हैं?

उत्तर वस्तु के स्वभाव को तत्व कहते हैं, जिस वस्तु का जो स्वभाव है, वही उसका तत्व है। जैसे जल का स्वभाव शीतलता आदि, अग्नि का ऊष्णता आदि, जीव का स्वभाव-जीवत्व आदि।

प्रश्न 2. तत्व कितने होते हैं?

उत्तर तत्व के अनन्त भेद हैं, किन्तु प्रयोजन भूत तत्व सात होते हैं, उनके नाम इस प्रकार हैं

1. जीव, 2. अजीव, 3. आस्रव, 4. बंध, 5. संवर, 6. निर्जरा, 7. मोक्ष।

इनमें पुण्य और पाप इन दो तत्व को और जोड़ दें तो नौ पदार्थ होते हैं।

प्रश्न 3. जीव किसे कहते हैं? और इसके मुख्य भेद कौन-कौन से हैं?

उत्तर जिसमें चेतना पायी जाती हैं उसे जीव कहते हैं अथवा जो जीता था, जीता है, जीवेगा वह जीव है। जीव के दो भेद हैं

1. संसारी जीव, 2. मुक्त जीव।

प्रश्न 4. अजीव किसे कहते हैं?

उत्तर जिसमें चेतना नहीं पाई जाती है उसे अजीव तत्व कहते हैं। अजीव के पाँच भेद हैं

1. पुद्गल द्रव्य, 2. धर्म द्रव्य, 3. अधर्म द्रव्य, 4. आकाश द्रव्य,

5. काल द्रव्य।

प्रश्न 5. आस्रव तत्व किसे कहते हैं और मुख्य भेद कौन-कौन से हैं?

उत्तर कर्मों के आगमन द्वार को आस्रव कहते हैं। आस्रव तत्व के दो भेद हैं

1. भावास्रव, 2. द्रव्यास्रव

प्रश्न 6. भावास्रव और द्रव्यास्रव किसे कहते हैं?

उत्तर आत्मा के जिन भावों (परिणामों) से कर्म आते हैं, उन भावों को भावास्रव कहते हैं तथा कर्म के समूह का आत्म प्रदेशों में आना द्रव्यास्रव कहलाता है।

प्रश्न 7. भावास्रव के मूल कितने भेद हैं?

उत्तर भावास्रव के उतने ही भेद हैं जितने प्रकार के जीव के आस्रव करने वाले भाव होते हैं, अर्थात् अनन्त भेद हैं। भावास्रव के मूल चार भेद हैं

1. मिथ्यात्व, 2. अविरति, 3. कषाय, 4. योग

प्रश्न 8. भावास्रव के कुल कितने भेद हैं?

उत्तर भावास्रव के कुल 57 (सत्तावन) भेद हैं

पाँच (5) मिथ्यात्व 1. विपरीत मिथ्यात्व, 2. एकान्त मिथ्यात्व, 3. विनय मिथ्यात्व, 4. संशय मिथ्यात्व, 5. अज्ञान मिथ्यात्व।

बारह (12) अविरति 1. पृथ्वी कायिक, 2. जल कायिक, 3. अग्नि कायिक, 4. वायु कायिक, 5. वनस्पति कायिक, 6. त्रस कायिक जीव। इन षट् कायिक जीवों की रक्षा नहीं करना। ये 6 अविरति हुई + 7. स्पर्शन इन्द्रिय, 8. रसना इन्द्रिय, 9. घ्राण इन्द्रिय, 10. चक्षु इन्द्रिय, 11. कर्ण इन्द्रिय, 9. घ्राण इन्द्रिय, 10. चक्षु इन्द्रिय, 11. कर्ण इन्द्रिय, 12. अनिन्द्रिय (मन) इन छहों से विरत नहीं होना अर्थात् इनकी विषयों में स्वच्छंद प्रवृत्ति होना।

पच्चीस (25) कषाय अनन्तानुबन्धी 1. क्रोध, 2. मान, 3.

माया, 4. लोभ अप्रत्याख्याना वरण सम्बन्धी, 5. क्रोध, 6. मान, 7. माया, 8. लोभ, प्रत्याख्यानावरण सम्बन्धी, 9. क्रोध, 10, मान, 11. माया, 12. लोभ, संज्वलन सम्बन्धी, 13. क्रोध, 4. मान, 15. माया, 16. लोभ, 17. हास्य, 18. रति, 19. अरति, 20. शोक, 21. भय, 22. जुगुप्सा, 23. स्त्री वेद, 24. पुरुष वेद, 25. नपुंसक वेद।

पन्द्रह योग 1. औदारिक काय योग, 2. औदारिक मिश्र काय योग, 3. वैक्रियिक काय योग, 4. वैक्रियिक मिश्र काय योग, 5. आहारक काय योग, 6. आहारक मिश्र काययोग, 7. कार्माण काय योग, 8. सत्य वचन योग, 9. असत्य वचन योग, 10. उभय वचन योग, 11. अनुभय वचन योग, 12. सत्य मनोयोग, 15. अनुभय मनोयोग। आस्रव के कुल भेद

5 + 12 + 25 + 15 = 57.

प्रश्न 9. बंध किसे कहते है। एवं उसके मूल भेद कितने हैं?

उत्तर आत्म प्रदेशों के साथ कर्म प्रदेशों का दूध पानी की तरह एक मेक हो जाना बंध कहलाता है। उस बंध तत्व के मूल दो भेद हैं 1. द्रव्यबंध, 2. भावबंध।

प्रश्न 10. द्रव्यबंध और भावबंध किसे कहते हैं?

उत्तर आत्मा के जिन भावों (परिणामों) से कर्म बंधते हैं वह भावबंध है, तथा आत्म प्रदेश व कर्म प्रदेशों का एकमेक हो जाना द्रव्य बंध है।

प्रश्न 11. बंध के क्या अन्य भेद हैं, यदि हैं तो नाम बताओ?

उत्तर बंध के दूसरी अपेक्षा से चार भेद हैं, वे इस प्रकार हैं 1. प्रकृति बंध, 2. प्रदेशबंध, 3. स्थिति बंध, 4. अनुभाग बंध।

प्रश्न 12. संवर तत्व किसे कहते हैं एवं इसके मूल भेद कौन-कौन से हैं?

उत्तर कर्मों के आगमन के द्वारों का रुक जाना संवर तत्व हैं। संवर तत्व के दो भेद हैं 1. भाव संवर, 2. द्रव्य संवर।

प्रश्न 13. संवर तत्व के सत्तावन (57) भेद कौन-कौन से हैं?

उत्तर पाँच महाव्रत अहिंसा, सत्य, अचौर्य, ब्रह्मचर्य, अपरिग्रह।

पाँच समिति ईर्या, भाषा, एषणा, आदान, निक्षेपण, उत्सर्ग।

तीन गुप्ति मनोगुप्ति, वचनगुप्ति, कायगुप्ति।

दस धर्म उत्तम क्षमा धर्म, मार्दव, आर्जव, शौच, सत्य, संयम, तप, त्याग, आकिंचन्य, ब्रह्मचर्य।

बाईस परिषहजय 1. क्षुधा, 2. तृषा, 3. शीत, 4. ऊष्ण, 5. दंसमशक, 6. नाग्न्य, 7. अरति, 9. स्त्री, 9. चर्या, 10. निषधा, 11. शय्या, 12. आक्रोश, 13. वध, 15. याचना, 16. रोग, 17. तृणस्पर्श, 18. मल, 19. सत्कार-पुरस्कार, 20. प्रज्ञा, 21. अज्ञान, 22. अदर्शन।

बारह भावना अनित्य भावना, अशरण, संसार, एकत्व, अन्यत्व, अशुचि, आस्त्रव, संवर, निर्जरा, लोक, बोधि दुर्लभ, धर्म भावना।

5 महाव्रत + 5 समिति + 3 गुप्ति + 10 धर्म + 22 परिषहजय + 12 भावना = 57

प्रश्न 14. निर्जरा तत्व किसे कहते हैं? और इसके कितने भेद हैं?

उत्तर पूर्व बद्ध कर्मों का एक देश क्षय हो जाना निर्जरा है। इसके दो भेद हैं 1. भाव निर्जरा, 2. द्रव्य निर्जरा

प्रश्न 15. निर्जरा के दूसरी प्रकार के कितने भेद हैं?

उत्तर निर्जरा के दूसरी प्रकार से भी दो भेद हैं, जो इस प्रकार हैं

1. सविपाक निर्जरा, 2. अविपाक निर्जरा।

प्रश्न 16. सविपाक निर्जरा और अविपाक निर्जरा किसे कहते हैं?

उत्तर जो कम्र अपनी अवधि पूरी होने पर स्वयं निर्जीण हो जाते हैं, वह सविपाक निर्जरा है, इसे एकाम निर्जरा भी कहते हैं तथा जो कर्म तपस्या के द्वारा समय के पूर्व निर्जीर्ण कर दिए जाते हैं वह अविपाक निर्जरा है। अविपाक निर्जरा और अकाम निर्जरा एक नहीं है। मिथ्यात्व और अज्ञान की दशा में कुतप के द्वारा जो

कर्म निर्जीर्ण होते हैं, वह अकाम निर्जरा है। इस निर्जरा में कर्मों की निर्जरा कम और बंध ज्यादा होता है, अतः यह निर्जरा संसारवर्द्धक ही है।

प्रश्न 17. मोक्ष तत्व किसे कहते हैं? और इसके कितने भेद हैं?

उत्तर आत्मा से सम्पूर्ण कर्मों का सदा के लिए अलक हो जाना ही मोक्ष तत्व के भी द्रव्य मोक्ष व भाव मोक्ष की उपेक्षा दो भेद हैं।

प्रश्न 18. पुण्य और पाप किसे कहते हैं?

उत्तर जो आत्मा को पवित्र करे उसे पुण्य कर्म कहते हैं, तथा जो आत्मा को संसार में पतित करे वह पाप कर्म है। शुभ आस्रव से पुण्य का व अशुभ आस्रव से पाप का बंध होता है।

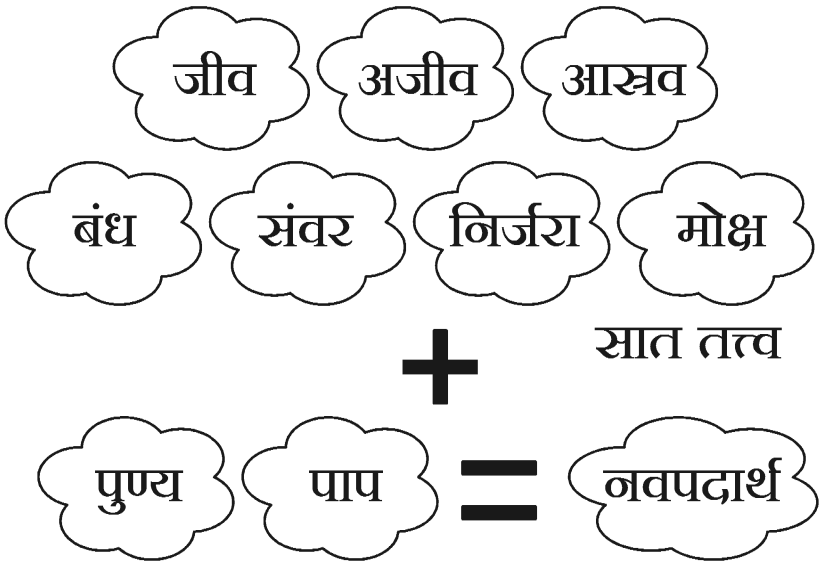

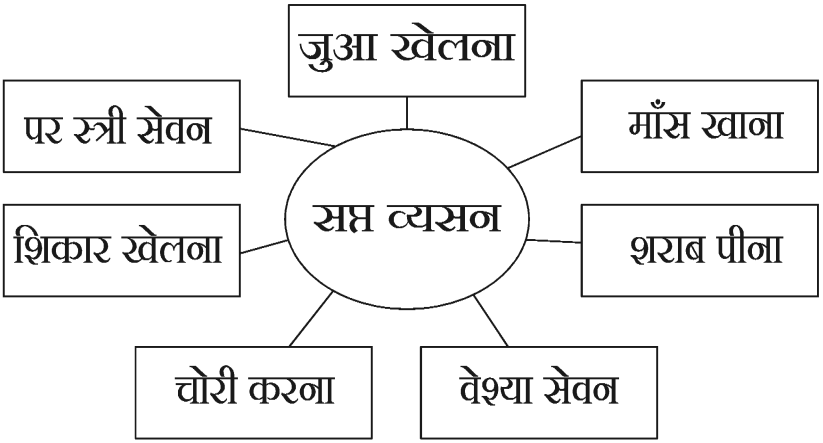

अध्याय 3

''महापाप-सप्त व्यसन''

प्रश्न 1. व्यसन किसे कहते हैं?

उत्तर बुरी आदत या बुरे कार्यों को व्यसन कहते हैं, अथवा ये दुर्व्यसन ही महापाप कहलाते हैं।

प्रश्न 2. व्यसन के कितने और कौन-कौन से भेद हैं?

उत्तर व्यसन के मुख्य रूप से सात भेद हैं

1. जुआ खेलना, 2. मांस खाना, 3. शराब पीना, 4. वेश्या सेवन करना, 5. चोरी करना, 6. शिकार खेलना, 7. पर स्त्री के साथ सेवन करना।

जुआ खेलना मांस मद, वेश्या व्यसन शिकार।
चोरी पर रमणी रमण, सातों व्यसन निवार।।

प्रश्न 3. जुआ खेलने का क्या आशय है?

उत्तर रुपये पैसे की बाजी या दाव लगाकर जो हार-जीत के खेल खेले जाते हैं वे सभी जुआ कहलाते हैं।

प्रश्न 4. जुआ खेलने से क्या हानि है, तथा जुआ खेलने में कौन प्रसिद्ध हुआ?

उत्तर जुआ खेलने से धन की हानि होती है। मान-प्रतिष्ठा नष्ट हो जाती है, उसकी धर्म भावनायें नष्ट हो जाती हैं, कदाचित जुआ

खेलने में धन जीत भी लिया जाये तो वह दुर्व्यसनों में ही नष्ट हो जाता है। इस लोक में निंदा व दुख प्राप्त होता है तथा परलोक में वह जीव दुर्गति का पात्र होता है, जुआ खेलने में युधिष्ठिर आदि पाँच पांडव प्रसिद्ध हुए।

प्रश्न 5. ''मांस खाना'' इस व्यसन से क्या आशय है?

उत्तर जिन वस्तुओं में दो इन्द्रिय जीव पैदा हो गए हैं, ऐसे पदार्थों का सेवन करना, या मरे हुए पंचेन्द्रिय आदि जीव के मृत कलेवर को या मारकर उसके शरीर का भक्षण करना ''मांस खाना'' व्यसन कहलाता है।

प्रश्न 6. मांस खाने से क्या हानि है?

उत्तर मांस खाने वाला हिंसक होता है, मांसाहारी तीव्र पाप कर्म का बंध करते हैं, उनके रंच मात्र भी दया धर्म का प्रादुर्भाव नहीं हो सकता, मांसाहारी मरकर नरक आदि दुर्गति को प्राप्त होते हैं। चिरकाल तक अनन्त प्रकार के शारीरिक, मानसिक, वाचनिक, क्षेत्र सम्बन्धी दु:ख को प्राप्त करते हैं।

प्रश्न 7. क्या अण्डा भी मांस है?

उत्तर हाँ, अण्डा भी मांसाहार है, क्योंकि अण्डा भी किसी न किसी पक्षी का ही होता है। उस अण्डे में से जीव पैदा होता है, इसलिए मांसाहार के त्यागी को अण्डा, शराब, मछली आदि समस्त गंदे पदार्थों का त्याग अनिवार्य रूप से करना चाहिए।

प्रश्न 8. इनके अतिरिक्त कौन-कौन से पदार्थ हैं जिनके भक्षण से मांस खाने का दोष लगता है?

उत्तर मांसाहार के त्यागी व्यक्ति को शहद, नवनीत, रात्रि भोजन, बाजार की जलेबी आदि मिठाईयां, अंग्रेजी दवाईयां (सीरप) आदि मर्यादा के बाहर का अचार-मुरब्ब एवं बिस्किट, सॉस, डबलरोटी, चाऊमीन, पावभाजी, गुटखा व चाय आदि का भी त्याग कर देना चाहिए।

प्रश्न 9. मद्य सेवन से आपका क्या आशय है तथा इसके सेवन से क्या हानि है?

उत्तर मद्य सेवन का आशय शराब पीना है। दारू, वीयर, रम, ठण्डी, देशी, इंगलिश किसी भी प्रकार की शराब हो वह जीव घात से ही निर्मित होती है, जौ, फल, गुड़ आदि को सड़ा गलाकर

उसका रस निकाला जाता है। उसमें असंख्यात जीव पैदा हो जाते हैं उन्हीं का रस शराब होती है। जीवों का रस होने से ही उसमें मादकता आती है। शराब पीने से बुद्धि भ्रष्ट हो जाती है, तथा वह शराबी और अधिकसे अधिक पाप कार्यों में संलग्न हो जाता है।

प्रश्न 10. मद्य सेवन करने से परलोक में क्या फल मिलता है?

उत्तर मद्य सेवन करने वाले जीव आजीवन पाप कर्मों में लीन रहते हैं, पाप करने से वे दु:खों से परिपूर्ण मरकर नरक में जन्म लेते हैं, वहाँ सागरोपर्यन्त अनन्त दु:खों को भोगते हैं। जहाँ पर (नरक में) क्षणभर को भी सुख-शांति नहीं मिलती। शराब पीने में यदुवंशी कुमार प्रसिद्ध हुए, इन्होंने द्वीपायन मुनिराज पर उपसर्ग किया,जिस पाप के कारण के कुमार नरक में गए।

प्रश्न 11. वेश्या सेवन व्यसन से क्या अभिप्राय है?

उत्तर कामवासना से पीड़ित होकर, दुराचारिणी, व्यभिचारिणी, कामुक व बाजारू स्त्रियों से सम्पर्क रखना, उनके साथ काम सेवन करना वेश्या सेवन व्यसन कहलाता है।

प्रश्न 12. वेश्या सेवन से क्या हानि है, इस व्यसन में कौन प्रसिद्ध हुआ?

उत्तर वेश्या सेवन करने से धन-सम्पत्ति, ऐश्वर्य, प्रतिष्ठा, शारीरिक, सौन्दर्य एवं आरोग्य नष्ट हो जाता है। दीनता, अपमान, तिरस्कार, निंदा, क्रूरता, चिरस्थाई रोग, अनिवारणीय दु:ख, मन: संताप, संक्लेशता, पाप कर्मों का बंध, दुर्गति की प्राप्ति इत्यादि प्रतिकूल अवस्थायें सहन करनी पड़ती हैं। वेश्यागामी पुरुष नरक में जाता है, वहाँ उसको लोहे की गर्म-गर्म तप्तायमान पुत्तलिकाओं से आलिंगन कराते हैं, शरीर के तिल-तिल बराबर टुकड़े-टुकड़े कर देते हैं। ये घोर दु:ख वेश्या सेवन का प्रतिफल हैं।

प्रश्न 13. चोरी व्यसन किसे कहते हैं?

उत्तर किसी भी व्यक्ति की भूली हुई, रखी हुई, पड़ी हुई वस्तु को उठा लेना अथवा किसी दुकान में से, मकान में से तालाब तोड़कर चोरी करना अथवा किसी को डरा-धमका कर धन-सम्पत्ति छीन लेना अथवा राजा को धोखा देना या किसी को लूट लेना इत्यादि कृत्य चोरी व्यसन कहलाता है। चोरी में अंजन चोर

प्रसिद्ध हुआ।

प्रश्न 14. चोरी करने से क्या हानि है?

उत्तर चोरी करने वाले को जब लोग पकड़ लेते हैं तो बहुत मार पीट करते हैं, पुलिस पकड़ लेती है तो वह मार पीट भी करती है तथा जुर्माना भी वसूल करती है, चोरी का समस्त सामान बरामद कर लेती है, राजा चोरों की समस्त सम्पत्ति छीनकर उन्हें देश निकाला दे देता है, चोरों को कभी सुख-शान्ति नहीं मिलती, वे सदैव भयातुर रहते हैं। उनको समाज में भी कभी मान प्रतिष्ठा प्राप्त नहीं होती है। वे चोर पुरुष चोरी के पाप से मरकर नरक आदि दुर्गति में नाना प्रकार के दु:खों को सागरों पर्यन्त काल तक भोगते हैं?

प्रश्न 15. शिकार व्यसन किसे कहते हैं?

उत्तर निरीह, दीन, दरिद्र, मूक व असहाय पशुओं को अपने मनोरंजन या मांसाहार के लिए वध करना शिकार व्यसन है। इसमें ब्रह्मदत्त चक्रवर्ती प्रसिद्ध हुआ।

प्रश्न 16. शिकार खेलने से क्या हानि होती है?

उत्तर शिकार खेलने वाला व्यक्ति तीव्र हिंसक होता है, रौद्र ध्यान करने वाला महापापी होता है, हिंसा के फल से तीव्र दु:खों को भोगना पड़ता है। शिकार खेलने वाला व्यक्ति एक दिन खुद ही शिकार बन जाता है। शिकारी नियम से दुर्गति को ही प्राप्त करता है।

प्रश्न 17. परस्त्री गमन किसे कहते हैं?

उत्तर अपनी स्त्री (परिणायी गई) के अतिरिक्त अन्य किसी भी स्त्री के साथ गलत सम्बन्ध रखना, उसके साथ कामोत्तेजक वार्तालाप, हास्य-विलास, अनंग क्रीड़ा करना या विषयों का सेवन करना परस्त्री गमन व्यसन है। इस व्यसन में रावण प्रसिद्ध हुआ, इसलिए वह नरक में गया।

प्रश्न 18. परस्त्री गमन से क्या हानि है?

उत्तर पर स्त्री गामी पुरुष या पर पुरुष गामी स्त्री समाज में निंदनीय तिरस्करणीय होते हैं ये धर्म मार्ग से बहुत दूर व पाप मार्गी होते हैं। इनका कुल, धन, यश वंश सब नष्ट हो जाता है। मित्र बन जाते हैं। ऐसे व्यक्ति मरण कर नरकादि दुर्गति के पात्र होते हैं।

अध्याय 4

''भक्ष्य-अभक्ष्य पदार्थ''

प्रश्न 1. भक्ष्य पदार्थ किसे कहते हैं?

उत्तर जो पदार्थ शुद्ध सात्विक, प्रासुक, मर्यादित, लोक व्यवहारानुकूल एवं स्वास्थ्य के अनुकूल हों उन्हें भक्ष्य पदार्थ कहते हैं।

प्रश्न 2. अभक्ष्य पदार्थ किन्हें कहते हैं?

उत्तर अशुद्ध, मादक, अमर्यादित, रोगवर्धक, तामसिक, प्रकृति विरुद्ध, आगम व लोक व्यवहार के प्रतिकूल हों, अभक्ष्य अथवा न खाने योगय पदार्थ अभक्ष्य कहलाते हैं।

प्रश्न 3. भक्ष्य पदार्थों के कुछ उदाहरण दीजिए?

उत्तर दाल, रोटी, सब्जी, फल, मेवा, घी, दूध-मट्ठा, खिचड़ी, दलिया, लस्सी, ठंडाई, शिकंजी, रस (जूस), पूड़ी, परांठे, पूए, लड्डू, बर्फी, पेड़ा, इमरती, गुजिया, मर्यादित, पापड़, कढ़ी, चावल, चटनी, उपमा, पिठौर, सकरपारे, साँख, गूँजा, कचौड़ी, पकौड़ी, मालपुए, हलुआ, खीर, सत्तू, भुने हुए चने, जौ, मटन, मौंठ, मूंग, ज्वार, घाटि, सिमरियां आदि पदार्थ भक्ष्य पदार्थ हैं, एवं आरोग्यवर्धक हैं।

प्रश्न 4. अभक्ष्य पदार्थों के कुछ उदाहरण दीजिए।

उत्तर महामद्य युक्त पदार्थ, अभक्ष्य पदार्थ, मांस, मांस से निर्मित कुछ भी पदार्थ, अंडा, शहद, अमर्यादित, नवनीत, अंग्रेजी दवायें, गांजा, भांग, चरस, अफीम, तम्बाकू, आलू, रात्रि भोजन, मर्यादा से बाहर का आहार, अचार, मुरब्बा, दाल, सब्जी, सड़े-गले,

पदार्थ, बासी भोजन, फफूंद, शैवाल, पंच उदुम्बर फल, जिमीकंद आदि पदार्थ अभक्ष्य हैं, इन्हें नहीं खाना चाहिए।

प्रश्न 5. अभक्ष्य पदार्थों के मुख्य रूप से कितने भेद हैं, नाम बताओ?

उत्तर अभक्ष्य पदार्थों के मुख्य रूप से पाँच भेद हैं। जो निम्नलिखित हैं 1. त्रस हिंसा कारक, 2. बहुस्थावर हिंसा कारक, 3. प्रमाद कारक, 4. अनिष्ट कारक, 5. अनुपसेव्य।

प्रश्न 6. त्रस हिंसा कारक अभक्ष्य किसे कहते हैं?

उत्तर जिन पदार्थों के खाने से त्रस जीवों का घात होता है, उन्हें त्रस हिंसा कारक अभक्ष्य कहते हैं।

प्रश्न 7. त्रसहिंसा कारक अभक्ष्यों को उदाहरण देकर समझाओ?

उत्तर मद्य, मांस, मधु, उदम्बर, फल, घुना, अन्न, सड़े फल, अमर्यादित पदार्थ, अचार, पापड़, सड़ी-गली वस्तुएँ, चाऊमीन, पावभाजी, गुटखा आदि पदार्थ त्रस हिंसा कारक अभक्ष्य पदार्थ कहलाते हैं।

प्रश्न 8. बहुस्थावर हिंसा कारक अभक्ष्य किसे कहते हैं?

उत्तर जिन पदार्थों के सेवन करने से बहुत से स्थावर जीवों का घात होता है वे बहुस्थावर हिंसा कारक अभक्ष्य पदार्थ हैं। जो फल अल्प हैं और जीव घात बहुत होता है वह बहु स्थावर हिंसा कारक अभक्ष्य पदार्थ कहलाते हैं।

प्रश्न 9. बहु स्थावर हिंसा कारक अभक्ष्य पदार्थों के उदाहरण बताओ?

उत्तर बहु स्थावर हिंसा कारक पदार्थ हैं आलू, अरबी, गाजर, मूली, लहसुन, प्याज, सकरकन्द, पुष्प, चाय, साधारण वनस्पति इत्यादि।

प्रश्न 10. प्रमाद कारक अभक्ष्य पदार्थ किसे कहते हैं?

उत्तर जिन पदार्थों के सेवन करने से प्रमाद या विकार भाव उत्पन्न होते हैं वे पदार्थ कारक अभक्ष्य पदार्थ हैं, अथवा नशीले एवं मदोत्पन्न करने वाले सभी पदार्थ प्रमाद कारक अभक्ष्य पदार्थ

कहलाते हैं।

प्रश्न 11. प्रमाद कारक, अभक्ष्य पदार्थों के उदाहरण बताओ?

उत्तर बीड़ी, चरस, सिगरेट, चिलम, हुक्का पीना, तम्बाकू, भांग, गांजा, अफीम, आदि का सेवन या शराब, बीयर, हेरोइन, स्मैक, रम, देशी शराब, दारू, इंगलिश शराब, इत्यादि प्रमाद कारक अभक्ष्य पदार्थ ही कहलाते हैं।

प्रश्न 12. अनिष्ट कारक अभक्ष्य पदार्थ किसे कहते हैं?

उत्तर जो पदार्थ भक्ष्य होने पर भी प्रकृति व स्वास्थ्य के विपरीत हों, रोगवर्धक हों, वे पदार्थ अनिष्ट कारक पदार्थ कहलाते हैं।

प्रश्न 13. अनिष्ट कारक अभक्ष्य पदार्थों के उदाहरण बताओ?

उत्तर ज्वर के रोगी को हलवा, मधुमेह के रोगी को मीठे पदार्थ, शीत के रोगी को लस्सी दही, ठंडाई आदि, हृदय के रोगी को घी, तेल, आदि से निर्मित तले पदार्थ, उच्च रक्त चाप के रोगी को नमक व गरिष्ठ भोजन, पीलिया के रोगी को घी, दूध आदि पदार्थ अनिष्ट कारक पदार्थ ही कहलाते हैं।

प्रश्न 14. अनुपसेव्य अभक्ष्य पदार्थ किसे कहते हैं?

उत्तर जो पदार्थ कभी सेवन करने योग्य नहीं हों जिनका सेवन लोक निंद्य, विकार वर्द्धक, पाप प्रवर्तक हो तामसिकता को पैदा करने वाला हो व बुद्धि को नष्ट (क्षीण) करने वाले हों ऐसे पदार्थ अनुपसेव्य पदार्थ कहलाते हैं।

प्रश्न 15. अनुपसेव्य अभक्ष्य पदार्थों के उदाहरण बताओ?

उत्तर गोबर, गो मूत्र, लार, कफ, रज, वीर्य, पसीना, मवाद, मनुष्य या तिर्यंच के शरीर से उत्पन्न मल रूप पदार्थ अनुपसेव्य अभक्ष्य होते हैं।

प्रश्न 16. उपरोक्त पाँच प्रकार के अभक्ष्य पदार्थों के अतिरिक्त क्या अन्य भी अभक्ष्य पदार्थ हैं।

उत्तर उपरोक्त पाँच प्रकार के अभक्ष्य पदार्थों के अतिरिक्त कुछ पदार्थ द्रव्य क्षेत्र काल भाव की अपेक्षा भी अभक्ष्य होते हैं। बुद्धिमान

जनों को इन्कार भी त्याग करना चाहिए।

प्रश्न 17. द्रव्य क्षेत्र काल भाव की अपेक्षा पदार्थ अभक्ष्य कैसे होते हैं, उदाहरण सहित बताओ?

उत्तर **द्रव्यगत अभक्ष्य पदार्थ** अशुद्ध पदार्थ या व्यक्ति से संसर्गित शुद्ध वस्तु भी अभक्ष्य होती है, जैसे चमड़े से संसक्त जल-आदि, मांसाहारी होटल के खाद्य पदार्थ, मांसाहारी पशुओं द्वारा स्पर्शित या जूठे पदार्थ्ज्ञ, शौच करते हुए व्यक्ति द्वारा दिया गया शुद्ध भोजन भी द्रव्यगत अभक्ष्य पदार्थ है।

क्षेत्रगत अभक्ष्य पदार्थ जो पदार्थ पूर्वी क्षेत्र में भक्ष्य हैं वही उत्तर या पश्चिम क्षेत्र में अभक्ष्य मानते हैं, जैसे लोकी दक्षिण में अभक्ष्य हैं लेकिन उत्तर में भक्ष्य, कटहल दक्षिण में भक्ष्य है किन्तु उत्तर में अभक्ष्य होता है।

कालगत अभक्ष्य पदार्थ तरबूज, टमाटर, पपीता, लीची, आम, कढ़ी आदि पदार्थ भक्ष्य होने पर भी किसी के लिए भावों में विकृति के कारण अभक्ष्य भी हो सकते हैं।

प्रश्न 18. बाईस प्रकार के अभक्ष्य पदार्थ कौन-कौन से हैं?

उत्तर ओला, घोरबड़ा, निशि भोजन, बहुबीजा बैंगन संधान।
बड़, पीपल, ऊमर, कठूमर, पाकर, फल जो होय अजान।।
कंद-मूल, माटी, विष, आमिष, मधु माखन, अरु मदिरापान।
फल अति तुच्छ, तुषार, चलित रस, जिनमत ये बाईस अखान।

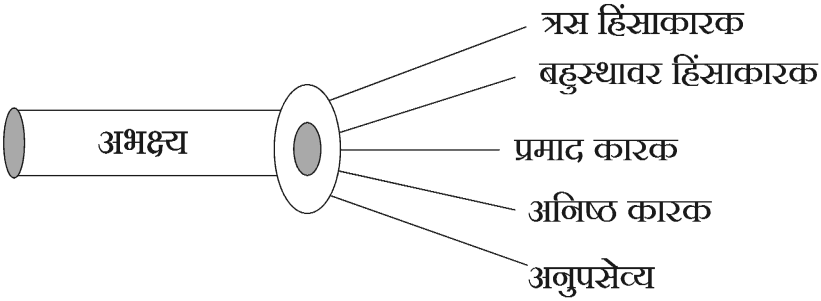

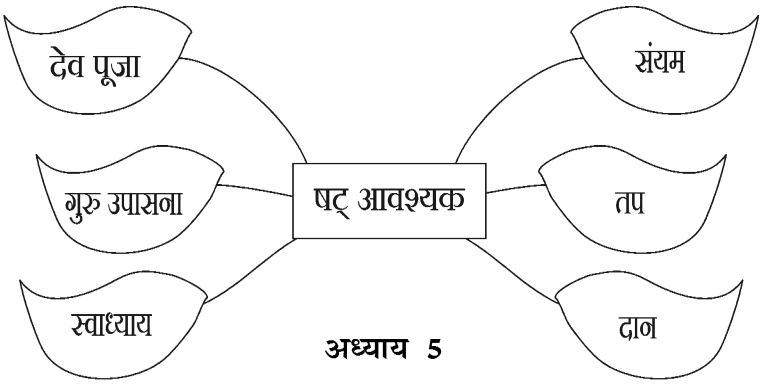

अध्याय 5

''श्रावक के षट आवश्यक कर्त्तव्य''

प्रश्न 1. आवश्यक कर्तव्य किसे कहते हैं?

उत्तर अवश्य करने योग्य कार्य ही आवश्यक कर्तव्य कहलाते हैं। श्रावक के भी छह आवश्यक कर्तव्य होते हैं, और मुनिराजों के भी छह आवश्यक कर्तव्य होते हैं।

प्रश्न 2. श्रावक के छह आवश्यक कर्तव्य कौन-कौन से हैं?

उत्तर श्रावक के छह आवश्यक कर्तव्य निम्नांकित हैं

1. देव पूजा, 2. गुरु उपासना, 3. स्वाध्याय, 4. संयम, 5. तप, 6. दान।

प्रश्न 3. देव पूजा किसे कहते हैं?

उत्तर वीतरागी, सर्वज्ञ, हितोपदेशी, जिनेन्द्र, भगवान की (अरिहन्त परमेष्ठी व सिद्ध परमेष्ठी की) पूजा करना देव पूजा कहलाती है। पूजा का अर्थ है जिनेन्द्र भगवान के गुणों को प्राप्त करने की भावना से उनकी जलादि अष्ट द्रव्य से पूजा करना।

प्रश्न 4. जलादि अष्ट द्रव्य कौन-कौन से हैं नाम बताओ?

उत्तर 1. जल, 2. चन्दन, 3. अक्षत, 4. पुष्प 5. नैवेद्य, 6. दीप, 7. धूप, 8. फल।

प्रश्न 5. पूजा के नव अंग कौन-कौन से होते हैं?

उत्तर 1. अभिषेक, 2. आह्वाहन, 3. पुष्प, 4. सन्निधिकरण, 5. अष्ट द्रव्य से पूजा, 6. जाप, 7. जयमाल, 8. शान्ति पाठ, 8. विसर्जन पाठ।

प्रश्न 6. गुरु उपासना किसे कहते हैं?

उत्तर आचार्य उपाध्याय व साधु परमेष्ठी की सेवा, वैय्यावृत्ति, आज्ञा पालन आदि करना गुरु उपासना है। अर्थात उनकी साधना में किसी भी प्रकार से सहयोगी बनना तथा गुणों को प्राप्त करने की भावना से पूजा स्तुति, भक्ति, वंदन आदि करना।

प्रश्न 7. सच्चे गुरु कौन होते हैं?

उत्तर जो यथाजात दिगम्बर हों, पिच्छी, कमण्डलु और शास्त्रादि उपकरणों के अतिरिक्त समस्त परिग्रह के त्यागी हों, सिर, दाढ़ी व मूँछ के का केशलोंच करते हैं, एक बार दिन में शुद्ध प्रासुक आहार लेते हों, सदैव जिन वंदना आदि के निमित्त पैदल विहार करते हों, तथा जो विषय कषाय आरम्भ, परिग्रह से रहित हों, सदैव ज्ञान ध्यान व तप में लीन रहते हैं, वे ही सच्चे गुरु होते हैं।

प्रश्न 8. स्वाध्याय किसे कहते हैं?

उत्तर आत्म कल्याण के उद्देश्य से जिनेन्द्र देव द्वारा उपदिष्ट, गणधर परमेष्ठी द्वारा संग्रहीत व मुनिराजों द्वारा लिपिबद्ध शास्त्रों का अध्ययन व अध्यापन करना स्वाध्याय कहलाता है।

प्रश्न 9. स्वाध्याय के कितने व कौन-कौन से भेद हैं, नाम बताओ?

उत्तर स्वाध्याय के मुख्य पाँच भेद हैं, जो निम्नलिखित हैं

1. वाचना, 2. पृच्छला, 3. अनुप्रेक्षा, 4. आम्नाय, 5. धर्मोपदेश।

प्रश्न 10. स्वाध्याय के उक्त पाँचों भेदों की संक्षिप्त परिभाषाएँ लिखो?

उत्तर **1. वाचना** सच्चे शास्त्रों का आत्म कल्याण के उद्देश्य से पढ़ना वाचना नाम का स्वाध्याय कहलाता है।

2. पृच्छना शास्त्रों को पढ़ने के उपरांत जो जिज्ञासाएँ उत्पन्न हों उनके समाधानार्थ पूज्य गुरुदेव आदि से विनयपूर्वक उत्तर (समाधान) प्राप्त करना पृच्छना नाम का स्वाध्याय कहलाता है।

3. अनुप्रेक्षा शास्त्रों को पढ़ने व जिज्ञासाओं का समाधान प्राप्त कर लेने के उपरान्त उसका बार-बार चिन्तवन करना अनुप्रेक्षा स्वाध्याय है।

4. आम्नाय शास्त्रों से पठित, गुरुदेव से समाधित एवं स्वयं में अनुचिन्तित व समझे हुए विषयों को कण्ठस्थ करना आम्नाय स्वाध्याय है।

5. धर्मोपदेश शास्त्रों में निहित उपदेश को स्व पर कल्याण के उद्देश्य से भव्य श्रोताओं को सुनाना धर्मोपदेश नामक स्वाध्याय है।

प्रश्न 11. स्वाध्याय का प्रत्यक्ष व परोक्ष फल क्या है?

उत्तर स्वाध्याय का प्रत्यक्ष फल है अज्ञान की निवृत्ति, सम्यकज्ञान की प्राप्ति, विषय-कषायों की मन्दता, वैराग्य, संयम के लिए सुयोग्यता व सच्चे सुख-शांति की प्राप्ति है, तथा परम्परागत या परोक्ष फल आत्म स्वभाव की, केवलज्ञानादि गुणों की प्राप्ति है।

प्रश्न 12. संयम के कितने व कौन-कौन से भेद हैं?

उत्तर संयम के मुख्य दो भेद हैं, जो इस प्रकार हैं

1. इन्द्रिय संयम, 2. प्राणी संयम

इन दोनों संयमों के भी आचार्यों व भगवंतों ने छः-छः भेद कहे हैं।

प्रश्न 13. इन्द्रिय संयम व प्राणी संयम के छः भेद कौन-कौन से हैं?

उत्तर इन्द्रिय संयम के छः भेद पाँचों इन्द्रियों और मन को अपने वश में रखना।

प्राणी संयम के छः भेद पाँच स्थावर और त्रस जीवों की रक्षा करना।

प्रश्न 14. तप किसे कहते हैं?

उत्तर इच्छाओं का निरोध करना, इन्द्रियों का निग्रह करना, विषय-कषायों का त्याग करना ही तप है। तप ही मुक्ति का कारण है, दिगम्बर दीक्षा लेना भी तप है। ये बारह प्रकार के तप मुनिराजों के ही होते हैं, श्रावकों के नहीं।

प्रश्न 15. तप के कौन-कौन से भेद हैं?

उत्तर तप के दो भेद हैं, जो इस प्रकार हैं

1. बाह्य तप, 2. आभ्यंतर तप

इसमें प्रत्येक तप के छः-छः भेद होते हैं।

प्रश्न 16. बाह्य तप और आभ्यंतर तप किसे कहते हैं, उनके कुलभेदों को बताओ?

उत्तर जो बाह्य/बाहर से देखने में आये या जिसे दिखाया जा सके वह बाह्य तप है यद्यपि यह भी परिणाम विशुद्धि व कर्म क्षय का कारण होता है।

बाह्य तप छः होते हैं 1. अनशन, 2. ऊनोदर, 3. वृत्तिपरिसंख्यान, 4. रस परित्याग, 5. विविक्त शय्यासन, 6. काय क्लेश।

आभ्यंतर तप वह है जो अंतरंग में किया जाता है, जो न तो बाहर में दिखे, न दिखाया जा सके, जिसमें आत्मा के परिणामों की ही मुख्यता होती है। किन्तु ये तप बाह्य तप के बिना असम्भव होते हैं। 1. प्रायश्चित, 2. विनय, 3. वैय्यावृत्ति, 4. स्वाध्याय, 5. कायोत्सर्ग, 6. ध्यान, ये अंतरंग तप हैं।

श्रावक उक्त तपों की भावना भाता है तथा इच्छाओं को कम करता है, पर्वों में यथाशक्ति तप भी करता है।

प्रश्न 17. दान किसे कहते हैं?

उत्तर स्व पर हितार्थ अपने न्यायोपार्जित धन से आहारादि का दान देना अथवा सप्त पुण्य क्षेत्रों में दान देना, दान कहलताा है।

प्रश्न 18. दान के कितने व कौन-कौन से भेद हैं, तथा सप्त पुण्य क्षेत्र कौन से हैं?

उत्तर दान के मुख्य रूप से चार भेद हैं, जो इस प्रकार हैं

1. आहार दान, 2. औषधि दान, 3. ज्ञान दान, 4. अभय दान या आवास दान।

सप्त पुण्य क्षेत्र हैं 1. जिनबिम्ब हेतु दान, 2. जिनालय हेतु दान, 3. चतुर्विध संघ की यात्रा हेतु दान, 4. धर्मानुष्ठान हेतु दान, 5. जिन शास्त्रों के प्रकाशन हेतु दान, 6. धर्म प्रभावना हेतु दान, 7. जीव मात्र की रक्षा हेतु करुणा दान।

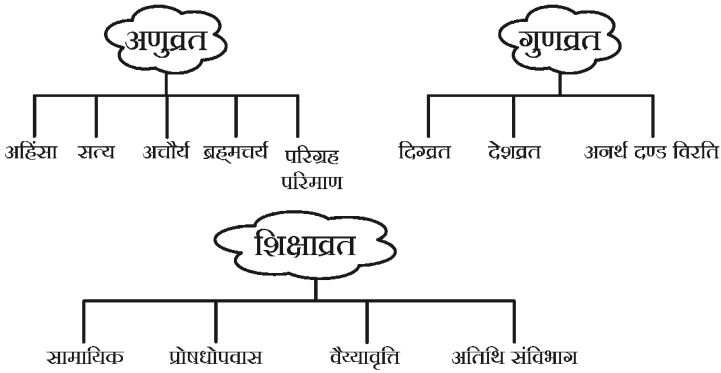

अध्याय 6

"श्रावक के बारह व्रत"

प्रश्न 1. व्रत किसे कहते हैं?

उत्तर हिंसा, झूठ, चोरी, कुशील, परिग्रह इन पाँच पापों का त्याग करना व्रत कहलाता है।

प्रश्न 2. व्रत के मुख्य रूप से कितने भेद हैं?

उत्तर व्रत के मुख्य रूप से दो भेद हैं 1. महाव्रत/सकल व्रत, 2. देश व्रत/अणुव्रत।

प्रश्न 3. महाव्रत किसे कहते हैं?

उत्तर हिंसा आदि समस्त पापों का मन, वचन, काय व कृत कारित, अनुमोदना से पूर्णतः त्याग करना महाव्रत कहलाता है।

प्रश्न 4. अणुव्रत किसे कहते हैं?

उत्तर हिंसादि पाँच पापों का एक देश त्याग करना अणुव्रत कहलाता है अथवा स्थूल पापों का त्याग करना अणुव्रत या देशव्रत कहलाता है। अणुव्रतों के पाँच भेद होते हैं 1. अहिंसाणु व्रत, 2. सत्याणु व्रत, 3. अचौर्याणु व्रत, 4. ब्रह्मचर्याणु व्रत, 5. परिग्रह परिमाणाणु व्रत।

इनके अतिरिक्त श्रावक के चार शिक्षा व्रत व तीन गुण व्रत ये सात शील व्रत भी होते हैं।

प्रश्न 5. अहिंसाणु व्रत किसे कहते हैं? तथा इसमें कौन प्रसिद्ध हुआ था?

उत्तर मन, वचन, काय व कृत, कारित, अनुमोदना से हिंसा का एक देश त्याग करना अर्थात् त्रस जीवों के घात से पूर्ण विरक्त व स्थावर जीवों को हिंसा का यथा शक्य त्याग अहिंसाणु व्रत कहलाता है। अहिंसाणु व्रत में यमपाल चाण्डाल प्रसिद्धि को प्राप्त हुआ।

प्रश्न 6. सत्याणु व्रत किसे कहते हैं, इसमें कौन प्रसिद्ध हुआ था?

उत्तर ऐसा कोई सत्य नहीं बोलना चाहिए जिससे किसी के प्राण चले जायें या कोई बन्धन को प्राप्त हो जाये तथा ऐसा झूठ भी नहीं बोलना हो हिंसा आदि का कारण हो, वह सत्याणु व्रत कहलाता है, सत्याणु व्रत में धनदेय नामक सेठ प्रसिद्ध हुआ था।

प्रश्न 7. अचौर्याणु व्रत किसे कहते हैं, इस व्रत में कौन प्रसिद्ध हुआ?

उत्तर किसी की भूली हुई, पड़ी हुई या रखी हुई वस्तु को, उस वस्तु के स्वामी की आशा के बिना नहीं लेना अचौर्याणु व्रत है, अथवा जिन वस्तुओं पर सर्व सामान्य जीवों का अधिकार है ऐसी वस्तुएँ हैं जल, मिट्टी, हवा, आकाश, वनस्पति, चन्द्रमा की चाँदनी, सूर्य का प्रकाश आदि वस्तुओं को छोड़कर, पर स्वामित्व की वस्तु स्वामी की आज्ञा के बिना ग्रहण नहीं करना अचौर्याणु व्रत है। इस व्रत में वारिषेण राजकुमार प्रसिद्ध हुए।

प्रश्न 8. ब्रह्मचर्याणु व्रत किसे कहते हैं, तथा इस व्रत में कौन प्रसिद्ध हुआ?

उत्तर स्वकीय स्त्री या अपने पति के अतिरिक्त शेष सभी स्त्रियों को माँ बहन व पुत्री सम पुरुषों द्वारा मानना तथा पिता, भाई, पुत्रसम, स्त्रियों द्वारा मानना तथा संकल्प पूर्वक पर स्त्री व पर पुरुष का त्याग करना ब्रह्मचर्य अणुव्रत है। ब्रह्मचर्याणु व्रत में नीली नामक श्रेष्ठी कन्या सुप्रसिद्ध हुई।

प्रश्न 9. परिग्रह परिमाण अणुव्रत किसे कहते हैं, इसमें कौन प्रसिद्ध हुआ?

उत्तर क्षेत्र, वास्तु, स्वर्ण आदि दस प्रकार के पदार्थों की मर्यादा बाँध

लेना परिग्रह परिमाण नामक अणुव्रत कहलाता है। इस व्रत में जय कुमार श्रेष्ठी प्रसिद्ध हुआ।

प्रश्न 10. सामायिक व्रत किसे कहते हैं?

उत्तर नियत काल (2 घड़ी, 4 घड़ी, 6 घड़ी) के लिए हिंसा आदि पाँच पापों का मन, वचन, काय से त्याग करना, आर्त व रौद्र ध्यान करके धर्म ध्यान में संलग्न रहना ही सामायिक व्रत है।

प्रश्न 11. प्रौषधोपवास व्रत किसे कहते हैं?

उत्तर प्रत्येक पक्ष की अष्टमी और चतुर्दशी के दिन सर्व आरम्भ-परिग्रह का यथा शक्य सावद्य कार्यों का परित्याग करते हुए सोलह पहर तक चारों प्रकार के आहार जल का त्याग करना अर्थात दो एकासन के बीच एक उपवास करना (सप्तमी नवमी को एकासन तथा अष्टमी का उपवास, त्रयोदशी व पूर्णिमा-अमावस्या को एकासन करते हुए चतुर्दशी को उपवास करना) प्रोषधोपवास व्रत है।

प्रश्न 12. यदि किसी की शक्ति 16 पहर तक अन्न, जल त्याग करने की नहीं है, तो वह व्रती श्रावक क्या करे?

उत्तर यदि सोलह पहर तक आहार जल त्यागने की सामर्थ्य नहीं है तो वह श्रावक आठ पहर का आहार त्याग दे अर्थात् सप्तमी व नवमी को दो बार भोजन व अष्टमी को उपवास करे। यदि इतनी शक्ति भी न हो तो सप्तमी, अष्टमी नवमी तीनों दिन ही एकासन करे। इतनी शक्ति भी न हो तो अष्टमी को एकासन करे व शाम को भोजन ग्रहण न करे। यइि इतनी शक्ति भी न हो तो रस परित्याग करके भोजन ले। जैसी विधि अष्टमी पर्व के लिए लिखी है वैसी ही चतुर्दशी पर्व के लिए करे। विशेष बात यह है कि अपनी शक्ति के अनुसार व्रत आदि करें, शक्ति को छुपाये व दबायें नहीं तथा शक्ति से ज्यादा करने का भी दु:साहस न करे, अन्यथा विशुद्धि के स्थान पर संक्लेशता ही बनेगी।

प्रश्न 13. वैय्यावृत्ति व्रत किसे कहते हैं?

उत्तर आचार्य, उपाध्याय, साधु, आदि परमेष्ठियों की साधना में आहार आदि दाना देकर या शरीर आदि की सेवा करके सहयोगी, बनना वैय्यावृत्ति कहलाता है।

प्रश्न 14. अतिथि संविभाग व्रत किसे कहते हैं?

उत्तर अतिथियों को आहार आदि दान देकर ही भोजन करना, अपने न्यायोपार्जित धन में से अतिथियों के लिए भी निकाल कर रखना, यही अतिथि संविभाग व्रत है। अतिथि साधु जनों को कहते हैं, क्योंकि आने-जाने की उनकी कोई तिथि नियत नहीं होती। वे कभी भी आ सकते हैं और कभी भी विहार कर सकते हैं।

प्रश्न 15. दिग्व्रत किसे कहते हैं?

उत्तर दशों दिशाओं में आने-जाने के लिए जीवन पर्यंत के लिए मर्यादा कर लेना दिग्व्रत है। इस व्रत को लेते समय प्रसिद्ध नगरों, पर्वतों, नदियों, सागरों की मर्यादा ले लें कि हम उस नगर, पर्वत, नदी, सागर के आगे नहीं जायेंगे या अमुक-अमुक देश के आगे नहीं जायेंगे।

प्रश्न 16. देशव्रत किसे कहते हैं?

उत्तर वर्ष, माह, पक्ष, सप्ताह, दिन या घड़ी घण्टा के लिए आने-जाने की मर्यादा कर लेना। यह मर्यादा दिग्व्रत की मर्यादा से बहुत कम होती है, ऐसी मर्यादा करने के लिए श्रावक बाहर के सूक्ष्म व स्थूल सभी पापों से बच सकता है।

प्रश्न 17. अनर्थ दण्ड विरति व्रत किसे कहते हैं?

उत्तर जिन कार्यों को करने से हिंसा आदि पाप हों तथा वे कार्य प्रयोजन भूत भी नहीं है, उनका त्याग करना ही अनर्थदण्डव्रत या अनर्थ दण्ड विरति व्रत होता है। ये मुख्य रूप से पाँच प्रकार के होते हैं, जो इस प्रकार हैं 1. हिंसा दान, 2. पापोदेश 3. दुःश्रुति, 4. प्रमाद चर्या, 5. अपध्यान।

प्रश्न 18. श्रावक को अन्त में सल्लेखना व्रत का पालन करना भी आवश्यक है, उस सल्लेखना व्रत का क्या आशय है?

उत्तर जब श्रावक अपनी मृत्यु को निकट समझता है तब विधिपूर्वक समाधि मरण स्वीकार करता है। सल्लेखना पूर्वक किया हुआ मरण ही समाधि मरण है। सल्लेखना का अर्थ है कषाय और काय को कृष करना। जिसका प्रतिकार नहीं किया जा सके ऐसा उपसर्ग आने पर, दुर्भिक्ष पड़ जाने पर, बुढ़ापा आ जाने पर, अत्यन्त तीव्र रोग हो जाने पर, सल्लेखना ग्रहण करना, समता पूर्वक शरीर का परित्याग करना।

अध्याय 7

''सोलह कारण भावना''

प्रश्न 1. सोलहकारण भावना किसे कहते हैं?

उत्तर तीर्थंकर प्रकृति के बंध में कारण भूत भावनाओं को ही सोलह कारण भावना कहते हैं। दर्शन विशुद्धि आदि सोलह भावनाओं के बिना तीर्थंकर प्रकृति का बंध नहीं होता है।

प्रश्न 2. तीर्थंकर प्रकृति में कारण भूत सोलह कारण भावनायें कौन-कौन सी हैं, नाम बताओ?

उत्तर 1. दर्शन विशुद्धि, 2. विनय सम्पन्नता, 3. अनितिचार शीलव्रत, 4. अभीक्ष्ण ज्ञानोपयोग, 5. संवेग, 6. शक्तितस्त्याग, 7. शक्तिशः तप, 8. साधु समाधि, 9. वैय्यावृत्ति, 10. अर्हंत भक्ति, 11. बहुश्रुतवंत (उपाध्याय) भक्ति, 12. आचार्य भक्ति, 13. प्रवचन भक्ति/साधु भक्ति, 14. षट् आवश्यक कर्तव्य पालन, 15. मार्ग प्रभावना, 16. प्रवचन वात्सल्य। ये सोलह कर्तव्य व भावना ही तीर्थंकर प्रकृति के बंध में कारण है।

प्रश्न 3. दर्शन विशुद्धि भावना का क्या अर्थ है?

उत्तर सम्यक् दर्शन का आठ अंग व अष्ट गुण सहित, पच्चीस मलदोष व सर्व अतिचार रहित पालन करना दर्शन विशुद्धि भावना है।

प्रश्न 4. विनय सम्पन्नता भावना किसे कहते हैं?

उत्तर सम्यक् दर्शन, ज्ञान, चारित्र, तप के धारक आचार्य, उपाध्याय, साधु आदि त्यागी-व्रतियों की विनय करना व अपने से बड़ों की भी मन, वचन, काय से विनय करना विनय सम्पन्नता भावना है।

प्रश्न 5. अनतिचार शील व्रत भावना किसे कहते हैं?

उत्तर सर्व अतिचारों से रहित शील अर्थात् ब्रह्मचर्य व्रत का निर्दोष पालन करना अथवा ब्रह्म स्वरूपी आत्मा में लीन रहने की भावना अनतिचार शीलव्रत भावना है।

प्रश्न 6. अभीक्ष्ण ज्ञानोपयोग भावना किसे कहते हैं?

उत्तर निरन्तर सम्यक् ज्ञान के अध्ययन-अध्यापन, वाचना, पृच्छना, आम्नाय, अनुप्रेक्षा व धर्मोपदेश में संलग्न रहना ही अभीक्ष्ण ज्ञानोपयोग भावना है।

प्रश्न 7. संवेग भावना किसे कहते हैं?

उत्तर संसार के बढ़ाने वाले (भववर्धक) कार्यों से भयभीत रहना, तथा धर्मात्मा व धर्म के फलों में अनुरक्त रहना व इन्हें देखकर हर्षित होना संवेग कहते हैं?

प्रश्न 8. शक्तिशः त्याग भावना किसे कहते हैं?

उत्तर सत्पात्रों को आहार, औषधि, ज्ञान व वसतिका (अभय) दान देना व देने की निरन्तर भावना रखना ही शक्तिशः त्याग भागवना है।

प्रश्न 9. शक्तिशः तप भावना किसे कहते हैं?

उत्तर अपनी शक्ति को न छुपाते हुए अनशन आदि बारह प्रकार के तप करना तथा उग्रोग्र तप की भावना रखना शक्तिशः तप भावना है।

प्रश्न 10. साधु समाधि भावना किसे कहते हैं?

उत्तर समता भाव से युक्त मरण हो ऐसी भावना स्वपर के लिए भाना, तथा सल्लेखना में संलग्न साधु-पुरुषों की साधना में सहायक बनना ही साधु समाधि भावना है।

प्रश्न 11. वैय्यावृत्ति भावना किसे कहते हैं?

उत्तर आचार्य, उपाध्याय आदि दस प्रकार के दिगम्बर साधुओं की साधना में शरीरादि की सेवा करके सहयोगी बनना व उनकी साधना में सहायक बनने की सदैव भावना रखना वैय्यावृत्ति भावना है।

प्रश्न 12. अर्हंत भक्ति भावना किसे कहते हैं?

उत्तर वीतरागी, सर्वज्ञ व परम हितोपदेशी जिनेन्द्र प्रभु/अर्हंत परमेष्ठी की, गुणों में अनुराग रखते हुए गुणानुवाद करना अर्हंत भक्ति है, ऐसी भक्ति की भावना सदैव रखना अर्हंत भक्ति भावना है।

प्रश्न 13. आचार्य भक्ति भावना किसे कहते हैं?

उत्तर पंचाचारों का पालन करने वाले व अपने शिष्यों से पालन कराने वाले चतुर्विध (मुनि), आर्यिका श्रावक, श्राविका) संघ के नायक आचार्य परमेष्ठी की सेवा भक्ति करना व भावना रखना,, आचार्य भक्ति भावना है।

प्रश्न 14. बहुश्रुत भक्ति भावना किसे कहते हैं?

उत्तर जो मुनिराज स्वयं अध्ययन करते हैं, अपने शिष्यों को अध्ययन कराते हैं तथा निरन्तर धर्मोपदेश में संलग्न रहते हैं, उन उपाध्याय परमेष्ठी की भक्ति करना, बहुश्रुतबंध भक्ति भावना है।

प्रश्न 15. प्रवचन भक्ति भावना किसे कहते हैं?

उत्तर जिनेन्द्र भगवान, द्वारा प्रणीत, गणधर भगवन्तों द्वारा संग्रहीत, मुनिराजों द्वारा लिपिबद्ध आगम ग्रन्थों की भक्ति करना, उसके प्रति रुचि रखना, प्रवचन, भक्ति भावना है, अथवा रत्नत्रय के धारक, मोक्षमार्ग के पथिक मुनिराजों की भक्ति करना भी प्रवचन भक्ति भावना है।

प्रश्न 16. आवश्यकापरिहाणि भावना किसे कहते हैं?

उत्तर मुनिराजों के षट् आवश्यक कर्तव्य होते हैं और श्रावकों के भी षट् आवश्यक कर्तव्य होते हैं। अपने पद के अनुसार षट् आवश्यक कर्तव्यों का पालन करना, उसमें कोई कमी नहीं करना, आवश्यकापरिहाणि भावना है।

प्रश्न 17. मार्ग प्रभावना नामक भावना का क्या अभिप्राय है?

उत्तर संसार में व्याप्त अज्ञान रूपी अंधकार को दूर करने के लिए, भव सागर में पतित संसारी जीवों को सम्यक् राह बताने हेतु, सदैव ज्ञान, ध्यान, तप, दान, पूजा व धार्मिक अनुष्ठान व

महोत्सवों के द्वारा जिन धर्म से स्व-पर को प्रभावित करना धर्म प्रभावना है, अथवा रत्नत्रय रूप मोक्ष मार्ग की प्रभावना करना ही मार्ग प्रभावना नामक भावना है।

प्रश्न 18. प्रवचन वत्सलत्व भावना किसे कहते हैं?

उत्तर रत्नत्रय की साधना करने वाले साधुओं के प्रति व साधर्मी बंधुओं के प्रति निश्चल व निश्छल प्रेम करना (जैसा गाय का बछड़े के प्रति होता है) जिसमें गुण ग्राहकता हो, स्वार्थ की गंध न हो, यही प्रवचन वत्सलत्व भावना है।

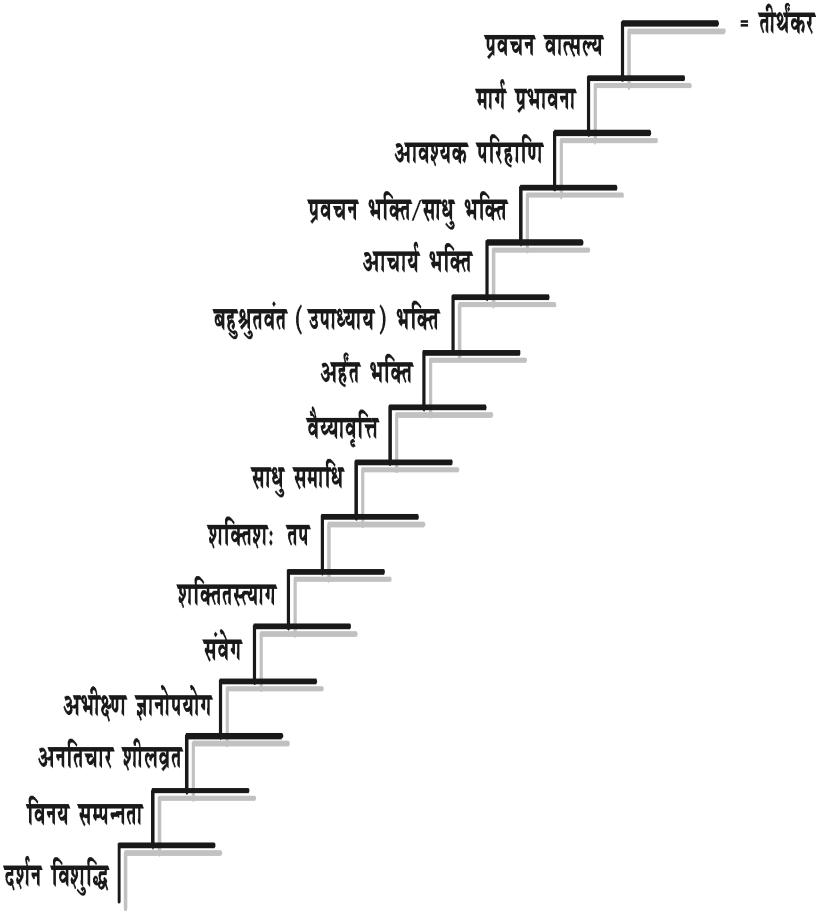

अध्याय 8

''भगवान चन्द्र प्रभ स्वामी''

प्रश्न 1. अष्टम तीर्थंकर भगवान चन्द्रप्रभ स्वामी के माता-पिता का क्या नाम था?

उत्तर माता का नाम श्रीमती महारानी लक्ष्मणा व पिता का नाम श्रीमान् महाराज महासेन था।

प्रश्न 2. भगवान चन्द्रप्रभ स्वामी का चिह्न व शरीर का वर्ण बताओ?

उत्तर भगवान चन्द्रप्रभ स्वामी का चिह्न अर्द्ध चन्द्र व शरीर का वर्ण धवल था।

प्रश्न 3. भगवान चन्द्रप्रभ स्वामी के शरीर की ऊँचाई और आयु कितनी थी?

उत्तर भगवान चन्द्र प्रभ स्वामी की आयु 10 लाख वर्ष पूर्व थी और शरीर की ऊँचाई 150 धनुष (600 हाथ) थी।

प्रश्न 4. भगवान चन्द्रप्रभ स्वामी के गर्भ व जन्म कल्याणक की कौन-सी तिथि व नक्षत्र था?

उत्तर भगवान चन्द्रप्रभ स्वामी के गर्भ कल्याणक चैत्र कृष्ण पंचमी तथा जन्म कल्याणक पौष कृष्ण एकादशी तथा अनुराधा नक्षत्र था।

प्रश्न 5. भगवान चन्द्रप्रभ स्वामी की दीक्षा की तिथि व नक्षत्र कौन-सा था?

उत्तर भगवान चन्द्रप्रभ स्वामी की दीक्षा की तिथि पौष कृष्णा एकादशी (11) थी तथा नक्षत्र अनुराधा था।

प्रश्न 6. भगवान चन्द्रप्रभ स्वामी को केवल ज्ञान किस तिथि व नक्षत्र में हुआ?

उत्तर भगवान चन्द्रप्रभ स्वामी को केवल ज्ञान फाल्गुन कृष्णा सप्तमी (7) को अनुराधा नक्षत्र में ही हुआ था।

प्रश्न 7. भगवान चन्द्रप्रभ स्वामी को निर्वाण कब और कहाँ से हुआ?

उत्तर भगवान चन्द्रप्रभ स्वामी को निर्वाण फाल्गुन शुक्ला सप्तमी (7) को सम्मेद शिखर जी के ललितप्रभ कूट से हुआ।

प्रश्न 8. भगवान चन्द्र प्रभ स्वामी को वैराग्य किस निमित्त से हुआ?

उत्तर भगवान चन्द्र प्रभ स्वामी को वैराग्य वसंत ऋतु में पतझड़ देखकर अथवा धर्मरुचि देव का कौतुक देखकर वैराग्य हुआ।

प्रश्न 9. भगवान चन्द्रप्रभ स्वामी ने किस वन में किस वृक्ष के नीचे कितने राजाओं के दिगम्बर दीक्षा ग्रहण की?

उत्तर भगवान चन्द्रप्रभ स्वामी ने दिगम्बर जिन दीक्षा सर्वार्थ (सर्वऋतुक) वन में नाग वृक्ष के नीचे एक हजार राजाओं के साथ सिद्धों की साक्षी में ग्रहण की।

प्रश्न 10. भगवान चन्द्रप्रभ स्वामी का छद्मस्थ काल कितना रहा?

उत्तर भगवान चन्द्रप्रभ स्वामी का छद्मस्थ काल 3 माह रहा, अर्थात् दीक्षा लेने के उपरांत तीन महीने तक केवलज्ञान प्राप्त नहीं हुआ। दीक्षा काल से केवल ज्ञान प्राप्ति तक के काल को छद्मस्थ काल कहते हैं।

प्रश्न 11. भगवान चन्द्रप्रभ स्वामी के यक्ष-यक्षिणी का क्या नाम था?

उत्तर भगवान चन्द्रप्रभ स्वामी के यक्ष का नाम अजित था और यक्षिणी का नाम मनोवेगा (ज्वलामालिनी) था।

प्रश्न 12. भगवान चन्द्रप्रभ स्वामी के समवशरण में कुल गणधर, मुनियों व आर्यिकाओं की कितनी संख्या थी?

उत्तर भगवान चन्द्र प्रभ स्वामी के समवशरण में तेरानवे (93) गणधर परमेष्ठी, एवं तीन लाख अस्सी हजार (3,80,000) आर्यिकाओं तथा दो लाख पचास हजार (2,50,000) मुनिराज थे।

प्रश्न 13. भगवान चन्द्रप्रभ स्वामी के समवशरण में मुख्य गणधर, मुख्य श्रोता व मुख्य आर्यिका कौन थी? इनके नाम बताओ?

उत्तर भगवान चन्द्रप्रभ स्वामी के समवशरण में मुख्य गणधर वैदर्य अथवा दत्तक) दत्त) थे। मुख्य श्रोता मघवा नामक चक्रवर्ती थे तथा मुख्य आर्यिका वरुणा थीं।

प्रश्न 14. भगवान चन्द्रप्रभ स्वामी का प्रथम आहार किस राजा के यहाँ हुआ?

उत्तर भगवान चन्द्र प्रभ स्वामी का प्रथम आहार पुष्प मित्र (सोमदत्त) राजा के यहाँ हुआ था।

प्रश्न 15. भगवान चन्द्रप्रभ स्वामी के समवशरण में कितने श्रावक/श्राविकायें, देव-देवियाँ व तिर्यंच थे।

उत्तर भगवान चन्द्रप्रभ स्वामी के समवशरण में दो लाख श्रावक, पाँच लाख श्राविकायें असंख्यात देव-देवियाँ व संख्यात तिर्यंच थे।

प्रश्न 16. भगवान चन्द्रप्रभ स्वामी का केवली काल व तीर्थ काल कितना था?

उत्तर भगवान चन्द्रप्रभ स्वामी का केवली काल 24 पूर्वांग, 3 माह कम एक लाख पूर्व वर्ष तथा तीर्थ काल 90 कोड़ा कोड़ी सागर + 4 पूर्वांग वर्ष रहा।

प्रश्न 17. भगवान चन्द्रप्रभ स्वामी का देवगति के पूर्व भव में क्या नाम था, तथा उस भव के पिता का क्या नाम था?

उत्तर भगवान चन्द्रप्रभ स्वामी का देवगति के पूर्व भव में पद्मनाभ (नन्दिषेण) नाम था तथा पिता का नाम श्री युगंधर (श्रीधर) था।

प्रश्न 18. भगवान चन्द्रप्रभ स्वामी किस स्वर्ग से च्युत होकर किस वंश में अवतरित हुए?

उत्तर भगवान चन्द्रप्रभ स्वामी वैजयंत नामक अनुत्तर विमान से च्युत होकर इच्वाकु वंश में अवतरित हुए।

अध्याय 9

''सम्यक् दर्शन''

प्रश्न 1. सम्यक् दर्शन किसे कहते हैं?

उत्तर सच्चे देव, शास्त्र, गुरु व जिन धर्म के प्रति तीन मूढ़ता आदि 25 दोषों से रहित, आठ अंग से सहित श्रद्धान करना ही सम्यक् दर्शन है।

प्रश्न 2. सम्यक् दर्शन के चार गुण या लक्षण कौन-कौन से हैं?

उत्तर प्रशम, संवेग, अनुकम्पा, आस्तिक्य ये चार ही व्यवहार सम्यक् दर्शन के लक्षण व गुण हैं।

प्रश्न 3. सम्यक् दर्शन के मुख्य भेद कितने और कौन-कौन से हैं?

उत्तर सम्यक् दर्शन के मुख्य रूप से दो भेद हैं

1. व्यवहार सम्यक् दर्शन अथवा सराग सम्यक् दर्शन।
2. निश्चय अथवा वीतराग सम्यक् दर्शन।

प्रश्न 4. सम्यक् दर्शन के दस भेद कौन-कौन से हैं?

उत्तर 1. आज्ञा सम्यक्त्व, 2. मार्ग सम्यक्त्व, 3. उपदेश सम्यक्त्व, 4. सूत्र सम्यकत्व, 5. बीज सम्यक्त्व, 6. संक्षेप सम्यक्त्व, 7. विस्तार सम्यक्त्व, 8. अर्थ सम्यक्त्व, 9. अवगाढ़ सम्यक्त्व, 10. परमावगाढ़ सम्यक्त्व।

प्रश्न 5. सम्यक् दर्शन के आठ अंग कौन-कौन से हैं?

उत्तर 1. निशंकित अंग, 2. निकांक्षित अंग, 3. निर्विचिकित्सा अंग, 4. अमूढ़ दृष्टि अंग, 5. उपगूहन अंग, 6. स्थितिकरण अंग, 7. वात्सल्य अंग, 8. प्रभावना अंग।

प्रश्न 6. सम्यक् दर्शन के आठ अंगों का संक्षिप्त स्वरूप क्या है?

उत्तर निशंकित अंग सच्चे देश, शास्त्र, गुरु के स्वरूप में व प्रयोजन भूत तत्वों के स्वरूप में शंका नहीं करना।

निकांक्षित अंग धर्म साधना करके सांसारिक भोगों की आकांक्षा नहीं करना।

निर्विचिकित्सा अंग साधर्मी के गंदे शरीर को देखकर ग्लानि नहीं करना।

अमूढ़ दृष्टि अंग तत्वों के निर्णय में मूढ़ता नहीं करना।

उपगूहन अंग किसी भी कारण से होने वाली जिन धर्म की निंदा का प्रमार्जन करना।

स्थितिकरण अंग सम्यक्त्व आदि से या व्रतों से चलायमान धर्मात्मा को पुनः उसी रूप में स्थापित करना।

वात्सल्य अंग साधर्मी के गुणों से अनुराग करते हुए निस्वार्थ प्रेम करना।

प्रभावना अंग जिन धर्म की यथा शक्य पूरे विश्व में प्रभावना करना।

प्रश्न 7. सम्यक् दर्शन के आठ गुण कौन-कौन से हैं?

उत्तर 1. संवेग, 2. निर्वेग, 3. आत्मनिंदा, 4. गुरु साक्षी में गर्हा, 5. उपशम, 6. पंच परमेष्ठी की भक्ति, 7. वात्सल्य, 8. अनुकम्पा।

प्रश्न 8. सम्यक् दर्शन के पच्चीस दोष कौन-कौन से हैं?

उत्तर 1. आठ शंकादि दोष, आठ मद, तीन मूढ़ता व छः अनायतन ये पच्चीस दोष हैं।

प्रश्न 9. तीनमूढ़ता कौन-कौन सी हैं, उनका संक्षिप्त परिचय दीजिए?

उत्तर 1. देव मूढ़ता सच्चे देव व सरागी देव में भेद नहीं करना।

2. गुरु मूढ़ता निर्ग्रंथ साधु व वस्त्रधारी मिथ्यादृष्टियों कुलिंगियों को एक मानना।

3. लोक मूढ़ता जिन धर्म में व लौकिक धर्माभास स्वरूप क्रियाओं में भेद नहीं मानना।

प्रश्न 10. छः अनायतन कौन-कौन से है?

उत्तर 1. कुदेव, 2. कुगुरु, 3. कुधर्म, 4. कुदेव के सेवक, 5. कुगुरु के सेवक, 6. कुधर्म के सेवक।

प्रश्न 11. शंकादि आठ दोष कौन-कौन से हैं?

उत्तर 1. शंका, 2. कांक्षा, 3. विचिकित्सा, 4. मूढ़ दृष्टि, 5. अनुपगूहन, 6. अस्थितिकरण, 7. अवात्सल्य, 8. अप्रभावना।

प्रश्न 12. आठ मद कौन-कौन से हैं?

उत्तर 1. जाति मद, 2. कुल मद, 3. बल मद, 4. ऋद्धिमद/धन मद, 5. तप मद, 6. ज्ञान मद, 7. रुप/सौन्दर्य का मद, 8. पूजा का मद।

प्रश्न 13. सम्यक् दर्शन के पाँच अतिचार कौन-कौन से हैं?

उत्तर 1. शंका करना, 2. आकांक्षा करना, 3. धर्मात्माओं से ग्लानि करना, 4. मिथ्यादृष्टियों की प्रशंसा करना, 5. मिथ्या देव आदि की स्तुति करना।

प्रश्न 14. सम्यक् दर्शन के तीन भेद कौन-कौन से हैं, संक्षिप्त में परिभाषा दीजिए?

उत्तर उपशम सम्यक्त्व वह सम्यक्त्व दर्शन मोहनीय व अनंतानुबंधी कषायों के उपशम से होता है।

क्षयोपशमिक सम्यक्त्व जो दर्शन मोहनीय की दो प्रकृति व अनंतानुबंधी की चार प्रकृतियों के उपशम से तथा सम्यक्त्व प्रकृति के उदय से जो सम्यक्त्व होता है।

क्षायिक सम्यक्त्व दर्शन मोहनीय व अनंतानुबंधी के क्षय से जो सम्यक्त्व होता है।

प्रश्न 15. सम्यक् दृष्टि जीव मरण कर कौन-कौन सी गतियों में जा सकता है?

उत्तर सम्यक् दृष्टि जीव मर कर वैमानिक देवों में व कर्मभूमि के उत्तम मनुष्यों में जाता है, यदि सम्यक् दर्शन प्राप्त करने के पूर्व आयु का बंध कर लिया हो तो भोग भूमिज मनुष्य व तिर्यंचों में तथा नरक की प्रथम पृथ्वी तक भी जन्म ले सकता है।

प्रश्न 16. सम्यक् दृष्टि कहाँ-कहाँ जन्म नहीं लेता?

उत्तर सम्यक् दृष्टि मरण कर स्थावरों में, विकल त्रयों में असंज्ञी पंचेन्द्रियों में, तिर्यंचों में, नारकियों में, भवनत्रिक देवों में, स्त्री योनि में (देवी, मनुष्यनी, तिर्यंचनियों) में नीच कुल में, विकलांगों में, अल्पायु वालों में व दरिद्रों में जन्म नहीं लेता।

प्रश्न 17. सम्यक् दृष्टि जीव संसार में अधिकतम कितने भव तक रह सकता है?

उत्तर सम्यक् दृष्टि उस भव में या अधिक से अधिक अर्द्ध पुद्गल परावर्तन काल में नियम से मोक्ष जाता है यदि सम्यक्त्व न छूटे तो क्षोयोपशमिक सम्यक् दृष्टि छयासठ सागरोपम काल में या क्षायिक सम्यक्दृष्टि अधिक से तैंतीस सागर के काल में नियम से मोक्ष जाते हैं।

प्रश्न 18. निश्चय व व्यवहार सम्यक् दर्शन की परिभाषा लिखो?

उत्तर 1. निश्चय सम्यक् दर्शन पर द्रव्यों से भिन्न आत्म स्वरूप में रुचि निश्चय चारित्र या वीतराग चारित्र का अविनाभावी होता है, इसे ही वीतराग सम्यक् दर्शन कहते है। यह सप्तम गुणस्थानों से आगे के गुण स्थान वाले मुनियों के ही होता है।

2. व्यवहार सम्यक् दर्शन प्रयोजन भूत सात तत्वों पर या सच्चे देव, शास्त्र, गुरु पर श्रद्धान करना व्यवहार सम्यक् दर्शन है। यह चौथे, पाँचवें, छठवें गुणस्थान में होता है। इसके उपशम, क्षायोपशमिक व क्षायिक तीन भेद हो सकते हैं। यह सम्यक् दर्शन ग्रहस्थों के व सरागी मुनिराजों के होता है।

अध्याय 10

''आलोचना पाठ''

दोहा **बन्दो पाँचों परमगुरु, चौबीसों जिनराज।**
करूँ शुद्ध आलोचना, सिद्ध करने के काज।

भावार्थ मैं कार्य (आत्मकल्याण) की सिद्धि के लिए पंच परमेष्ठी और चौबीसों तीर्थंकरों को नमस्कार करके अपने द्वारा किए गए दोषों की आलाचेना करता हूँ।

चाल पद्धरि छंद

सुनिय जिन अरज हमारी, हम दोष किये अति भारी।
तिनकी अब निवृति काजा, तुम शरण लही जिनराजा।।

भावार्थ हे जिनेन्द्र भगवान मेरी प्रार्थना को सुनिये, मैंने बहुत से बड़े-बड़े पाप किये हैं उनको नष्ट करने के लिए अब मैंने आपकी शरण ली है।।2।।

इक वे ते चौ इन्द्री वा, मनरहित-सहित जे जीवा।
तिनकी नहीं करुणा धारी, निर्दयी हो घात विचारी।

भावार्थ हे जिनेन्द्र देव! मैंने एक इन्द्रिय वाले, दो इन्द्रिय वाले, तीन इन्द्रिय वाले, चार इन्द्रिय वाले और सैनी, असैनी पंचेन्द्रिय जीवों पर दया नहीं की, किन्तु निर्दयी होकर उनके मारने का विचार किया।।3।।

समरंभ समारंभ आरम्भ मन, वचन, तन कीने प्रारम्भ।
कृत कारित मोदन करके, क्रोधादि चतुष्टय धरके।।4।।
सत आठ जु इम भेदनतें, अघ कीनें परि छेदनतें।

तिनकी कहूँ कोलों कहानी, तुम जानत केवल ज्ञानी।।5।।

भावार्थ हे भगवन्त! मैंने क्रोध, मान, माया, लोभ के वश में होकर स्वयं, दूसरों के द्वारा तथा दूसरों को सम्मति देकर मन से, वचन से, काय से, विचार द्वारा साधन इकट्ठे करके और कार्य शुरू करके, इस प्रकार एक सौ आठ भेद रूप दूसरे जीवों की हिंसा करके बहुत पाप किये हैं। उनका मैं कहाँ तक वर्णन करूँ, आप तो सब जानते हैं।।4-5।।

विपरीत एकान्त विनय के, संशय अज्ञान कुनयके।
वश होय घोर अघ कीने, वचते नहीं जायँ कहीने।।6।।

भावार्थ हे प्रभु! मैंने विपरीत, एकान्त, विनय, संशय और अज्ञान इन पाँच प्रकार के मिथ्यात्वों के वश में होकर बहुत से पाप किए हैं जो वचनों से नहीं कहे जा सकते हैं।

कुगुरुनकी सेवा कीनी, केवल अदया कर भीनी।
या विधि मिथ्यात्व बढ़ायो चहु गति में दोष उपायो।।7।।

भावार्थ हे जिनेन्द्र देव! मैंने फिर झूठे गुरुओं की हिंसा युक्त होकर सेवा की। इस प्रकार मिथ्यात्व को बढ़ाया व चारों गतियों में भ्रमण करने का पाप उपार्जन किया।।7।।

हिंसा पुनि झूठ जु चोरी, पर वनिता सों दृग जोरी।
आरम्भ परिग्रह भीने, पन पाप जु या विध कीने।।8।।

भावार्थ हे नाथ! हिंसा, झूठ, चोरी, कुशील, आरम्भ और परिग्रह से मिले हुए पाँच पापों को मैंने किया।।8।।

सपरस रसना घ्रानन को, चखु कान विषय सेवन को।
बहु कर्म किये मनमाने, कुछ न्याय अन्याय न जाने।।9।।

भावार्थ हे विभो! स्पर्शन, रसना, घ्राण, चक्षु और कर्ण इन पाँच इन्द्रियों के विषय सेवन करने के लिए मैंने बहुत ही मनमाने पाप किए और न्याय व अन्याय का भी कुछ विचार नहीं किया।।9।।

फल पंच उदम्बर खाये, मधु मांस मद्य चित लाये।
नहिं अष्ट मूलगूण धारे, सेये कुविसन दुखकारे।।10।।

भावार्थ हे स्वामिन! अष्ट मूल गुणों को धारण नहीं करके मैंने पीपल,

बड़, ऊमर, अंजीर और पाकर इन पाँच उदम्बर फलों के साथ-साथ मधु, मांस और मद्य का भक्षण तथा दु:खकारी सप्त व्यवनों का सेवन किया।

दुइबीस अभख जिनगाये, जो भी निशदिन भुंजाये।
कछु भेदा-भेद न पायो, ज्यों-ज्यों कर उदर भरायो॥11॥

भावार्थ हे देव! आपके द्वारा कहे गए 22 अभक्ष्यों में कुछ भी भले बुरे का विचार न करके उनको रात-दिन खाया और जैसे-तैसे अपना पेट भरा॥11॥

अनन्तानु ''जु'' बन्धी जानो, प्रत्याख्यान अप्रत्याख्यानो।
संज्वलन चौकड़ी गुनिये, सब भेद जु षोडश मुनिये॥12॥
परिहास अरति रति शोग, भय ग्लानि तिवेद संजोग।
पन बीस जु भेद भये इम, इनके वश पाप किये हम॥13॥

भावार्थ हे भगवान! अनन्तानुबन्धी, अप्रत्याख्यान, प्रत्याख्यान और संज्वलन सम्बन्धी क्रोध, मान, माया, लोभ के भेद से 16 कषाय तथा हास्य, अरति, रति, शोक, भय, जुगुप्सा, स्त्री वेद, पुरुष वेद व नपुंसक वेद के भेद से नोकषाय इस प्रकार इन 25 कषायों के वश में होकर मैंने बहुत से पाप किये हैं॥12-13॥

निद्रा वश शयन कराई, सुपनन मधि दोष लगाई।
फिर जागि विषय वन धायो, नाना विधि विष फल खायो॥14॥

भावार्थ हे नाथ! मैंने नींद के वश होकर स्वप्न में भी पाप रूप परिणाम किए और फिर जागकर इन्द्रियों के विषय वासनारूपी वन में दौड़ लगाई तथा नाना प्रकार के जहरीले फल खाये तथा तीव्र पाप का बन्ध किया॥14॥

आहार विहार निहारा, इनमें नहि जतन विचारा।
बिन देखे धरा उठाई, बिन शोथी सो वस्तु खाई॥15॥

भावार्थ हे जिनेश्वर! खाने-पीने, चलने-फिरने तथा मल-मूत्र त्यागने आदि में मैंने कुछ भी यत्नाचार पूर्वक प्रवृत्ति नहीं की, किन्तु बिना देखे हर एक पदार्थ उठाया, धरा तथा बिना शोधा हुआ भोजन किया॥15॥

तब ही परमाद सतायों, बहु विध विकल्प उपजायो।
कछु सुधि-बुधि नाहिं रही है, मिथ्यामति छाय गई है॥16॥

भावार्थ हे स्वामिन! जब प्रमाद ने मुझे सताया तब नाना प्रकार के संकल्प-विकल्प उत्पन्न हुए जिनके द्वारा कुछ भी स्मरण तथा विवेक नहीं

रहा किन्तु खोटी बुद्धि हो गई।।16।।

मर्यादा तुम ढिंग लीनी, ताहू में दोष जु कीनी।
भिन-भिन अब कैसे कहिये, तुम ज्ञान विषैं सब पइये।।17।।

भावार्थ हे प्रभो! आपके समक्ष जो कुछ प्रतिभा ली, वह भी तोड़कर खंडित की, जिसे हम अलग-अलग किस तरह कहें। आपके ज्ञान में सब झलकता है अर्थात् आप सब जानते हैं।17।।

हा! हा! मैं दुष्ट अपराधी, त्रस जीवन राशि विराधी।
थावर की जतन न कीनी, उस में करुणा नहिं लीनी।।18।।

भावार्थ हे जिनराज! हाय! हाय! मुझ दुष्ट पापी ने त्रस जीवों का घात किया और हृदय में करुणा, दया को धारण नहीं किया, एकेन्द्री जीवों की भी रक्षा मैंने नहीं की।।18।।

पृथ्वी बहुत खोद कराई, महलादिक जांगा चिंनाई।
पुनि बिन गाल्यो जल ढोल्यो, पंखा तैं पवन विलोल्यो।।19।।

भावार्थ हे जिनेन्द्र देव! मैंने बहुत सी जमीन खुदवाकर मकान वगैरह बनाये जिनमें बिना छना हुआ पानी काम में लिया, तथा पंखा से वायुकाय जीवों का घात किया।।19।।

हा! हा! मैं अदयाचारी, बहु हरति काय जु विदारी।
तामधि जीवन के खंदा, हम खाये धरि आनन्दा।।20।।

भावार्थ हे भगवान! हाय! हाय! मैं बड़ा निर्दयी हूँ कि मैंने बहुत वनस्पतिकाय को काटा, तोड़ा तथा उसमें जीवों के समूह थे उन्हें आनन्द के साथ खाया।।20।।

हा! हा! परमाद बसाई, बिन देखेअगनि जलाई।
ता मध्य जीव जे आये, तेहू परलोक सिधाये।।21।।

भावार्थ हे गत्बन्धो! हाय हाय मैंने प्रमाद के वश में होकर बिनादेखे अग्नि जलाई, जिससे उसके भीतर आने वाले सम्पूर्ण जीव मृत्यु को प्राप्त हुए।।21।।

बींध्यो अन रात पिसायो, ईंधन बिन शोधि जलायो।

झाड़ू ले जागाँबुहारी, चींटी आदिक जीव विदारी।।22।।

भावार्थ हे नाथ! मैंने रात्रि को सड़ा-घुना अनाज पिसवाया तथा बिना देखा हुआ ईंधन वगैरह जलाया और झाड़ू लेकर जोर से अयत्नाचार पूर्व जमीन को साफ किया, इसमें चींटी आदि बहुत से जीव नाश को प्राप्त हुए।।22।

जल छान जिवानी कीपी, सोहू पूनि डारि जु दीनी।
नहिं जल थानक पहुँचाई, किरिया बिन पाप उपाई।।23।।

भावार्थ हे प्रभो! पानी छानने से जो जीव बिलछानी में एकत्रित हुए उनको जहाँ के तहाँ नहीं पहुँचाकर पृथ्वी पर डाल दिया। इस प्रकार बिना यत्नाचार के मैंने पाप उपार्जन किया।।23।।

जल मल मोरिन गिरवायो, कृमि कुल बहुत घात करायो।
नदियन बिच चीर धुवाये, कोसन के जीव मराये।।24।।

भावार्थ हे विभो! नालियों में पानी तथा मल-मूत्र डालकर बहुत से जीवों का घात किया। इसी प्रकार नदियों में कपड़े धुलवा कर कोसों तक के जीवों का नाश किया।।24।।

अन्नादिक शोध कराई, तामें जु जीव निसराई।
तिनको नहिं जतन करायो, गलियारे धूप डरायो।।25।।

भावार्थ हे देव! अनाज आदि को साफ करवाने से उसमें जो जीव निकले उनकी रक्षा का उपाय न करके उन्हें धूप से तपी हुई गलियों में डलवा दिया।।25।।

पुनि द्रव्य कमावन काजै, बहुत आरम्भ हिंसा साजै।
कीये तिसनावस अघ भारी, करुणा नहिं रंच विचारी।।26।।

भावार्थ हे स्वामिन! मैंने धन कमाने के लिए फिर बहुत ही हिंसारूप आरम्भ किये और जरा भी दया नहीं की अत्यन्त तृष्णा के वश होकर बड़े-बड़े पाप किये।।26।।

इत्यादिक पाप अनंता, हम कीने श्री भगवन्ता।
सन्तति चिर काल उपाई, वाणी तैं कहिये न जाई।।27।।

भावार्थ हे जगदीश! इस प्रकार मैंने अनेकों पाप किये हैं तथा हमेशा

से उनको सदैव ही उपार्जन करता रहा हूँ जो वचनों से नहीं कहे जा सकते।।27।।

ताको जु उदय अब आयो, नानाविध मोहि सतायो।

फल भुंजत जिय दुःख पावे, वचतें कैसे करि गावे।।28।।

भावार्थ हे परमात्मन् जब उन पाप कर्मों का उदय आया तब उन्होंने मुझे अनेक प्रकार से दुःखी किया। इस तरह उन कर्मों के फल भोगते हुए मैंने जिन पापों के फल अर्थात् दुःख को पाया उनको वचनों से किस तरह कहूँ।।28।।

तुम जानत केवल ज्ञानी, दुख दूर करो शिव थानी।

हम तो तुम शरण लही है, जिन तारण विरद सही है।।29।।

भावार्थ हे सिद्धालय में रहने वाले सिद्ध भगवान! आप सब जानते हैं, यही समझकर मैंने आपकी शरण ली है इसलिए अब मेरे दुःखों कोदूर कीजिए, क्योंकि आप तारने वाले हैं, ऐसा आपका संसार में यश (महात्म्य) विदित है।।29।।

एकगांव पती जो होवे, सो भी दुखिया दुःख खोवे।

तुम तीन भुवन के स्वामी, दुःख मेटो अन्तरयामी।।30।।

भावार्थ हे अन्तर्यामिन! जो एक ग्राम का स्वामी होता है वह भी दुखियों के दुख को दूर कर देता है। परन्तु आप तो तीन लोक (ऊर्ध्व, मध्य, अधोः लोक) के स्वामी हैं, इसलिए मेरे दुःखों को दूर कीजिए।।30।।

द्रोपदि को चीर बढ़ायो, सीता प्रति कमल रचायो।

अंजन से किये अकामी, दुःख मेटो अन्तर्यामी।।31।।

भावार्थ हे अनन्तात्मन! आपने द्रोपदी के वस्त्र को बढ़ाया, सीता जी के लिए कमल रचवाया और अंजर सरीखे अधम चोर को इच्छा रहित किया, इसलिए अब मेरे दुःखों को भी दूर कीजिए।।31।।

मेरे अवगुन न चितारो, प्रभु अपनो विरद निहारो।

सब दोष सहित कर स्वामी, दुःख मेटो अन्तरयामी।।32।।

भावार्थ हे परमेष्ठिन! मेरे दोषों को स्मरण न कीजिए, किन्तु आप

अपने दयालु स्वभाव की ओर ही देखिए, और मुझे सब दोषों से रहित कर मेरे दु:खों को मिटाइये।।32।।

इन्द्रादिक पदवी नहीं चाहूँ, विषयनि में नाहिं लुभाऊँ।
रागदिक दोष हरीजे, परमातम जिन पद दीजै।।33।।

दोष रहित जिनदेव जी, निज पद दीज्यो मोय।
सब जीवन के दु:ख बढैं, आनन्द मंगल होय।।
अनुभव-मणिक-पारखी, जोहर आप जिनंद।
ये ही वर मोहि दीजिए, चरण-शरण आनन्द।।

भावार्थ सर्व दोषों से रहित हे जिनेन्द्र देव! मुझे मेरा पद प्रदान कीजिए। सभी जीवों में सुख शान्ति की वृद्धि हरो, सर्वत्र आनन्द और मंगल हो।

अनुभव रूपी माणिक्यों की परख करने वाले अनुपम जौहरी (कविवर जौहरि) रूपी जिनेन्द्र भगवान आप मुझे ये ही वर प्रदान कीजिए कि मैं आपके चरणों की शरण को सदैव प्राप्त करता हुआ परम आनन्द को प्राप्त करूँ।

भाग-4

अध्याय 1

''दर्शन पाठ''

तुम निरखत मुझको मिली, मेरी सम्पति आज।
कहाँ चक्रवर्ति-संपदा, कहाँ स्वर्ग-साम्रज्य।।1।।
तुम वन्दत जिनेदवजी, नित नव मंगल होय।
विघ्न कोटि तत छिन टरैं, लहहि सुजस सब लोय।।2।।
तुम जाने बिना नाथ जी, एक श्वाँस के माहिं।
जन्म मरण अठदश कियें, साता पाई नाहिं।।3।।
आप बिना पूजत लहे, दु:ख नरक के बीच।
भूख प्यास पशुगति सही, कर्यो निरादर नीच।।4।।
नाम उचारत सुख लहैं, दर्शन सो अघ जाय।
पूजत पावें देव पद, ऐसे हे जिनराय।।5।।
वंदत हूँ जिनराज मैं, धर उर समताभाव।
तन-धन-मन जग जाल तैं, धर विरागता भाव।।6।।
सुनो अरज! हे नाथ जी, त्रिभुवन के आधार।
दुष्ट कर्म का नाश कर, बेगि करो उद्धार।।7।।
जाचत हूँ मैं आपसों, मेरे जियके माहिं।
राग द्वेष की कल्पना, क्यों हूँ उपजे नाहिं।।8।।
अति अद्भुत प्रभुता लखी, वीतरागता माहिं।
विमुख होहि ते दु:ख लहै, सन्मुख सुखी लखाहिं।।9।।
कलमल कोटिक नहिं रहें, निरखत ही जिनदेव।
ज्यों रवि ऊगत् जगत में, हरै तिमिर स्वयमेव।।10।।
परमाणु पुदगल तणी, परमातम संजोग।

भई पूज्य सब लोक में, हरैं जन्म का रोग।।11।।
कोटि जन्म में कर्म जो, बाँधे हुये अनन्त।
ते तुम छवि विलोकतें, छिन में होवें अन्त।।12।।
आन नृपति कृपा करैं, तब कुछ दे धन धान।
तुम प्रभू अपने भक्त को, करल्यो आप समान।।13।।
यंत्र-मंत्र मणि औषधि, विषहर राखत प्राण।
त्यों जिनछवि सब भ्रम हरैं, करैं सर्व परधान।।14।।
त्रिभुवन पति हो ताहि तैं, छत्र विराजै तीन।
सुरपति नाग नरेश पद, रहें चरन आधीन।।15।।
भवि निरखत भव आपने, तुव भामण्डल बीच।
भ्रम मेटें समता गहै, नाहिं सहै गति नीच।।16।।
दोई और ढोरत अमर, चौंसठ चमर सफेद।
निरखत भविजन का हरैं, भव अनेक का खेद।।17।।
तरु अशोक तुव हरत है, भवि-जीवन का शोक।
आकुलता कुल मेटि कें, करै निराकुल लोक।।18।।
अन्तर बाहिर परिगहन, त्यागा सकल समाज।
सिंहासन पर रहत हैं, अन्तरीक्ष निजराज।।19।।
जीत भई रिपु मोहतैं, यश सूचत है तास।
देव दुन्दुभिन के सदा, बाजे बजैं प्रकाश।।20।।
बिन अक्षर इच्छा रहित, रुचिर दिव्यध्वनि होय।
सुर नर पशु समझै सबै, संशय रहे न कोय।।21।।
बरसत सुरतरु के कुसुम, गुंजत अलि चहुँ ओर।
फैलत सुजस सुवासना, हरषत भवि सब ठौर।।22।।
समुद्र बाघ अरु रोग अहि, अर्गल बंध संग्राम।
विघ्न विषम सबहीं टरैं, सुमरत ही जिननाम।।23।।
श्रीपाल चांडाल, पुनि, अंजन, भीलकुमार।
हाथी, हरि, अरि सब तरे, आज हमारी बार।।24।।
'बुधजन' यह विनती करौ, हाथ जोड़ सिर नाय।
जबलों शिव नहीं होयतुव, भक्ति हृदय अधिकाय।।15।।

दर्शन पाठ

दोहा : सकल श्रेय ज्ञायक तदपि, निजानंद रस लीन।
सो जिनेन्द्र जयवन्त नित, अरि रज रहस विहीन।।1।।
जय वीतराग विज्ञान पूर, जय मोह तिमिर हो हरन सूर।
जय ज्ञान अनन्तानन्त धार, दृग सुख वीरज मण्डित अपार।।2।।
जय परम शान्ति मुद्रा समेत, भविजन को निज अनुभूति देत।
भवि भावगवश जोगे वशाय, तुम ध्वनि सुनिहै विभ्रम नशाय।।3।।
तुम गुण चिन्तत निज पर विवेक, प्रगटे विघटे आपद अनेक।
तुम जगभूषण दूषण वियुक्त, सब महिमा युक्तविकल्प मुक्त।।4।।
अविरुद्ध, शुद्ध चेतन स्वरूप, परमात्म परम पावन अनूप।
शुभ अशुभ विभाव अभाव कीन, स्वभाविक परणति मय अक्षीण।।5।।
अष्टादश दोष विमुक्त धीर, स्व चतुष्टय में राजत गम्भीर।
मुनिगणधरादि सेवत महंत, नव केवल लब्धि रमा धरन्त।।6।।
तुम शासन सेय अमेय जीव, शिव गये जाहिं जैहैं सदीव।
भव सागर में दुख क्षार वारि, तारण को और न आप टारि।।7।।
यह लख निज दुख गद हरण काज, तुम ही निमित्त कारण इलाज।
जानें तातैं मैं शरण आय, उचरो निज दुख जो चिर लहाय।।8।।
मैं भ्रमौ अपनको बिसर आप, अपनाये विधि फल पुण्य पाप।
निज को पर का कर्ता पिछान, पर में अनिष्टता इष्ट ठान।।9।।
आकुलित भयो अज्ञान धारि, जो मृग मृग-तृष्णा जानि वारि।
तन परणति में आपो चितार, कबहुँ न अनुभवो स्वपद सार।।10।।
तुम को जाने बिन जो कलेश, पाये सो तुम जानत जिनेश।
पशु नारक नर सुर गति मंझार, भव धर धर मरयो अनंत बार।।11।।
अबकाल लब्धि बल तें दयाल, तुम दर्शन पाय भयो खुशाल।
मन शांति भयो मिट सकलद्वंद्व, चाखो स्वातम रस दुख निकंद।।12।।

तातैं ऐसी अब करो नाथ, बिछुडे न कभी तु चरण साथ।
तुम गुण गण को नहीं छेव देव, जगतारण को तुम विरद एव।।13।।
आतम के अहित विषय कषाय, इनमें मेरी परणति न जाय।
मैं रहूँ आप में आप लीन, सो करों होऊँ ज्यों निजाधीन।।14।।
मेरे न चाह कछु और ईश, रत्नत्रय निधि दीजे मुनीश।
मुझ कारज के कारण सु आप, शिव करो हरो मम मोह ताप।।15
शशि शांति करण तप हरण हेत! स्वमेव तथा तुम कुशल देत।
पीवत पीयूष ज्यों रोग जाय, त्यों तुम अनुभव तें भव नशाय।।16।।
त्रिभुवन तिहुँ काल मंझार कोय, नहीं तुम बिन निज सुखदाय होय।
मो उर निश्चय ये भयो आज, दुख जलधि उबारन तुम जहाज।।17।।
दोहा : तुम गुणगण मणि गणपति, गणत न पावहिं पार।
''दौ'' स्वल्पमति किस कहैं, नमौं त्रियोग सम्हार।।18।।

अध्याय 2

''श्रावक की ग्यारह प्रतिमायें''

प्रश्न 1. श्रावक किसे कहते हैं?

उत्तर जो सम्यक् श्रद्धावान, विवेकवान व क्रियावान होता है, उसे श्रावक कहते है। अथवा जो मुनिराजों की वाणी को श्रद्धापूर्वक सुनता है, तदनुरूप आचरण करता है, वह श्रावक होता है।

प्रश्न 2. श्रावक के कितने व कौन-कौन से भेद हैं?

उत्तर श्रावक के तीन भेद होते हैं 2. पाक्षिक, 2. नैष्ठिक, 3. साधक।

प्रश्न 3. इन तीनों प्रकार के श्रावकों की क्या विशेषतायें हैं?

उत्तर 1. पाक्षिक श्रावक: यह जिन धर्म का पक्ष लेता है, श्रावक के व्रतों का अल्प, जघन्य रूप में पालन करता है। श्रावक के मूल गुणों का भी यथा शक्य पालन करने का अभ्यास करता है।

1. नैष्ठिक श्रावक: यह निष्ठापूर्वक श्रावक के गुणों का पालन करता है, षट् आवश्यक कर्तव्यों का भी पालन करता है, अणुव्रत आदि का पालन भी करता है।

3. साधक श्रावक : यह श्रावक के समस्त व्रतों, दर्शन आदि प्रतिमाओं का निरतिचार पालन करता है।

प्रश्न 4. श्रावक के आठ मूलगुण कौन-कौन से होते हैं?

उत्तर पाँच उदम्बर फलों का त्याग तथा तीन मकार (मद्य, मांस, मधु) का त्याग अथवा पाँच अणु व्रतों का पालन तथा तीन मकारों का त्याग अथवा 1. मद्य का त्याग, 2. मधु का त्याग, 3. मांस का त्याग, 4. रात्रि भोजन का त्याग, 5. अनछना जल पीने का त्याग,

6. जीवों पर दया करना, 7. नित्य देव दर्शन करना, 8. पंच उदम्बर फल खाने का त्याग।

प्रश्न 5. श्रावक की ग्यारह प्रतिमाएँ कौन-कौन सी होती है, नाम बताओ?

उत्तर 1. दर्शन प्रतिमा, 2. व्रत प्रतिमा, 3. सामायिक प्रतिमा, 4. प्रौषधोपवास प्रतिमा, 5. सचित्त प्रतिमा, 6. रात्रि भुक्ति त्याग प्रतिमा, 7. ब्रह्मचर्य प्रतिमा, 8. आरंभत्याग प्रतिमा, 9. परिग्रह त्याग प्रतिमा, 10. अनुमति त्याग प्रतिमा, 11. उद्दिष्ट त्याग प्रतिमा।

प्रश्न 6. प्रतिमा किसे कहते हैं?

उत्तर संयम अंश जगो जहाँ, भोग अरुचि परिणाम।

उदय प्रतिमा को भयो, प्रतिमा ताको नाम।।

अर्थ संसार, शरीर, भोगों सै वैराग्य वान व्यक्ति क्रमशः अंश रूप संयम ग्रहण करता है, इस देश संयम की क्रमशः बढ़ती हुई अवस्था को ही प्रतिमा कहते हैं।

प्रश्न 7. दर्शन प्रतिमा किसे कहते हैं?

उत्तर सच्चे देव, शास्त्र, गुरु व जिनधर्म के प्रति दृढ़ आस्थावान, पंच परमेष्ठी का परम भक्त, संसार, शरीर, भोगों से उदासीन, अन्याय, अभक्ष्य व अनीति का त्यागी, अणुव्रतों का अभ्यासी, श्रावक के आठ मूलगुणों व आवश्यक कर्तव्यों का पालन करने वाला श्रावक दार्शनिक/दर्शन प्रतिमा वाला (श्रावक) कहलाता है।

प्रश्न 8. व्रत प्रतिमा का क्या स्वरूप है?

उत्तर पाँच अणुव्रत, तीन गुणव्रत एवं चार शिक्षाव्रतों का यथाशक्य निर्दोष पालन करने वाला महानुभाव व्रतिक श्रावक कहलाता है।

प्रश्न 9. सामयिक प्रतिमा किसे कहते हैं?

उत्तर इस प्रतिमा का धारी तीनों संध्याकालों में कम से कम दो घड़ी (48 मिनट) तक सर्व सावद्य का त्याग कर पंच परमेष्ठी या नव देवताओं की भक्ति, स्तुति, वंदना आदि करता है, पंच परमेष्ठी अथवा आत्मा स्वरूप का चिंतन करने वाला सामायिक प्रतिमाधारी

कहलाता है।

प्रश्न 10. प्रोषधोपवास प्रतिमा का क्या स्वरूप है?

उत्तर पर्व के दिनों में प्रत्येक अष्टमी व चतुर्दशी को यथाशक्ति उपवास करना या एकाशन आदि करना प्रोषधोपवास प्रतिमा है?

प्रश्न 11. सचित्त त्याग प्रतिमा किसे कहते हैं?

उत्तर योनिभूत पदार्थों का (साबुत फल, अनाज, बीज, कच्चे फल, सब्जी व जल आदि का) सेवन करने का त्याग करना सचित्त त्याग प्रतिमा कहलाती है।

प्रश्न 12. रात्रि भुक्ति त्याग प्रतिमा का क्या स्वरूप है?

उत्तर सूर्यास्त के दो घड़ी पूर्व (48 मिनट) से सूर्योदय के 2 घड़ी पश्चात् तक कृत कारित, अनुमोदन से रात्रि भोजन का त्याग करना अर्थात् रात्रि में स्वयं भोजन नहीं करना, किसी को नहीं कराना व रात्रि भोजन करने वाले की अनुमोदना नहीं करना रात्रि भुक्ति त्याग प्रतिमा है। इस प्रतिमा का दूसरा नाम दिवा मैथुन त्याग प्रतिमा भी है, इसका अर्थ है कि दिन में कभी भी मन, वचन, काय से अब्रह्म का सेवन नहीं करना।

प्रश्न 13. ब्रह्मचर्य प्रतिमा का क्या स्वरूप है?

उत्तर मन, वचन, काय से अब्रह्म का त्याग करना, अपनी स्वकीय/परणायी स्त्री को भी बहन के समान मानना, आयु में कम हर स्त्री को बेटी/पुत्री वत् मानना, समान वय वाली महिलाओं को बहन वत मानना तथा अधिक वय वाली स्त्रियों को माता के समान मानना ही ब्रह्मचर्य प्रतिमा है।

प्रश्न 14. आरम्भ त्याग प्रतिमा का क्या स्वरूप है?

उत्तर कृषि, व्यापार, उद्योग व सत्ता-समाज की सेवा कार्य (वैतनिक) त्याग कर आत्म कल्याण-संयम साधना में संलग्न हो जाना ही आरम्भ त्याग प्रतिमा है।

प्रश्न 15. परिग्रह त्याग प्रतिमा का क्या स्वरूप है?

उत्तर अत्यन्त आवश्यक वस्त्र व बर्तन के अतिरिक्त समस्त परिग्रह

का परित्याग करना परिग्रह त्याग प्रतिमा है।

प्रश्न 16. अनुमति त्याग प्रतिमा किसे कहते हैं?

उत्तर आरम्भ, परिग्रह, विवाह आदि कार्यों में अनुमति देने का परित्याग करना, अनुमति त्याग प्रतिमा है।

प्रश्न 17. उद्दिष्ट त्याग प्रतिमा किसे कहते हैं?

उत्तर अपने उद्देश्य से भोजन, भवन आदि नहीं बनवाना अर्थात् अपने उद्देश्य से बने भोजन आदि का त्याग करना कौपीन व दुपट्टा मात्र परिग्रह धारण करना, पिच्छी व कमण्डलु धारण करना उद्दिष्ट त्याग प्रतिमा कहलाती है। उद्दिष्ट त्याग प्रतिमा धारी के दो भेद हैं 1. क्षुल्लक जी, 2. ऐलक जी।

प्रश्न 18. क्षुल्लक जी व ऐलक जी का क्या स्वरूप है?

उत्तर क्षुल्लक कौपीन (लंगोटी) व दुपट्टा धारण करना, कटोरे में आहार करना, सिर व दाढ़ी मूंछ के बालों को छुरा कैंची से कटवाना या "केशलोंच" करना।

ऐलक मात्र कौपीन धारण करना, हाथ में आहार करना, नियम से केशलोंच करना, यावज्जीवन पैदल विहार करना, पिच्छी कमण्डल व शास्त्रों को धारण करना।

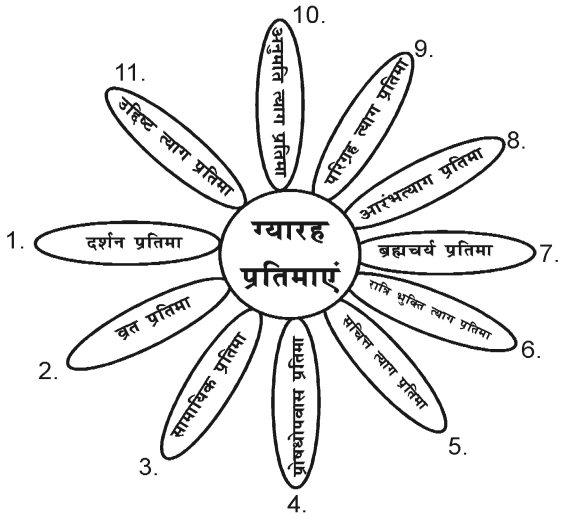

अध्याय 3

''माता के सोलह स्वप्न''

प्रश्न 1. तीर्थंकर की माँ सोलह स्वप्न कब देखती है?

उत्तर तीर्थंकर का जीव (जो तीर्थंकर पूर्व भव में ही सोलह कारण भावना का विशुद्ध हृदय से चिंतन व अनुपालन कर, तीर्थंकर प्रकृति का बंध कर चुके हैं, वे पंच कल्याणकों की अवस्था को प्राप्त होने वाले तीर्थंकर) जब माँ के गर्भ में आते हैं तब तीर्थंकर की माँ सोलह स्वप्न देखती है।

प्रश्न 2. वे सोलह स्वप्न कौन-कौन से हैं, नाम बताओ?

उत्तर 1. ऐरावत हाथी, 2. धवल वृषभ, 3. केहरि सिंह, 4. कमलासन पर विराजमान लक्ष्मी, 5. युगल पुष्प मालायें, 6. पूर्ण चन्द्रमा, 7. उदयागत सूर्य, 8. क्रीड़ारत मीन युगल, 9. दो स्वर्ण कलश, 10. जल से परिपूर्ण सरोवर, 11. लहरों से युक्त समुद्र, 12. सिंहासन, 13. देव विमान, 14. नागेन्द्र भवन, 15. रत्न राशि, 16. निर्धूम अग्नि।

प्रश्न 3. तीर्थंकर के पिता जी ने स्वप्न में ऐरावत हाथी को देखने का क्या फल बताया है?

उत्तर इस स्वप्न का फल यह है कि वह आने वाला जीव अनेक जीवों का रक्षक, अपनी चाल से हाथी की चाल को तिरस्कृत करने वाला, तीनों लोक में इच्छा के अनुरूप एक अधिपत्य को प्राप्त होगा।

प्रश्न 4. धवल वृषभ को स्वप्न में देखने का क्या फल बताया है?

उत्तर इस स्वप्न को देखने का फल यह है कि आने वाला जीव निर्मल बुद्धि का धारक, जगत का गुरु व तीनों जगत को वृषभ के समान अलंकृत करने वाला होगा।

प्रश्न 5. केहरि सिंह को स्वप्न में देखने का क्या फल बताया है?

उत्तर केहरि सिंह को स्वप्न में देखने का फल यह है कि आने वाला जीव अनन्त वीर्य का धारक, सिंह के समान मद रहित, अत्यधिक गर्व को धारण करने वाले समस्त पुरुषों को गर्व रहित कर देगा, अद्वितीय धीर, वीर, अन्त में दीक्षा लेकर कठिन तपश्चरण करेगा।

प्रश्न 6. स्वप्न में कमलासन पर विराजमान लक्ष्मी देखने का क्या फल बताया है?

उत्तर कमलासन पर विराजमान लक्ष्मी देखने से, उत्पन्न होते ही उस पुण्य पुरुष का (तीर्थंकर बालक का) सुरेन्द्र व असुरेन्द्र सुमेरु पर्वत पर क्षीर सागर के जल से अभिषेक करेंगे और वह पर्वत के समान स्थिर रहेगा।

प्रश्न 7. स्वप्न में युगल पुष्प मालाएँ देखने का क्या फल बताया है?

उत्तर पुष्प मालाएँ देखने से यह सूचित होता है कि वह पुत्र तीनों लोकों में यश से सहित होगा, उत्तम सुगन्धि को प्राप्त होगा, अनन्तज्ञान व अनन्त दर्शन रूपी दृष्टि के द्वारा समस्त लोक व अलोक को व्याप्त करेगा।

प्रश्न 8. स्वप्न में पूर्ण चन्द्रमा देखने का क्या फल बताया है?

उत्तर चन्द्रमा देखने से वह अत्यधिक दयारूपी चन्द्रिका से सुन्दर होगा, अज्ञान रूप अंधकार को नष्ट करने वाला व जगत में निरन्तर आहलाद को करने वाला होगा।

प्रश्न 9. स्वप्न में उदयागत सूर्य देखने का क्या फल बताया है?

उत्तर स्वप्न में सूर्य देखने से वह पुत्र तेज का भंडार होगा व अपने तेज से समस्त तेजस्वी जनों के तेज को जीतकर तीनों लोकों को अंध कार रहित कर देगा।

प्रश्न 10. स्वप्न में क्रीड़ारत मीन युगल को देखने का क्या फल बताया है?

उत्तर सुख से क्रीड़ा करती हुई मछलियों का युगल देखने से वह पुत्र विषयों के भोग से उत्पन्न सुख को पाकर अन्त में मोक्ष के अनन्त सुख को अवश्य ही प्राप्त होगा।

प्रश्न 11. स्वप्न में स्वर्ण कलश देखने का क्या फल बताया है?

उत्तर स्वर्ण कलशों को देखने से यह सिद्ध होता है कि वह पुत्र जगत् के मनोरथों को पूर्ण करने वाला होगा व उसके प्रभाव से वह घर

निधियों से परिपूर्ण होगा।

प्रश्न 12. जल से परिपूर्ण सरोवर को स्वप्न में देखने का क्या फल बताया है?

उत्तर स्वप्न में सरोवर देखने से वह पुत्र समस्त उत्तम लक्षणों से युक्त होगा, तृष्णारहित बुद्धि का धारक, तृष्णारूपी प्यास से पीड़ित मनुष्यों को संसार में सन्तोष से युक्त सुखी करेगा।

प्रश्न 13. स्वप्न में लहरों से युक्त समुद्र देखने का क्या फल बताया है?

उत्तर महासागर देखने से यह सूचित होता है कि वह पुत्र समुद्र के समान गम्भीर बुद्धि का धारक होगा, उपदेश देकर जगत के जीवों की कीर्ति रूपी महानदियों से परिपूर्ण श्रत ज्ञान रूपी सागर का पान करायेगा।

प्रश्न 14. स्वप्न में सिंहासन देखने का क्या फल बताया है?

उत्तर सिंहासन देखने से यह सिद्ध होता है कि उस पुत्र की आज्ञा सर्वोपरि होगी व वह मणियों से जगमाते मुकुटों पर हाथ लगाये हुए देव-दानवों से घिरे सिंहासन पर आरूढ हीगा।

प्रश्न 15. स्वप्न में देव विमान देखने का क्या फल बताया है?

उत्तर देव विमान देखने से सूचित होता है, कि विमानों के स्वामी इन्द्रों की पंक्तियों से उसके चरण पूजित होंगे। मानसिक व्यथा से रहित होगा, अभ्युदय का धारक होगा एवं श्रेष्ठ मुख्य विमान से वह यहाँ अवतार लेगा।

प्रश्न 16. स्वप्न में नागेन्द्र भवन देखने का क्या फल बताया है?

उत्तर नागेन्द्र भवन देखने का फल है कि वह संसार रूपी पिंजड़े को भेदने वाला होगा, मति, श्रुत व अवधि ज्ञान रूपी तीन प्रमुख नेत्रों से युक्त होगा।

प्रश्न 17. स्वप्न में रत्न राशि देखने का क्या फल बताया है?

उत्तर स्वप्न में रत्न राशि देखने से वह पुत्र बहुत प्रकार की देदीप्यमान किरणों से अनुरंजित होगा, अनेक गुण रूपी राशि उसका आश्रय लेंगी व शरणागत जीवों को आश्रय देने वाला होगा।

प्रश्न 18. स्वप्न में निर्धूम अग्नि देखने का क्या फल बताया है?

उत्तर निर्धूम अग्नि देखने का फल है कि वह पुत्र ध्यान रूपी प्रचण्ड अग्नि को प्रकट कर समस्त कर्मों को जायेगा।

अध्याय 4

''देव पूजन विधि''

प्रश्न 1. देव पूजन किसे कहते हैं?

उत्तर वीतरागी, सर्वज्ञ, हितोपदेशी जिनेन्द्र भगवान के गुणों का कीर्तन करते हुए शुद्ध द्रव्य चढ़ा कर जिन गुण सम्पत्ति की प्राप्ति की भावना करना देव पूजन है।

प्रश्न 2. जिनेन्द्र पूजन के कितने अंग हैं?

उत्तर जिनेन्द्र भगवान की पूजन नव अंग से युक्त होती है, तथा नित्य पंच कल्याणक पूजन होती है। किसी भी अंग को छोड़ने से पूजन अधूरी मानी जाती है।

प्रश्न 3. जिनेन्द्र पूजन के नव अंग कौन-कौन से हैं?

उत्तर 1. अभिषेक, 2. आह्वानन, 3. स्थापन, 4. सन्निधिकरण, 5. अष्ट द्रव्य से पूजन, 6. जयमाला, 7. जाप, 8. शांति पाठ, 9. विसर्जन पाठ।

प्रश्न 4. पूजन के आठ द्रव्य कौन-कौन से हैं?

उत्तर 1. जल, 2. चन्दन, 3. अक्षत, 4. पुष्प, 5. नैवेद्य, 6. दीप, 7. धूप, 8. फल।

प्रश्न 5. जिनेन्द्र भगवान का अभिषेक करने का अधिकार किन-किन व्यक्तियों को है?

उत्तर 1. जो ब्राह्मण, वैश्य, क्षत्रिय कुल में उत्पन्न हुआ हो।
2. जो शुद्ध शाकाहारी हो, दुर्व्यसनों का पूर्णतः त्यागी हो।
3. जो श्रावक के आठ मूलगुणों का पालन करता है।
4. जिस कुल में लोक निंद्य कार्य, दुराचार, व्यभिचार, आत्मघात, विजाती विवाह व विधवा विवाह आदि कार्य न हुए हों।

5. जो कुष्ट आदि असाध्य रोगों से पीड़ित न हो, अंगोपांग हीनाधिक न हो।

6. जो सच्चे देव, शास्त्र, गुरु का परम भक्त हो, परम श्रद्धालु हो।

प्रश्न 6. जिनेन्द्र भगवान का अभिषेक किस प्रकार करना चाहिए?

उत्तर जिनेन्द्र भक्त को शुद्ध वस्त्र आभूषण पहनकर, शुद्ध प्रासुक जल से जिनेन्द्र भगवान का मस्तक से अभिषेक करना चाहिए, उसके बाद प्रथमतः गीली अंगोछी से (कपड़े से) पुनः सूखे वस्त्र से जिन बिम्ब का अच्छी तरह प्रमार्जन करना चाहिए। श्री जी को वेदिका में यथा स्थान विराजमान कर देना चाहिए।

प्रश्न 7. अभिषेक के बाद क्या करना चाहिए?

उत्तर जिनेन्द्र प्रभु का अर्घ चढायें, तदुपरांत आरती कर विनय पाठ पढ़ना चाहिए।

प्रश्न 8. विनय पाठ को पढ़ने के उपरान्त क्या करना चाहिए?

उत्तर जिन पूजन की पीठिका पढ़ें, तत्पश्चात स्वस्ति पाठ, स्वस्ति मंगल विधान एवं परम ऋषि उपासना का पाठ पढ़कर देव, शास्त्र गुरु की पूजन अष्ट द्रव्य से करनी चाहिए।

प्रश्न 9. जिनेन्द्र भगवान की/देव, शास्त्र, गुरु की पूजन कैसे करनी चाहिए?

उत्तर जिनेन्द्र भगवान की या देव, शास्त्र, गुरु की पूजन आह्वानन, स्थापना तथा सन्निधिकरण करके प्रासुक जल, चन्दन आदि अष्ट द्रव्य से पूजन करना चाहिए।

प्रश्न 10. क्या श्रावक-श्राविका बिना अष्ट द्रव्य के पूजन नहीं कर सकते?

उत्तर श्रावक, श्राविका को सामान्यतया भाव सहित अष्ट द्रव्य से ही पूजन करना चाहिए, सूतक-पातक होने पर पूजन सामग्री उपलब्ध न होने पर बिना द्रव्य के भाव पूजन भी कर सकते हैं।

प्रश्न 11. अभिषेक पूजन आदि कार्य कैसे वस्त्र पहन कर करना चाहिए?

उत्तर जिनेन्द्र भगवान का अभिषेक व पूजन शुद्ध वस्त्रों से करना

चाहिए। वे वस्त्र कटे-फटे, जीर्ण-शीर्ण व छेद युक्त नहीं होने चाहिए। क्योंकि जीर्ण-शीर्ण, गंदे पुराने कपड़ों से पूजन, अभिषेक करने वाला दासी पुत्र होता है।

प्रश्न 12. तब क्या नूतन वस्त्र आभूषणों से सज-धज कर अभिषेक पूजन आदि करना चाहिए?

उत्तर हाँ! ऐसे वस्त्र पहन कर पूजन करें जिससे परिणामों में विशुद्धि वृद्धिंगत हो, मुकुट, हार, कुण्डल, बाजूबन्द आदि भी धारण कर सकते हैं, क्योंकि इस प्रकार इन्द्र का वेष धारण कर अभिषेक पूजन करने से अनन्तर भव में इन्द्र जैसे वैभव की प्राप्ति होती है।

प्रश्न 13. पूजन की द्रव्य कैसी होनी चाहिए?

उत्तर पूजक या उपासक को पूजन की द्रव्य अपनी शक्ति के अनुसार उत्तम से उत्तम चढ़ाना चाहिए। शुद्ध प्रासुक जल, उत्कृष्ट सुगन्धों से युक्त अनेक प्रकार का चन्दन, अखण्ड शुद्ध अक्षत, सुरभित पुष्प, शुद्ध, प्रासुक व मर्यादित खाद्य पदार्थ, घृत या रत्न आदि का उत्तम दीप, शुद्ध दशांगी धूप, रस युक्त नेत्र व चित्त को आकर्षण करने वाला उत्तम फल होना चाहिए। यदि सामर्थ्य हो तो उत्तम रत्नों से, मणि-मुक्ताओं से, चन्द्र कांतमणि के निर्मल जल व रत्न दीपों से, कल्पवृक्ष के पुष्पों से पूजन करना चाहिए।

प्रश्न 14. उत्कृष्ट द्रव्यों से पूजन क्यों करना चाहिए? पूजन द्रव्य तो माली के पास जाती है?

उत्तर जैसे द्रव्य से भगवान की पूजन की जाती है, वैसी ही द्रव्य बहुत गुणित रूप में पूजक को प्राप्त होती है, जैसा त्याग करोगे, वैसा ही फल पाओगे। उत्तम फल के इच्छुक व्यक्ति को उत्तम द्रव्य से पूजन करना चाहिए। उस द्रव्य को कोई भी ग्रहण करे, तुमने तो जिनेन्द्र भगवान के चरणों में समर्पित कर दी है, उस सम्बन्ध में तुम्हें सोचने की आवश्यकता नहीं है।

प्रश्न 15. जिनेन्द्र भगवान की पूजन, धर्मानुष्ठान या शास्त्र प्रकाशन व गुरु उपासना हेतु द्रव्य त्याग का संकल्प लेकर उसे पूर्ण न

कर पायें या देरी से पूर्ण करें तो क्या हमें पाप लगता है?

उत्तर जिनेन्द्र देव की पूजन, शास्त्र प्रकाशन व गुरु उपासना, ध र्मानुष्ठान, तीर्थयात्रा, जिनायतन के निर्माण आदि के लिए संकल्प कर लिया है या वचनों से बोल दिया है तो उस पैसे (द्रव्य) को जल्दी ही, तुरन्त ही दे देना चाहिए, अन्यथा निर्माल्य सेवन का पाप लगता है।

प्रश्न 16. निर्माल्य द्रव्य किसे कहते हैं, इसके सेवन से क्या पाप लगता है?

उत्तर जो द्रव्य धर्मार्थ के लिए संकल्प की जा चुकी है या परोक्ष रूप में धर्म हेतु दी जा चुकी है अथवा देव, शास्त्र, गुरु की पूजा हेतू दी या बोली जा चुकी है, मन्दिर की किसी भी वस्तु व द्रव्य का सेवन या उपयोग करने को निर्माल्य सेवन कहते हैं। इस पाप से वह मनुष्य परभव में नरकादि दुर्गति का पात्र होता है। विकलांग, दरिद्री, अल्पायु, रोगी, इत्यादि दु:खों का पात्र होता है।

प्रश्न 17. अष्ट द्रव्य से भगवान की पूजन के उपरांत क्या करना चाहिए?

उत्तर देव, शास्त्र, गुरु की पूजन के उपरांत, अन्य तीर्थंकरों की, केवली भगवन्तों की, जिनवाणी की, ऋषियों की, निर्वाण क्षेत्रों की, पर्वों की पूजन करनी चाहिए तथा जाप लगाकर जयमाला पढ़ना चाहिए। इसके उपरांत महार्घ पढ़कर, चढ़ाकर शांति पाठ व विसर्जन पाठ भी बोलना चाहिए। यदि मंदिर जी में अन्य वेदियों पर श्री जी विराजमान हैं, तो वहाँ भी अर्घ चढ़ाना चाहिए, जिनवाणी के समक्ष व गुरुदेव के भी दर्शन कर अर्घ चढ़ाकर आना चाहिए, सम्भव हो तो स्वाध्याय व मुनिराजों के प्रवचन भी सुनना चाहिए।

प्रश्न 18. पूजन के उपरान्त घर लौटते समय क्या भावना आनी चाहिए व क्या बोलते हुए प्रस्थान करना चाहिए?

उत्तर घर लौटते समय शांत चित्त से पुन: पुन: जिनेन्द्र देव के दर्शन की भावना आनी चाहिए तथा अस्सहि:-अस्सहि:-अस्सहि: बोलना चाहिए। श्री जिनेन्द्र देव को पीठ करके नहीं लौटना चाहिए।

अध्याय 5

देव पूजन

''जलाभिषेक व प्रक्षाल पाठ''

दोहा जय-जय भगवते सदा, मंगल मूल महान।
वीतराग सर्वज्ञ प्रभु, नमौं जोरि जुगपान।।
श्री जिन शासन जग में ऐसा को बुधवंत जू,
जो तुम गुण वरननि कर पावै अंत जू।
इंद्रादिक सुर चार ज्ञानधारी मुनि,
कहि न सकै तुम गुणगण हे त्रिभुवन धनी।।
अनुपम अमित तुम गुणनि-वारिधि, ज्यों अलोकाकाश है,
किमि धरै हम उर कोष में सो अकथ-गुण-मणि-राश है।
पै निज प्रयोजन सिद्धि की तुम नाम में ही शक्ति है।
यह चित्त में सरधान यातें नाम ही में भक्ति है।।1।।
ज्ञानावरणी दर्शन, आवरणी भने,
कर्म मोहनीय अंतराय चारों हने।
लोकालोक विलोक्ये केवल ज्ञान में,
इंद्रादिक के मुकुट नये सुरथान में।।
तब इन्द्र जान्यो अवधितैं, उठि सुरन युत वंदत भयो,
तुम पुण्य को प्रेरयो हरी है मुदित धनपति सौं चयो।
अब वेगि जाय रचौ समवसृति, सुफल सुरपद को करौ,
साक्षात् श्री अरहंत के दर्शन करौ कल्मश हरौ।।2।।

ऐसे वचन सुने सुपरति के धनपती,
चल आयो तत्काल मोद धारै अती।
वीतराग छवि देखि शब्द जय-जय चयौ,
दे प्रदच्छिना बार-बार वंदत भयौ।।
अति भक्ति-भीनो नम्र चित्त है समवशरण रच्यौ सही,
ताकी अनूपम शुभ गति को, कहन समरथ कोउ नहीं।
प्राकार तोरण सभामण्डप कनक मणिमय छाजहीं,
नग-जड़ित गंधकुटी मनोहर मध्य भाग विराजहीं।।3।।
सिंहासन तामध्य बन्यौ अद्भुतदिपै,
तापर वारिज रच्यौ प्रभा दिनकर छिपै।
तीन छत्र सिर शोभित, चौसठ चमर जी,
महाभक्ति युक्त ढोरत हैं तहाँ अमर जी।।
प्रभु तरन तारन कमल ऊपर, अन्तरीक्ष विराजिया,
यह वीतराग दशा प्रतच्छ विलोक भविजन सुख लिया।
मुनि आदि द्वादश सभा के भवि जीव मस्तक नाय कैं,
बहुभांति बारंबार पूजै, नमैं गुणगण गाय कैं।।4।।
परमौदारिक दिव्य देह पावन सही,
क्षुधा तृषा चिंता भय गद दूषण नहीं।
जन्म जरामृतु अरति शोक विस्मय नसे,
राग द्वेष निद्रा मद मोह सबै खसे।।
श्रम बिना श्रम जल रहित पावन अमल ज्योति स्वरूप जी,
शरणागति की अशुचिता हरि, करि विमल अनूप जी।
ऐसे प्रभु जी की शांतिमुद्रा का न्वहन जलतै करैं,
''जस'' भक्ति वश मन उक्ति तैं हम भानु ढिग दीपक धरै।।5।।
तुम तो सहज, पवित्र यही निश्चय भयो,
तुम पवित्रता हेतु नहीं मज्ज्न ठयो।
मैं मलीन रागादिक मलतैं है रहो,
महा-मलिन तन से वसु-विधि-वशदुख सहो।।
बीत्यो अनंतो काल यह मेरी अशुचिता ना गई,

तिस-अशुचिता हर एक तुम ही, भरहु वांछा चित्त ठई।
अब अष्ट कर्म विनाश सब मल रोग-रागादिक हरौ,
तनरूप कारा-गेहतैं उद्धार शिव वासा करौ।।6।।
मैं जानत तुम अष्ट कर्म हनि शिव गए,
आवागमन विमुक्त राग-वर्जित भये।
पर तथापि मेरो मनोरथ पूरन सही,
नय प्रमानतैं जानि महा साता लही।।
पापाचरण तजि न्वहन करता चित्त में ऐसे धरूँ,
साक्षात् श्री अरहंत का मानों न्यवहन परसन करूँ।
ऐसे विमल परिणाम होते अशुभ नसि शुभ बंध तैं,
विधि अशुभ नसि शुभ बंधते हैं शर्म सब विधि तासतैं।।7।।
पावन मेरे नयन, भय तुम दरसतैं,
पावन पानि भये तुम चरननि परसतैं।
पावन मन है गयो तिहारे ध्यानतैं,
पावन रसना मानी, तुम गुण गानतैं।।
पावन भई परजाय मेरी, भयो तैं पूरण धनी,
मैं शक्ति पूर्वक भक्ति कीनी, पूर्ण भक्ति नहीं बनी।
धन-धन्य ते बड़भागि भवि तिन नींब शिव घर की धरी,
वर क्षीर सागर आदि जल मणिकुम्भ भर भक्ति करी।।8।।
विधन-सघन-वन-दाह-दहन प्रचंड हो,
मोह-महा-तम-दलन प्रवल मारतण्ड हो।
ब्रह्मा विष्णु महेश, आदि संज्ञा धरो,
जग विजयी जमराज नाश ताको करो।।
आनन्द कारण दुःख निवारण परम मंगल-मय सही,
मौसौ पतित नहिं और तुमसो, पतित-तार सुन्यो नहीं।
चिंतामणि पारस कल्पतरू, एक भव सुखकार जी,
तुम भक्ति नौका जे चढ़े, ते भये भवदधि पार ही।।9।।

दोहा तुम भवदधितैं तिर गये, भये निकल अविकार।
तारतम्य इस भक्ति को, हमें उतारो पार।।10।।

''विनय पाठ''

इस विधि ठाड़ो होय के, प्रथम पढ़ै जो पाठ।
धन्य जिनेश्वर देव तुम, नाशे कर्म जु आठ।।

अनन्त चतुष्टय के धनी, तुम ही हो सिरताज।
मुक्ति वधू के कंत तुम, तीन भुवन के राज।।

तिहुँ जग की पीड़ाहरन भवदधि शोषणहार।
ज्ञायक हो, तुम विश्व के, शिवसुख के करतार।।

हरता अघ अँधियार के, करता धर्म प्रकाश।
थिरता पद दातार हो, धरता निजगुण राश।।

धर्मामृत उस जलधिसों, ज्ञान भानु तुम रूप।
तुमरे चरण सरोज को, नावत तिहुँ जग भूप।।

मैं वन्दों जिनदेव को, कर अति निर्मल भाव।
कर्म बंध के छेदने, और न कछु उपाव।।

भविजन को भव कूपते, तुम ही काढ़नहार।
दीनदयाल अनाथपति, आतम गुण भंडार।।

चिदानन्द निर्मल कियो, धोय कर्मरज मैल।
सरल करी या जगत में, भविजन को शिव गैल।।

तुम पद पंकज पूजते, विघ्न रोग टर जाय।
शत्रु मित्रता को धरैं, विष निरविषता थाय।।

चक्री खगधर इन्द्रपद, मिले आपतें आप।
अनुक्रम करि शिव पद लहैं, नेम सकल हनि पाप।।
तुम बिन मैं व्याकुल भयो, जैसे जल बिन मीन।
जन्म जरा मेरी हरो, करो मोहि स्वाधीन।।
पतित बहुत पावन किये, गिनती कौन करेव।
अंजन से तारे प्रभु,जय-जय-जय जिनदेव।।
थकी नाव भवदधि विषें, तुम प्रभु पार करेव।
खेवटिया तुम हो प्रभु, जय-जय-जय जिनदेव।।
राग सहित जग में रुल्यो, मिले सरागी देव।
वीतराग, भेंट्यो अबै, मेटो राग-कुटेव।।
कित निगोद कित नारकी, कित तिर्यंच अज्ञान।
आज धन्य मानुष भयो, पायो जिनवर थान।
तुमको पूजैं सुरपति, अहिपति नरपति देव।
धन्य भाग्य मेरो भयो, करन लग्यो तुम सेव।।
अशरण के तुम शरण हो, निराधार आधार।
मैं डूबत भव सिंधु में, खेय लगाओ पार।।
इन्द्रादिक गणपति थके, कर विनती भगवान।
अपनो विरद निहारि कैं, कीजे आप समान।।
तुमरी नेक सुदृष्टि तैं, जग उतरत है पार।
हा! हा! डूबो हों, नेक निहार निकार।।
जो मैं कहहूँ और सों, तो न मिटै उरभार।
मेरी तो तोसों बनी, ताते करों पुकार।।
वन्दों पाँचों परमगुरु सुरगुरु वन्दत जास।
विघ्न हरन मंगल करन, पूरन परम प्रकाश
चौबीसों जिनपद नमों, नमों शारदा माय।
शिवमग साधक साधु नमि, रच्यों पाठ सुखदाय।।

''नित्य पूजा प्रारभ्यते''

ॐ नमः सिद्धेभ्यः ॐ नमः सिद्धेभ्यः ॐ नमः सिद्धेभ्यः
ॐ जय जय जय। नमोस्तु नमोस्तु नमोस्तु।
णमो अरिहंताणं, णमो सिद्धाणं, णमो आयरियाणं।
णमो उवज्झायाणं, णमो लोए सव्वसाहूणं॥1॥
ॐ ह्रीं अनादि मूलमंत्रेभ्यो नमः पुष्पाञ्जलि क्षिपामि।
चत्तारि मंगलं अरिहंता मंगलं, सिद्धा मंगलं, साहू मंगलं,
केवलि पण्णतो धम्मो लोगुत्तमा।
चत्तारि लोगुत्तमा, अरिहंता, लोगुत्तमा, सिद्धा लोगुत्तमा।
साहू लोगुत्तमा, केवलिपण्णत्तो धम्मो लोगुत्तमा।
चत्तारि सरणं पव्वज्जामि-अरिहंते सरणं पव्वज्जामि,
सिद्धे सरणं पव्वज्जामि,
साहू सरणं पव्वज्जामि, केवलि पण्णत्तं धम्मं सरणं पवज्जामि॥
(ॐ नमोऽर्हते स्वाहा, पुष्पाञ्जलिं क्षिपामि)
अपवित्रः पवित्रो वा, सुस्थितो दुःस्थितोऽपि वा।
ध्यायेत्पंच-नमस्कारं, सर्व पापैः प्रमुच्यते॥1॥
अपवित्रः पवित्रो वा सर्वावस्थां गतोऽपि वा।
यः स्मरेत्परमात्मानं स बाह्याभ्यंतरे शुचिः॥2॥
अपराजित मंत्रोऽयंसर्व विघ्न विनाशनः।
मंगलेषु च सर्वेषु, प्रथमं मंगलं मतः॥3॥
एसो पञ्च णमोयारो, सव्व पावप्पणासणो।
मंगलाणं च सव्वेसिं, पढ़मं होइ मंगलं॥4॥

अर्हमित्यक्षरं, ब्रह्म, वाचकं परमेष्ठिनः।
सिद्धचक्रस्य सद्बीजं, सर्वतः प्रणमाम्यहम्॥5॥
कर्माष्टक विनिर्मुक्तं मोक्ष लक्ष्मी निकेतनम्।
सम्यक्त्वादि गुणोपेतं सिद्धचक्र नमाम्यहम्॥6॥
विघ्नौधाः प्रलयं यान्ति शाकिनी-भूत पन्नगाः।
विषं निर्विषतां याति स्तूयमाने जिनेश्वरे॥7॥
(पुष्पाञ्जलि क्षिपामि)

पंचकल्याणक का अर्घ्य

उदक-चंदन, तन्दुल-पुष्प-कैश्चरु-सुदीप-सुधूप-फलाघ्यकैः।
धवल-मंगल-गान-रवाकुले जिनगृहे कल्याणमहं यजे॥1॥
ॐ ह्री श्री भगवतो गर्भजन्मतपज्ञाननिर्वाण-पंचकल्याणकेभ्यो अर्घं निर्वपामिति स्वाहा।

पंच परमेष्ठी का अर्घ्य

उदक-चंदन, तन्दुल-पुष्प-कैश्चरु-सुदीप-सुधूप-फलार्घकैः।
धवल-मंगल-गान-रवाकुले जिनगृहे जिनानाथ महं यजे॥2॥
ॐ ह्रीं श्री अर्हत-सिद्धाचार्योपाध्याय-सर्वसाधुभ्यो ध्यं निर्वपामिति स्वाहा।

श्री जिन सहस्त्रनाम का अर्घ्य

उदक-चंदन, तन्दुल-पुष्प-कैश्चरु-सुदीप-सुधूप-फलाध्यकैः।
धवल-मंगल-मान-रवाकुले जिनगृहे जिननाममहं यजे॥3॥
ॐ ह्रीं श्री भगवज्जिन अष्टाधिकसहस्त्रनामेभ्योऽर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पूजा प्रतिज्ञा पाठ

श्रीमज्जिनेन्द्र-मभिवंद्य जगत्रयेशं,
स्याद्वाद नायकमनन्त-चतुष्टयार्हम्।
श्री मूल संघ-सुदृशां सुकृतैक हेतुर-
जैनेन्द्र यज्ञ-विधिरेष मयाऽभ्यधायि॥1॥
स्वस्ति त्रिलोक-गुरुवे जिन पुंगवाय,
स्वस्ति स्वभाव महिमोदय-सुस्थिताय।

स्वस्ति प्रकाश-सहजोर्ज्जित दृड़ं मयाय,
स्वस्ति-प्रसन्न-ललिताद्भुत-वैभवाय।।2।।
स्वस्त्युच्छलद्विमल-बोध-सुधा-प्लवाय,
स्वस्ति स्वभाव-परभाव-विभासकाय।
स्वस्ति त्रिलोक-विततैक-चिदुद्गमाय,
स्वस्ति त्रिकाल-सकलायत-विस्तृताय।।3।।
द्रव्यस्य शुद्धिमधिगम्य यथानुरूपं,
भावस्य शुद्धिमधिकामधिगन्तुकामः।
आलम्बनानि विविधान्यवलम्ब्य वल्गन्
भूतार्थ-यज्ञ-पुरुषस्य करोमि यज्ञं।।4।।
अर्हत्पुराण पुरुषोत्तम पावनानि,
वस्तून्यनूनमखिलान्ययमेक एव।
अस्मिन्ज्वल-द्विमल-केवल-बौध वह्नौ,
पुण्यं समग्रमहमेकमना जुहोमि।।5।।

ॐ विधियज्ञप्रतिज्ञानाय जिनप्रतिमाग्रे पुष्पांजलिं क्षिपामि।

श्री वृषभो नः स्वस्ति, स्वस्ति श्री अजितः।
श्री सम्भव स्वस्ति, स्वस्ति श्री अभिनन्दनः।।
श्री सुमति स्वस्ति, स्वस्ति श्री पद्मप्रभः।
श्री सुपार्श्व स्वस्ति, स्वस्ति श्री चन्द्रप्रभः।।
श्री पुष्पदंत स्वस्ति, स्वस्ति श्री शीतलः।
श्री श्रेयान् स्वस्ति, स्वस्ति श्री वासपूज्यः।
श्री विमल स्वस्ति, स्वस्ति श्री अनन्तः।
श्री धर्मः स्वस्ति, स्वस्ति श्री शान्तिः।
श्री कुन्थुः स्वस्ति, स्वस्ति श्री अरनाथः।
श्री मल्लिः स्वस्ति, स्वस्ति श्री मुनिसुव्रतः।।
श्री नमिः स्वस्ति, स्वस्ति श्री नेमिनाथः।
श्री पार्श्वः स्वस्ति, स्वस्ति श्री वर्द्धमान।।
इति जिनेन्द्र स्वस्तिमंगलविधानं। (पुष्पांजलिं क्षिपामि)

परमर्षि स्वस्ति मंगल पाठ

नित्याप्रकम्पाद्भुत केवलौद्याः स्फुरन्मनः पर्यय-शुद्धबोधाः।
दिव्यावधिज्ञान बलप्रबोधाः स्वस्ति क्रियासुः परमर्षयो नः।।1।।
कोष्ठस्थ धान्योपममेक बीजं संभिन्नसंश्रोतृ पदानुसारि।
चतुर्विधं बुद्धिबलं दधानाः स्वस्ति क्रियासु परमर्षयो नः।।2।।
संस्पर्शनं संश्रवणं च दूरादास्वाद न घ्राण विलोकनानि।
दिव्यान्मतिज्ञान बलाद्वहन्तः स्वस्ति क्रियासुः परमर्षयो नः।।3।।
प्रज्ञाप्रधानाः श्रमणाः समृद्धाः प्रत्येकबुद्धाः दशसर्व पूर्वैः।
प्रवादिनोऽष्टांग-निमित्त विज्ञाः स्वस्ति क्रियासुः परमर्षयो नः।।4।।
जंघानल-श्रेणी-फलाम्बु-तन्तु-प्रसून-बीजांकुर-चारणाह्वाः।
नमोऽङ्गण-स्वैर-विहारिणश्च-स्वस्ति क्रियासुः परमर्षयो नः।।5।।
अणिम्नि दक्षाः कुशलाः महिम्नि लघिम्नि शक्ताः कृतिनो गरिम्णि।
मनोवपुर्वाग्बलिनश्च नित्यं स्वस्ति क्रियासु परमर्षयो नः।।6।।
सक्रामरुपित्व वशित्वमैश्यं प्राकाम्य-मन्तर्द्धिमथाप्तिमाप्ताः।
तथाऽप्रतीघात-गुणप्रधानाः स्वस्ति क्रियासु परमर्षयो न।।7।।
दीप्तं च तप्तं च तथा महोग्रं घोरं तपो घोर पराक्रमस्थाः।
ब्रह्मपरं घोरगुणाश्चरन्तः स्वस्ति क्रियासु परमर्षयो नः।।8।।
आमर्ष सर्वोषधयस्तथाशी-र्विषा-बिषा दृष्टि विषा विषाश्च।
सखिल्ल विड्जल्ल मलौषधीशाः स्वस्ति क्रियासु परमर्षयो नः।।9।।
क्षीरं स्रवन्तोऽत्र घृतं स्रवन्तो मधु स्रवन्तोऽप्यमृतं स्रवन्तः।
अक्षीण संवास महानसाश्च स्वस्ति क्रियासु परमर्षयो नः।।10।।

इति परमर्षि स्वस्ति मंगल-विधानं पुष्पांजलि क्षिमामि
श्री देव शास्त्र-गुरु, विदेह क्षेत्र विद्यमान बीस तीर्थंकर
तथा श्री अनन्तानन्त सिद्ध परमेष्ठी की समुच्चय पूजा

दोहा **देव शास्त्र गुरु नमन करि, बीस तार्थंकर ध्याय।**
सिद्ध शुद्ध राजत् सदा, नमूं चित्त हुलसाय॥

ॐ ह्रीं देवशास्त्र गुरु समूह! श्री विद्यमान विशंति तीर्थंकर समूह! श्री अनंतानन्त सिद्ध परमेष्ठी समूह! अत्रावतरावतर संवौषट्!

अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनम्।

अत्र मम सन्निहितो भव-भव वषट् सन्निधि-करणम्।

अनादि काल से जग में स्वामिन् जल से शुचिता को माना।
शुद्ध निजातम सम्यक् रत्नत्रय, निधि को नहिं पहचाना।।
अब निर्मल रत्नत्रय जल ले, श्री देव शास्त्र गुरु को ध्याऊँ।
विद्यमान श्री बीस तीर्थंकर, सिद्ध प्रभूजी के गुण गाऊँ।।

ॐ ह्रीं श्री देव शास्त्र-गुरुभ्यः श्री विद्यमान विंशति-तीर्थंकरेभ्यः श्री अनंतानन्त सिद्ध परमेष्टिभ्यो, जन्म जरा मृत्यु विनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहाः।।1।।

भव आताप मिटावन की निज में ही क्षमता समता है।
अनजाने अब तक मैंने, पर में की झूठी ममता है।।
चन्दन सम शीतलता पाने, श्री देवशास्त्र गुरु को ध्याऊँ।।
विद्यमान ....।। चन्दनं।।3।।

अक्षय पद के बिन फिरा जगत की लख चौरासी योनि में।
अष्ट कर्म के नाश करन को, अक्षत, तुम ढिंग लाया मैं।।
अक्षय निधि निज की पाने को, श्री देव शास्त्र गुरु को ध्याऊँ।।
विद्यमान ....।।अक्षतं।।3।।

पुष्प सुगन्धी से आतम ने, शील स्वभाव नशाया हैं।
मन्मथ बाणों से बिंध कर के चहुँ गति दुःख उपजाया है।
स्थिरता निज में पाने के, श्री देव शास्त्र गुरु को ध्याऊँ।
विद्यमान ....।। पुष्प।।4।।

षट रस मिश्रित भोजन से, ये भूख न मेरी शान्त हुई।
आतम रस अनुपम चखने से, इन्द्रिय मन इच्छा शमन हुई।
सर्वथा भूख के मेटन को, श्री देव शास्त्र गुरु को ध्याऊँ।।
विद्यमान ....।। नैवेद्यं।।5।।

जड़ दीप विनश्वर को अब तक समझा था मैंने उजियारा।
निज गुण दरशायक ज्ञान दीप से मिटा मोह का अंधियारा।
ये दीप समर्पित करके मैं, श्री देव शास्त्र गुरु को ध्याऊँ।।
विद्यमान ....।। दीपं।।6।।

ये धूप अनल में खेने से, कर्मों को नहीं जलायेगी।
निज में निज की शक्ति ज्वाला जो राग द्वेष नसायेगी।
उस शक्ति दहन प्रकटाने को, श्री देव शास्त्र गुरु को ध्याऊँ।।
विद्यमान ....।। धूपं।।7।।

पिस्ता बादाम श्रीफल लंवग, चरणन तुम ढिंग मैं ले आया।
आतम रस भीने निज गुण फल मम मन अब उनमें ललचाया।।
अब मोक्ष महाफल पाने को, श्री देव शास्त्र गुरु को ध्याऊँ।।
विद्यमान ....।। फलं।।8।।

अष्टम वसुधा पाने को, कर में ये आठों द्रव्य लिए।
सहज शुद्ध स्वाभविकता से, निज में निज गुण प्रकट किए।
ये अर्घ समर्पण करके मैं श्री देव शास्त्र गुरु को ध्याऊँ।।
विद्यमान ....।। अर्घ्यं।।9।।

दोहा **देवशास्त्र गुरु बीस तीर्थंकर, सिद्ध प्रभु भगवान।**
अब वरणूं जय मालिका, करूँ स्तवन गुणगान।।

जयमाला

नसे घातिया कर्म अर्हंत देवा, करे सुर-असुर नर-मुनि नित्य सेवा।
दरश ज्ञान सुख बल अनन्त के स्वामी, छियालीस गुणयुक्त महा ईश नामी।
तेरी दिव्य वाणी सदा भव्य मानी, महा मोह विध्वंसिनी मोक्षदानी।
अनेकान्तमय द्वादशांगी बखानी, नमो लोक माता श्री जैन वाणी।।
विरागी आचाारज उवज्झाय साधू, दरश ज्ञान भण्डार समता अराधू।
नगन वेशधारी सु एका विहारी, निजानन्द मंडित मुक्ति पथ प्रचारी।।
विदेह क्षेत्र में तीर्थंकर बीस राजे, विरहमान बंदू सभी पाप भाजे।
नमूं सिद्ध निर्भय निरामय सुधामी, अनाकुल समाधान सहजाभिरामी।।

छन्द देवशास्त्र वीस तीर्थंकर, सिद्ध हृदयबिच धर ले रे।

पूजन ध्यान गान गुण करके, भव सागर जिय तरले रे।।पूर्णार्घ्यं।।

कृत्याकृत्रिम चैत्यालयों के अर्घ्य

भूत-भविष्यत-वर्तमान की, तीस चौबीसी में ध्याऊँ।
चैत्य चैत्यालय कृत्रिमाकृत्रिम, तीन लोक के मन लाऊँ।।
ॐ ह्री श्री त्रिकाल सम्बन्धी तीस चौबीसी त्रिलोक सम्बन्धी
कृत्रिमा-कृत्रिम तीन लोक में, राजत है जिन बिम्ब अनेक।
चतुर निकाय के देव जजूँ ले, अष्ट द्रव्य निज भक्ति समेत।
निज शक्ति अनुसार जजूँ, मैं, कर समाधि पाऊँ शिव खेत।।
ॐ ह्रीं श्री कृत्रिमाकृत्रिम चैतयालय सम्बन्धि जिन बिम्बेभ्योअर्घ्यं निर्व.।
पूर्व मध्य अपराह्न की बेला, पूर्वाचार्यों के अनुसार।
देव वन्दना करू भाव से, सकल कर्म की नाशन हार।
पंच महागुरु सुमरन कर के, कायोत्सर्ग करूँ सुखकार।
सहज स्वभाव शुद्ध लख अपना, जाऊँगा अब मैं भव पार।।
(पुष्पांजलि क्षिपामि)
(नौ बार णमोकार मंत्र का जाप करें)

समुच्चय महार्घ

मैं देव श्री अरहंत पूजूँ सिद्ध पूजूँ चाव सों।
आचार्य श्री उवज्झाय पूजूँ साधु पूजूँ भाव सों।।1।।
अर्हन्त-भाषित बैन पूजूँ द्वादशांग रचे गनी।
पूजूँ दिगम्बर गुरुचरण शिव हेतु सब आशा हनी।।2।।
सर्वज्ञ भाषित धर्म दशविधि दयामय पूजूँ सदा।
जजुँ भावना षोडश रत्नत्रय, जा बिना शिव नहिं कदा।।3।।
त्रैलोक्य के कृत्रिम अकृत्रिम चैत्य चैत्यालय जजूँ।
पन मेरु नन्दीश्वर जिनालय खचर सुर पूजित भजूँ।।4।।
कैलाश श्री सम्मेद श्री गिरनार गिरि पूजूँ सदा।
चम्पापुरी पावापुरी पुनि और तीरथ सर्वदा।।5।।

चौबीस श्री जिनराज पूजूँ बीस क्षेत्र विदेह के
नामावली इक सहस-बसु जपि होय पति शिव गेह के।।6।।

दोहा जल गंधाक्षत पुष्प चरु, दीप धूप फल लाय।
सर्व पूज्य पद पूज हूँ, बहुविधि भक्ति बढ़ाय।।

ॐ ह्रीं श्रीं भाव पूजा, भाव वंदना, त्रिकाल पूजा, त्रिकाल वंदना, करे करावे, भावना भावे, श्री अरहंत जी, सिद्ध जी, आचार्य श्री, उपाध्याय जी, सर्व साधु जी पंच परमेष्ठिभ्यो नम', प्रथमानुयोग-करणानुयोग-चरणानुयोग-द्रव्यानुयोगेभ्यो नमः, दर्शन विशुद्धयादि षोडश कारणेभ्यो नमः, उत्तम क्षमादि दशलक्षण धर्मेभ्यो नमः, सम्यग्दर्शन-सम्यग्ज्ञान सम्यक्- चारित्रेभ्यो नमः, जल के विषै थल के विषै आकाश के विषै गुफा के विषै नगर नगरी विषैं ऊर्द्धलोक अधो लोक विषैं विराजमान कृत्रिम अकृत्रिम जिन चैत्य चैत्यालय जिन बिम्बेभ्यो नमः, विदेह क्षेत्रे विद्यमान बीस तीर्थंकरेभ्यो नमः। पाँच भरत, पाँच ऐरावत, दश क्षेत्र सम्बन्धी तीस चौबीसी के सात सौ बीस जिनराजेभ्यो नमः, नन्दीश्वर द्वीप सम्बन्धी बावन जिन-चैत्यालयस्थ जिनबिन्बेभ्यो नमः, पंचमेरू सम्बन्धी अस्सी जिन चैत्यालस्थ जिनबिम्बेभ्यो नमः, सम्मेद शिखर, कैलाश चम्पापुर, पावापुर, गिरिनार, सोनागिरि, मथुरा, तारंगा आदि सिद्ध क्षेत्रेभ्यो नमः, जैनब्रद्री मूढ़वद्री, देवगढ़, चन्देरी, पपौरा, हस्तिनापुर, अयोध्या, राजगृही, चमत्कार जी, श्री महावीर जी, पद्मपुरी, तिजारा आदि अतिशय क्षेत्रेभ्यो नमः, श्री चारण ऋद्धिधारी सप्त परमर्षिभ्यो नमः।

ॐ ह्रीं श्रीमतं भगवतं कृपालवतं श्री वृषभादि महावीर पर्यंत चतुर्विंशति तीर्थंकर परमदेव आद्यानां आद्ये जम्बू-द्वीपे भरत क्षेत्रे आर्य खंडे भारतदेशे... नाम्नि नगरे मासानउ... मासे, शुभे पक्षे शुभ ... तिथौ ... वासरे मुनि आर्यिकानां श्रावक श्राविकानां सकल कर्म क्षयार्थं (जलधार) अनर्घ्यपद प्राप्तये महार्घं निर्विपामीति स्वाहा।

शान्ति पाठ

शास्त्रोक्त विधि पूजा महोत्सव सुरपति चक्री करें।
हम सारिखे लघु पुरुष कैसे यथाविधि पूजा करें।।

धन क्रिया ज्ञान 'रहित न जानें रीति पूजन नाथ जी।
हम भक्ति वश तुम चरण आगे जोड़ लीने हाथ जी।।1।।
दुःख हरण मंगल करण आशा भरन जिन पूजा सही।
यों चित्त में सरधान मेरे शक्ति है स्वयमेव ही।।
तुम सारिखे दातार पाए काज लघु जाचूँ कहाँ।
मुझ आप सम कर लेहु स्वामी यही एक बांछा महा।।2।।
संसार भीषण विपिन में वसुकर्म मिल आतापियो।
तिसदाह तें आकुलित चित है शांति थल कहुँ ना लियो।।
तुम मिले शांतिस्वरूप शांति करण समरथ जगपति।
वसु कर्म मेरे शांत कर दो शांतिमय पंयम गति।।3।।
जबलों नहीं शिव लहुँ तबलों देहु यह तन पावना।
सतसंग शुद्धचरण श्रुत अभ्यास आतम भावना।।
तुम बिना अनंतानंत काल गयौ रुलत जगजाल में।
अब शरण आयो नाथ दोउ कर जोड़ नावत भाल मैं।।4।।

दोहा **कर प्रमाण के मान तैं गगन नपे किहि भंत।**
त्यौं तुम गुण वर्णन करत कवि पावै नहीं अंत।।

(यहाँ पर कायोत्सर्ग पूर्वक नौ बार णमोकार मंत्र जपना चाहिए)

विसर्जन पाठ

सम्पूर्ण विधिकर वीनऊँ इस परम पूजन ठाठ में।
अज्ञानवश शास्त्रोक्त विधि तें चूक कीनो पाठ में।।
सो होहू पूर्ण समस्त विधिवत-तुम चरण की शरणतै।
वंदो तुम्हे कर जोरिकें उद्धार जामन मरणतैं।।1।।
आह्वानन स्थापन तथा सन्निधिकरण विधान जी।
पूजन विसर्जन यथाविधि जानू नहीं गुणगान जी।।

जो दोष लागो सो नशो सब तुम चरण की खरणतें।
वंदो तुम्हे कर जोरि कर उद्धार जामन मरणतें।।2।।
तुम रहित आवागमन आह्वानन कियो निज भाव में।
विधि यथाक्रम निजशक्ति समपूजन कियो अतिचाव में।।
करहुँ विसर्जन भाव ही में तुम चरण की खरणतें।
वंदों तुम्हें कर जोरि कर उद्धार जामान मरणतें।।3।।

दोहा तीन भुवन तिहुँ काल में, तुमसा देव न और।
सुख कारण संकट हरण, नमो 'जुगल' कर जोर।।

इत्याशीर्वाद (पुष्पांजलि क्षिपेत)

आशिका लेने का पद

दोहा श्री जिनवर की आशिका, लीजे शीश चढ़ाय।
भव भव के पातक कटें, दु:ख दूर हो जाय।।

अध्याय 6

''लेश्या''

प्रश्न 1. लेश्या किसे कहते हैं?

उत्तर कषाय से अनुरंजित योग की प्रवृत्ति को लेश्या कहते है। अथवा जो आत्मा का लेपन करे वह लेश्या है अथवा मिथ्यात्व, असंयम, कषाय व योग लेश्या रूप है।

प्रश्न 2. लेश्या के मुख्य कितने व कौन-कौन से भेद हैं?

उत्तर लेश्या के मुख्य दो भेद हैं 1. भाव लेश्या, 2. द्रव्य लेश्या अथवा, 1. शुभ लेश्या, 2. अशुभ लेश्या इस प्रकार भी दो भेद हैं।

प्रश्न 3. द्रव्य लेश्या और भाव लेश्या की परिभाषा बताइए।

उत्तर आत्मा के परिणाम जो कषायादि से अनुरंजित है वह भाव लेश्या है, अथवा अंतरंग के भावों का जो रंग है वह भाव लेश्या है। तथा शरीर के वर्ण का नाम द्रव्य लेश्या है।

प्रश्न 4. शुभ तथा अशुभ लेश्या क्या है, तथा उसके कौन-कौन से भेद हैं?

उत्तर जो लेश्या शुभ परिणामों से युक्त है अथवा पुण्य बंध रूप आत्मा के परिणाम जो कषाय की मंदता से होते हैं वह शुभ लेश्या हैं।

इसके विपरीत पाप बंध रूप आत्मा के परिणाम जो कषाय की तीव्रता से होते है। वह अशुभ लेश्या हैं। दोनों लेश्या के तीन-तीन भेद होते हैं।

प्रश्न 5. शुभ लेश्या के तीन भेद कौन-कौन से हैं?

उत्तर 1. पीत लेश्या, 2. पद्म लेश्या, 3. शुक्ल लेश्या।

प्रश्न 6. पीत लेश्या किसे कहते हैं?

उत्तर जो अपने कर्त्तव्य-अकर्त्तव्य, सेव्य-असेव्य को जानता हो, समदर्शी हो, दया, दान में रत मृदु स्वभावी हो, वह पुरुष पीत लेश्या वाला होता है, अथवा शुभ संकल्प में दृढ़ता, मित्रता, दयालुता, सत्यवादिता, दान शीलत्व, स्वकीर्य पटुता, सर्व धर्म, समदायित्व, पीत लेश्या के लक्षण हैं।

प्रश्न 7. पद्म लेश्या वाले पुरुष के क्या लक्षण हैं?

उत्तर जो त्यागी हो, चोखा (भला) हो, उत्तम काम करने वाला हो, अपराधी को क्षमा करने वाला हो, साधुओं के गुणों की पूजन में निरत हो, वह पद्म लेश्या वाला होता है, अथवा सत्यवादिता, क्षमा, सात्विक, दान, पाण्डित्य व देश-शास्त्र गुरु की पूजन में रुचि इत्यादि पद्म लेश्या वाले के लक्षण होते हैं।

प्रश्न 8. शुक्ल लेश्या वाले पुरुष में कौन-कौन से लक्षण होते हैं?

उत्तर जो पक्षपात से रहित होते हों, निदान से रहित हों, समव्यवहारी, राग-द्वेष रहित परम वात्सल्य से युक्त हों वह शुक्ल लेश्या वाला पुरुष होता है। अथवा निर्मल परिणाम वीतरागता, शत्रुओं को भी क्षमा, निंदा रहित चर्या, पाप कार्यों से पूर्ण विरक्ति, आत्म कल्याण के मार्ग में रुचि इत्यादि लक्षण शुक्ल लेश्या वाले पुरुषों में पाये जाते हैं।

प्रश्न 9. अशुभ लेश्या के कौन-कौन से भेद होते हैं?

उत्तर 1. कृष्ण लेश्या, 2. नील लेश्या, 3. कापोत लेश्या।

प्रश्न 10. कृष्ण लेश्या वाले पुरुषों के कौन-कौन से लक्षण होते हैं?

उत्तर तीव्र क्रोधी, बैर को न छोड़ने वाला, झगड़ालू, दयाधर्म से रहित, दुष्ट, किसी के वश में न रहने वालों में कृष्ण लेश्या पाई जाती है और दुराग्रही, अभिमानी, तीव्र बैर युक्त, निर्दयी, दुर्मुख,

निष्ठुरता, क्लेश, संताप, हिंसा, असंतोष आदि कृष्ण लेश्या वाले के लक्षण होते हैं।

प्रश्न 11. नील लेश्या वाले पुरुष में कौन-कौन से लक्षण पाए जाते हैं?

उत्तर बहुत निद्रालु, दूसरों को ठगने में कुशल, परिग्रह संचय में तीव्र लालसावान ये नील लेश्या वाले पुरुष के लक्षण होते हैं, और विषयासक्त, मंद बुद्धि, मानी, आलसी, कायर, मायावी, निद्रालु, लोभांध, परिग्रह संज्ञा की तीव्रता युक्त, असत्य भाषी ये नील लेश्या वाले पुरुष के लक्षण होते हैं।

प्रश्न 12. कापोत लेश्या वाले पुरुष के कौन-कौन से लक्षण होते हैं?

उत्तर मात्सर्य, पैशुन्यता, आत्म प्रशंसक, विवादेच्छुक, जीव नैराश्यता, अपनी प्रशंसा सुन धन देने वाला, युद्ध में मरण का इच्छुक, कर्त्तया-कर्त्तव्य में बोध से हीन, दोष ग्राही, छिद्रोन्वेशी इत्यादि कापोत लेश्या वाले पुरुष के लक्षण होते हैं।

प्रश्न 13. उक्त छह लेश्या में द्रव्य लेश्या का वर्ण कैसा होता है?

उत्तर

1. कृष्ण लेश्या का भौंरे के समान काला होता है।
2. नील लेश्या का नील मणि या मयूर के कण्ठ जैसा होता है।
3. कापोत लेश्या का पाण्डु या कबूतर के समान सलेटी रंग होता है।
4. पीत लेश्या का शुद्ध स्वर्ण के समान, सरसों के पुष्प के समान पीला होता है।
5. पद्म लेश्या का कमल पुष्प के समान अरुण होता है।
6. शुक्ल लेश्या का कांस या कुंद पुष्प के या चन्द्रमा की निर्मल चाँदनी के समान धवल वर्ण होता है।

प्रश्न 14. कौन सी लेश्या वाला जीव मरण कर कहाँ जाता है।

उत्तर

1. कृष्ण लेश्या वाला सातवें नरक तक।
2. नील लेश्या वाला पाँचवें नरक तक।
3. कपोत लेश्या वाला प्रथम नरक तक।
4. पीत लेश्या वाला दूसरे स्वर्ग तक।
5. पद्म लेश्या वाला सहस्रार स्वर्ग तक।
6. शुक्ल लेश्या वाला सर्वार्थ सिद्धि तक।

प्रश्न 15. क्या अलेश्या वाले जीव होते हैं, यदि हाँ तो वे अलेश्या वाले जीव कौन-कौन से हैं?

उत्तर जो कृष्णादि छह लेश्याओं से रहित होते हैं, पंच परिवर्तन रूप संसार से मुक्त हैं, अनन्त सुखी हैं और आत्मोपलब्धि रूप सिद्धपुरी के वैभव को सम्प्राप्त हैं, ऐसे अयोग केवली और सिद्ध जीवों को अलेश्या वाले जानना चाहिए।

प्रश्न 16. छह भाव लेश्याओं को दृष्टांत के द्वारा समझओ?

उत्तर उक्त छह लेश्या वाले क्रमशः छह पथिक वन में मार्ग से भ्रष्ट होकर फलों से परिपूर्ण किसी वृक्ष को देखकर अपने मन में विचार करते हैं और उसके अनुसार वचन कहते हैं।

पहला कृष्ण लेश्या वाला कहता है जड़ मूल से वृक्ष को काटो।

दूसरा नील लेश्या पथिक कहता है स्कंधों को काटो।

तीसरा कपोत लेश्या वाला कहता है शाखाओं को काटो।

चौथा पीत लेश्या वाला पथिक कहता है फलों सहित उपशाखाओं को काटो।

पाँचवां पद्म लेश्या वाला पथिक कहता है फलों के गुच्दे-गुच्छे तोड़ो।

छठवाँ शुक्ल लेश्या वाला पथिक कहता है जमीन पर पड़े हुए फलों को खाकर क्षुधा शांत करो, इस प्रकार वचनों के द्वारा सभी के अलग-अलग भाव प्रकट होते हैं।

प्रश्न 17. ऐसे कौन से जीव हैं, जो लेश्या से रहित हैं?

उत्तर पंच परिवर्तन रूप संसार से रहित, अनन्त सुखी, स्वात्मोलब्धि रूप सिद्धपुरी को सम्प्राप्त अयोग केवली जिन एवं सिद्ध परमेष्ठी लेश्या से रहित हैं।

प्रश्न 18. अपर्याप्त अवस्था में जीव के कितनी द्रव्य लेश्यायें होती हैं?

उत्तर अपर्याप्त अवस्था में जीव के कापोत और शुक्ल ये दो द्रव्य लेश्यायें होती हैं।

अध्याय 7

''ज्ञान''

प्रश्न 1. ज्ञान किसे कहते हैं?

उत्तर जो जानता है, या जिसके द्वारा जाना जाये अथवा जानना मात्र ज्ञान है।

प्रश्न 2. ज्ञान मार्गणा के अनुसार ज्ञान के कितने भेद हैं?

उत्तर ज्ञान मार्गणा के अनुसार ज्ञान के आठ भेद हैं, जिनमें पाँच सम्यक् ज्ञान हैं और तीन मिथ्या ज्ञान हैं।

प्रश्न 3. सम्यक् ज्ञान किसे कहते हैं, और उसके मुख्य कितने भेद होते हैं?

उत्तर वस्तु के यथार्थ व प्रमाणित ज्ञान को सम्यक् ज्ञान कहते हैं अथवा सम्यक् दर्शन के अविनाभावी ज्ञान को सम्यक् ज्ञान कहते हैं। सम्यक् ज्ञान के मुख्य दो भेद हैं

1. प्रत्यक्ष ज्ञान, 2. परोक्ष सम्यक्।

प्रश्न 4. प्रत्यक्ष ज्ञान किसे कहते हैं, इसके कितने व कौन-कौन से भेद हैं?

उत्तर विशद व निर्मल ज्ञान को प्रत्यक्ष ज्ञान कहते हैं, इसके मुख्य दो भेद हैं

1. एक देश प्रत्यक्ष, 2. सकल देश प्रत्यक्ष।

प्रश्न 5. एक देश प्रत्यक्ष ज्ञान के कितने व कौन-कौन से भेद हैं?

उत्तर 1. अवधि ज्ञान, 2. मन:पर्याय ज्ञान

प्रश्न 6. अवधि ज्ञान किसे कहते हैं, इसके कितने व कौन-कौन से भेद हैं?

उत्तर द्रव्य, क्षेत्र, काल, भाव का मर्यादा को लिए हुए जो रूपी पदार्थों को एक देश प्रत्यक्ष जानता है, वह अवधि ज्ञान है। इसके मुख्य दो भेद हैं 1. भव प्रत्यय, 2. गुण प्रत्यय।

प्रश्न 7. भव प्रत्यय व गुण प्रत्यय अवधि ज्ञान किसे कहते हैं?

उत्तर भव ही जिस अवधि ज्ञान की उत्पत्ति का कारण है, ऐसा समस्त देव और नारकीयों का अवधि ज्ञान भव प्रत्यय अवधि ज्ञान कहलाता है तथा क्षयोपशम जिसमें कारण है ऐसा मनुष्य व तिर्यंचों के प्रकट हुआ अवधि ज्ञान गुण प्रत्यय अवधि ज्ञान है।

प्रश्न 8. क्या इसके अतिरिक्त अवधि ज्ञान के अन्य भी भेद सम्भव हैं, यदि हाँ तो वे कौन-कौन से हैं?

उत्तर अवधि ज्ञान के क्षयोपशम की अपेक्षा तीन भेद हैं
1. देशावधि ज्ञान, 2. परमावधि ज्ञान, 3. सर्वावधि ज्ञान।
अन्य अपेक्षा से छह भेद भी होते हैं 1. अनुगामी, 2. अननुगामी, 3. वर्धमान, 4. हीयमान, 5. अवस्थित, 6. अनवस्थित।

प्रश्न 9. उपरोक्त सभी अवधि ज्ञानों की परिभाषायें/विशेषतायें बताइये?

उत्तर 1. देशावधि समस्त देव और नारकी जीवों का अवधि ज्ञान तथा क्षयोपशमिक/गुण प्रत्यय तिर्यंच मनुष्य का सामान्य अवधि ज्ञान, देशावधि अवधि ज्ञान होता है।

2. परमावधि द्रव्य, क्षेत्र, काल, भाव की अपेक्षा यह अवधि ज्ञान उत्कृष्ट होता है तथा यह अवधि ज्ञान चरम शरीरी मुनियों के ही होता है।

3. सर्वावधि समस्त द्रव्य, क्षेत्र, काल, भाव को विषय करने वाला उत्कृष्ट अवधि ज्ञान है, यह भी चरम शरीर मुनिराजों के होता है। अन्य प्रकार से अवधि ज्ञान के छह भेद किये हैं,

उनकी परिभाषा व विशेषता इस प्रकार है

(अ) अनुगामी जो भव से भावान्तर में व क्षेत्र से क्षेत्रान्तर में जीव के साथ जाये वह अनुगामी अवधि ज्ञान होता है। इसके क्षेत्रानुगामी, भवानुगामी, उभयानुगामी की अपेक्षा से तीन भेद हैं।

(ब) अननुगामी जो भव से भावान्तर में व क्षेत्र से क्षेत्रान्तर में जीव के साथ नहीं जाता, वह अननुगामी अवधि ज्ञान होता है। इसके भी तीन भेद हैं 1. क्षेत्रानुगामी, 2. भवाननुगामी, 3. उभयाननुगामी।

(स) वर्धमान जो अवधि ज्ञान जंगल की अग्नि की तरह या शुक्ल पक्ष के चन्द्रमा की कलाओं की तरह निरन्तर बढ़ता ही रहे वह वर्धमान अवधि ज्ञान होता है।

(द) हीयमान जो अवधि ज्ञान कृष्ण पक्ष के चाँद की तरह अथवा भुज्यमान आयु की तरह घटता ही जाये वह अवधि ज्ञान हीयमान अवधि ज्ञान होता है।

(न) अवस्थित अवधि ज्ञान जो अवधि ज्ञान शरीर में विद्यमान तिल आदि की तरह या सूर्य के विमान के समान ज्यों का त्यों रहता है, न कभी बढ़ता है न कभी घटता है वह अवस्थित अवधि ज्ञान है।

(प) अनवस्थित अवधि ज्ञान जो अवधि ज्ञान नदी में उठने वाली लहरों की तरह कभी बढ़ता है कभी घटता है अथवा हवा में रखे जाज्वल्यमान दीपक की ज्योति की तरह हीनाधिक होता रहता है वह अनवस्थित अवधि ज्ञान कहलाता है।

प्रश्न 10. मनःपर्यय ज्ञान किसे कहते हैं?

उत्तर द्रव्य, क्षेत्र, काल, भाव की मर्यादा लिए हुए दूसरे के मन के विचारों को जो ज्ञान स्पष्ट जानता है, वह मनःपर्यय कहलाता है।

प्रश्न 11. मनःपर्यय ज्ञान के कितने व कौन-कौन से भेद हैं, विशेषता सहित बताओ?

उत्तर मनःमर्यय ज्ञान के दो भेद हैं 1. ऋजुमति मनःपर्यय ज्ञान, 2. विपुलमति मनः पर्यय ज्ञान।

1. ऋजुमति मन:पर्यय ज्ञान जो ज्ञान किसी प्राणी के मन में विद्यमान सरल विचारों को जानता है, वह ''ऋजुमति मन:पर्यय पर्यय ज्ञान'' होता है।

2. विपुलमति मन:पर्यय ज्ञान जो ज्ञान किसी प्राणी के मन में विद्यमान सरल व वक्र दोनों प्रकार के विचारों को एक देश प्रत्यक्ष जानता है, उसे विपुलमति मन:पर्यय ज्ञान कहते हैं।

प्रश्न 12. केवल ज्ञान किसे कहते हैं, इसके कितने व कौन-कौन से भेद हैं?

उत्तर जो ज्ञान समस्त लोकाकाश व अलोकाकाश में विद्यमान त्रैकालिक समस्त द्रव्य, गुण व पर्यायों को युगपत्, सर्वदेश प्रत्यक्ष जानता है, वह केवल ज्ञान है, इसके अन्य कोई भी भेद नहीं होते।

प्रश्न 13. परोक्ष ज्ञान किसे कहते हैं, इसके कौन-कौन से भेद हैं?

उत्तर जो ज्ञान इन्द्रिय, मन, आलोक, आगम आदि के निमित्त से होता है वह परोक्ष ज्ञान कहलाता है। इसके दो भेद हैं 1. मतिज्ञान, 2. श्रुत ज्ञान।

प्रश्न 14. मति ज्ञान किसे कहते हैं, इसके मुख्य कितने व कौन-कौन से भेद हैं?

उत्तर इन्द्रिय और मन की सहायता से होने वाला ज्ञान, मतिज्ञान कहलाता है। इसके मुख्य चार भेद हैं 1. अवग्रह, 2. ईहा, 3. अवाय, 4. धारणा।

प्रश्न 15. उक्त चारों ज्ञान की परिभाषा बताओ तथा मति ज्ञान के कुल भेद भी बताओ?

उत्तर **1. अवग्रह ज्ञान** इन्द्रिय और पदार्थ के दर्शन के अनन्तर/कुछ है, इस सन्निकर्ष ज्ञान को अवग्रह ज्ञान कहते हैं। इसके दो भेद हैं (अ) अर्थावग्रह, (ब) व्यंजनावग्रह।

(अ) अर्थावग्रह सर्व इन्द्रिय व मन से होता है।

(ब) व्यंजनावग्रह नेत्र इन्द्रिय व मन को छोड़कर शेष चारों इन्द्रियों से होता है। व्यंजनावग्रह के ईहादिक नहीं होते। दोनों ही अवग्रहादि बारह प्रकार के पदार्थों को अपना विषय बनाते हैं।

2. ईहा ज्ञान वह क्या है? वे पदार्थ ऐसा है या वैसा है,इस प्रकार जिज्ञासा रूप ज्ञान को ईहा ज्ञान कहते हैं। आकाश में कुछ दिखा ये बगुला की पंक्ति है या ध्वजा है ऐसा जिज्ञासा रूप अनिर्णीति

ज्ञान ईहा ज्ञान कहलाता है।

3. अवाय ज्ञान इन्द्रिय व मन के द्वारा निर्मित हुए ज्ञान को अवाय ज्ञान कहते हैं। जैसे यह तो ध्वजा है जो हवा से फहरा रही है, मंदिर के शिखर पर लगी है।

4. धारणा ज्ञान अवाय ज्ञान से निर्णीत ज्ञान को कालान्तर में नहीं भूलना, दीर्घकाल तक धारण में विद्यमान रहना, धारणा ज्ञान कहलाता है।

मति ज्ञान के कुल तीन सौ छत्तीस भेद होते हैं। पाँच इन्द्रिय व मन के अवग्रह आदि चार प्रकार से होता है तथा बारह प्रकार के पदार्थों का होता है। अत: अर्थावग्र सम्बन्धी मति ज्ञान के दो सौ अट्ठासी भेद हुए हैं। $6 \times 4 \times 12 = 288$\व्यंजनावग्रह के अड़तालीस भेद होते हैं। 1 (अवग्रह) $\times$ 4 (इन्द्रियाँ) $\times$ 12 (बारह प्रकार के पदार्थ) = 48 कुल मिलाकर मति ज्ञान के 288 + 48 = 336 भेद होते हैं।

प्रश्न 16. श्रुत ज्ञान किसे कहते हैं, इसके कितने व कौन-कौन से भेद होते हैं?

उत्तर मति ज्ञान से जाने हुए पदार्थों के विशेष ज्ञान को श्रुत ज्ञान कहते हैं। इसके मुख्य रूप से दो भेद हैं 1. अंग प्रविष्टि, 2. अंग वाह्य।

अंग प्रविष्टि के आचारांग आदि बारह भेद होते हैं और अंग बाह्य के सामायिक आदि चौदह भेद होते हैं।

प्रश्न 17. श्रुत ज्ञान में 1,12,83,58,005 पद होते हैं तथा एक पद में 16,34,83,08,788 अक्षर होते हैं।

उत्तर मिथ्या ज्ञान किसे कहते हैं, इसके कितने व कौन-कौन से भेद होते हैं?

प्रश्न 18. मिथ्या ज्ञान किसे कहते हैं, इसके कितने व कौन-कौन से भेद होते हैं?

उत्तर मिथ्या ज्ञान पदार्थों के विपरीत ज्ञान/अयथार्थ ज्ञान को मिथ्या ज्ञान कहते हैं। इसके तीन भेद होते हैं 1. कुमति ज्ञान, 2. कुश्रुत ज्ञान, 3. कुअवधिज्ञान/विभंगावधि ज्ञान।

अध्याय 8

''गति मार्गणा''

प्रश्न 1. गति किसे कहते हैं, गति मार्गणा के अनुसार उसके कितने व कौन-कौन से भेद होते हैं?

उत्तर भव से भावान्तर की प्राप्ति का नाम गति है। गति मार्गणा के अनुसार गति के पाँच भेद हैं 1. नरक गति, 2. तिर्यंच गति, 3. मनुष्य गति, 4. देवगति, 5. सिद्ध गति।

प्रश्न 2. नरक गति किसे कहते हैं, तथा इसकी प्राप्ति कैसे होती है?

उत्तर नरक गति नाम कर्म को नरक गति कहते हैं, अथवा नारकी जीवों की गति को नरक गति कहते हैं। नरक गति की प्राप्ति बहुत आरम्भ करने से, बहुत परिग्रह करने से, रौद्रध्यान से, कृष्णादि लेश्या के तीव्र परिणामों से, मिथ्यात्वादि की तीव्रता से, जिनधर्म की विराधना से, निर्माल्य भक्षण से, सप्तव्यसन के सेवन से, देव, शास्त्र, गुरु की अवमानना, विराधना आदि करने से होती है।

प्रश्न 3. तिर्यंच गति किसे कहते हैं तथा इसकी प्राप्ति कैसे होती है?

उत्तर तिर्यंच गति नाम कर्म को तिर्यंच गति कहते है। अथवा जिस गति नाम कर्म के उदय से तिर्यंच में जन्म होता है, ऐसे तिर्यंच जीवों की गति तिर्यंच गति है। मायाचारी करने से, आर्तध्यान करने से, संक्लेशता युक्त भाव करने से तिर्यंच गति प्राप्त होती है।

प्रश्न 4. देव गति किसे कहते हैं तथा इसकी प्राप्ति कैसे होती है?

उत्तर देव गति नाम कर्म को ही देव गति कहते हैं अथवा जिस गति के उदय से जीव देवों में जन्म लेता है अथवा देवों की गति को ही देव गति कहते हैं। सम्यक् दर्शन से, शील व्रत पालन से, सराग संयम से, तप से, श्रावक के व्रतों का पालन करने से देव गति की प्राप्ति होती है।

प्रश्न 5. मनुष्य गति किसे कहते हैं, तथा इसकी प्राप्ति कैसे होती है?

उत्तर मनुष्य गति नाम कर्म को ही मनुष्य गति कहते हैं अथवा जिस गति के उदय से मनुष्यों में जन्म होता है, वह मनुष्य गति है। मनुष्य गति का नाम ही मनुष्य गति है। अल्प आरम्भ करने से व अल्प परिग्रह-धारण करने से, कषाय की मंदता से अथवा पुण्य-पाप रूप मिश्र परिणामों से मनुष्य गति की प्राप्ति होती है।

प्रश्न 6. मोक्ष गति या सिद्ध गति किसे कहते हैं?

उत्तर सर्व कर्मों से रहित जीव की जो गति है वह मोक्ष गति है, अथवा समस्त सिद्ध परमेष्ठियों की जो गति है, वह मोक्ष गति है। यह किसी भी कर्म के सद्भाव या उदय में नहीं है। यह क्षायिक गति है, शेष सभी औदयिकी भाव से प्राप्त गतियाँ कहलाती हैं।

प्रश्न 7. नारकी (नरक गति में) जीवों की जघन्य व उत्कृष्ट आयु कितनी होती है?

उत्तर नारकी जीवों की जघन्य आयु दस हजार वर्ष है तथा उत्कृष्ट आयु 33 सागर की है।

प्रश्न 8. तिर्यंच जीवों की उत्कृष्ट व जघन्य आयु कितनी होती है?

उत्तर तिर्यंच जीवों की उत्कृष्ट आयु तीनपल्य की व जघन्य अर्न्तमूहूर्त की होती है।

प्रश्न 9. देव गति के जीवों की जघन्य व उत्कृष्ट आयु कितनी होती

है?

उत्तर देव गति के जीवों (देवों) की जघन्य आयु 10,000 वर्ष व उत्कृष्ट आयु तैंतीस सागर की होती है।

प्रश्न 10. मनुष्यों की जघन्य व उत्कृष्ट आयु कितनी होती है?

उत्तर मनुष्यों की जघन्य आयु व अन्तर्मुहूर्त व उत्कृष्ट आयु तीनपल्य की होती है।

प्रश्न 11. चारों गतियों के जीवों की कुल व क्रमशः संख्या बताओ?

उत्तर चारों गतियों के जीवों की संख्या अनंतानंत है, देव असंख्यात हैं, नारकी जीव असंख्यात है, तिर्यंच गति के जीव अनंतानंत है, मनुष्य की संख्या 29 अंग प्रमाण है जो संख्यात है। सर्वाधिक तिर्यंच जाति के जीव हैं, उससे कम नरक गति के नारकी है, उससे कम देव गति के जीव हैं, सबसे कम मनुष्य गति के जीव हैं।

प्रश्न 12. किस गति के जीव के कितने गुणस्थान पाए जाते हैं?

उत्तर नरक गति के जीवों के मिथ्यात्व, सासादन, मिश्र, अविरत सम्यक् दृष्टि ये चार गुण स्थान पाये जाते हैं।

तिर्यंच के (तिर्यंच गति में) अधिकतम मिथ्यात्व, सासादन, मिश्र अविरत सम्यक् दृष्टि, देशविरत ये पाँच गुणस्थान पाए जाते हैं या हो सकते हैं।

देव गति के जीवों के मिथ्यात्व, सासादन, मिश्र, अविरत, सम्ययक् दृष्टि ये चार गुण स्थान पाये जाते हैं।

मनुष्य गति में मिथ्यात्व, सासादन, मिश्र, अविरत सम्यक् दृष्टि, देशविरत, प्रमत्त विरत, अप्रमत्त विरत, अपूर्णकरण, अनिवृत्तिकरण, सूक्ष्म साम्पराय, उपशांत, मोह, क्षीण मोह, सयोग केवली, अयोग केवली के चौदह गुणस्थान मनुष्य गति में ही पाये जाते हैं।

प्रश्न 13. चारों गतियों का बंध क्रमशः कौन-कौन से गुणस्थान तक पाया जाता है।

उत्तर नरक गति का बंध प्रथम गुण स्थान तक पाया जाता है।

तिर्यंच गति का बंध द्वितीय गुणस्थान तक पाया जाता है।

देव गति का बंध सप्तम गुणस्थान तक पाया जाता है।
मनुष्य गति का बंध चतुर्थ गुणस्थान तक पाया जाता है।
इसके आगे के गुणस्थान में इनका बंध नहीं होता है, क्योंकि उनकी बंध व्युच्छित्ति हो जाती है।

प्रश्न 14. चारों गतियों की उदय व्युच्छित्ति कहाँ पर पाई जाती है?

उत्तर नरक गति की उदय व्युच्छित्ति चतुर्थ गुणस्थान में हो जाती है, तिर्यंच गति की उदय व्युच्छित्ति पाँचवें गुणस्थान में हो जाती है, देव गति की उदय व्युच्छित्ति चतुर्थ गुणस्थान में हो जाती है, मनुष्य गति की उदय व्युच्छित्ति चौदहवें गुणस्थान में हो जाती है।

प्रश्न 15. चारों गतियों की सत्व व्युच्छिति क्रमशः कहाँ तक पाई जाती है?

उत्तर नरक गति व तिर्यंच गति की सत्व व्युच्छित्ति नौवें गुणस्थान के प्रथम भाग में पाई जाती है। देव गति की सत्व व्युच्छित्ति चौदहवें गुणस्थान के उपान्त समय में होती है। मनुष्य की सत्व व्युच्छित्ति चौदहवें गुणस्थान के अन्त समय में पाई जाती है।

प्रश्न 16. व्युच्छित्ति किसे कहते हैं?

उत्तर व्युच्छित्ति का अर्थ होता है बिछुड़ना, जिस कर्म प्रकृति की जिस गुण स्थान में व्युच्छित्ति कही है वह कर्म प्रकृति उस गुणस्थान बाद जीव से-बंध, उदय या सत्व रूप से बिछुड़ जाती है, उसके आगे के गुणस्थानों में उसका वियोग है। लौटकर पुनः उसी स्थान पर आगे पर मिलन सम्भावित है।

प्रश्न 17. किस गति में कितने इन्द्रिय जीव पाये जाते हैं?

उत्तर तिर्यंच गति में एक इन्द्रिय से लेकर पंच इन्द्रिय तक के जीव होते हैं, शेष तीन (मनुष्य, देव, नरक) गतियों में संज्ञी पंचेन्द्रियों जीव ही पाये जाते हैं।

प्रश्न 18. किस गति में कौन-कौन से वेद पाये जाते हैं?

उत्तर नरक गति में केवल नपुंसक वेद पाया जाता है, तिर्यंच गति में पुरुषवेद, स्त्रीवेद, नपुंसक वेद ये तीनों ही होते हैं। देव गति में पुरुषवेद ये दो ही वेद पाये जाते हैं। मनुष्य गति में पुरुष वेद, स्त्री वेद, नपुंसक वेद ये तीनों ही वेद पाये जाते हैं।

अध्याय 9

''सोलहवें तीर्थंकर भगवान शांतिनाथ का संक्षिप्त परिचय''

प्रश्न 1. भगवान शांतिनाथ के माता-पिता का क्या नाम था?

उत्तर माता का नाम ''ऐरा'' पिता का नाम विश्वसेन था।

प्रश्न 2. शांतिनाथ भगवान के चिह्न, व शरीर का वर्ण बताओ?

उत्तर चिह्न-हिरण, शरीर का वर्ण तपाये हुए सोने के समान था।

प्रश्न 3. शांतिनाथ भगवान के शरीर की अवगहना व आयु कितनी थी?

उत्तर आयु एक लाख वर्ष, अवगहना 40 धनुष थी।

प्रश्न 4. शांतिनाथ भगवान के गर्भ व जन्म कल्याणक की कौन-सी तिथि व नक्षत्र है?

उत्तर गर्भ तिथि भाद्र कृष्ण सप्तमी, गर्भ नक्षत्र भरणी।
जन्म तिथि ज्येष्ठ कृष्ण चौदस, जन्म नक्षत्र भरणी था।

प्रश्न 5. शांतिनाथ भगवान की दीक्षा तिथि व नक्षत्र कौन सा था?

उत्तर दीक्षा तिथि ज्येष्ठ कृष्ण चौदस, दीक्षा नक्षत्र भरणी था।

प्रश्न 6. शांतिनाथ भगवान को केवलज्ञान किस तिथि व नक्षत्र में हुआ था?

उत्तर केवल ज्ञान तिथि पौष शुक्ला ग्यारस।
केवल ज्ञान नक्षत्र भरणी था।

प्रश्न 7. शांतिनाथ भगवान को निर्वाण कब और कहाँ से हुआ?

उत्तर निर्वाण तिथि ज्येष्ठ कृष्ण-14 को सम्मेद शिखर से हुआ।

प्रश्न 8. शांतिनाथ भगवान को वैराग्य किस निमित्त से हुआ?

उत्तर वैराग्य जाति स्मरण से हुआ।

प्रश्न 9. शांतिनाथ भगवान ने किस वन में, किस वृक्ष के नीचे, कितने राजाओं के साथ दिगम्बर दीक्षा ग्रहण की थी?

उत्तर शालि वन में, तिलक वृक्ष के नीचे, 100 राजाओं के साथ दीक्षा ली।

प्रश्न 10. शांतिनाथ भगवान का छद्मस्थ काल कितने वर्ष रहा?

उत्तर 16 वर्ष रहा।

प्रश्न 11. शांतिनाथ भगवान के यक्ष-यक्षिणी का क्या नाम था?

उत्तर यक्ष का नाम गरुड़, यक्षिणी का नाम मानसी था।

प्रश्न 12. शांतिनाथ भगवान के समवशरण में मुख्य गणधर, मुख्य श्रोता, मुख्य आर्यिका कौन थी, नाम बताओ?

उत्तर मुख्य गणधर चक्रायुध, मुख्य श्रोता कुनाल, मुख्य आर्यिका हरिषेणा थी।

प्रश्न 13. शांतिनाथ भगवान के समवशरण में कुल गणधर मुनियों तथा आर्यिकाओं की संख्या कितनी थी?

उत्तर कुल गणधर 36, मुनि 62,000, आर्यिका 60,000 थी।

प्रश्न 14. शांतिनाथ भगवान का प्रथम आहार किस राजा के यहाँ हुआ था?

उत्तर प्रथम आहार राजा सुमित्र के यहाँ पर हुआ।

प्रश्न 15. शांतिनाथ भगवान के समवशण में कितने श्रावक-श्राविकायें, देव-देवियाँ व तिर्यंच थे?

उत्तर 2,00,000 श्रावक 4,00,000 श्राविकायें असंख्यात देव देवियाँ वं असंख्यात तिर्यंच थे।

प्रश्न 16. शांतिनाथ भगवान का तीर्थंकाल व केवलीकाल कितना था?

उत्तर केवली ज्ञान-24984 वर्ष, तीर्थकाल-1/2 पल्य + 1250 वर्ष।

प्रश्न 17. शांतिनाथ भगवान भगवान का देवगति के पूर्व भव में क्या नाम था, और उस भव के पिता का क्या नाम था?

उत्तर देवगति के पूर्व भव का नाम मेघरथ/दृढ़रथ।
पिता का नाम श्री विमल वाहन (धनरथ)।

प्रश्न 18. शांतिनाथ भगवान किस स्वर्ग से च्युत होकर, किस वंश में अवतरित हुए?

उत्तर शांतिनाथ भगवान सर्वार्थ सिद्धि विमान से च्युत होकर कुरु वंश में अवतरित हुए।

अध्याय 10

''दर्शन स्तोत्र''

दर्शनं देवदेवस्य, दर्शनं पापनाशनम्।

दर्शनं स्वर्गसोपानं, दर्शनं मोक्ष साधनम्॥1॥

अर्थ देवों के देव (जिनेन्द्र भगवान) का दर्शन पाप का नाश करने वाला है, यह देव दर्शन ही स्वर्ग की सीढ़ी है और मोक्ष का साधन है।

दर्शनेन जिनेन्द्राणां, साधूनां वंदनेन च।

न चिरं तिष्ठते पापं, छिद्रहस्ते यथोदकम्॥2॥

अर्थ जिस प्रकार छेद वाले हाथ में जल नहीं ठहरता है, उसी प्रकार जिनेन्द्र देवों तथा साधुओं के दर्शन करने से अधिक समय तक पाप नहीं ठहर सकते है, अर्थात् पाप धीरे-धीरे दूर हो जाते हैं।

वीतराग मुखं दृष्ट्वा, पद्मराग-सम्प्रभम्।

जन्म-जन्मकृतं पापं, दर्शनेन विनश्यति॥3॥

अर्थ पद्मराग मणि के समान प्रभा वाले वीतराग भगवान का मुख देखकर (अर्थात् दर्शन करने से) अनेक जन्मों में किए हुए पाप का नाश हो जाता है।

दर्शनं जिन सूर्यस्य, संसार ध्वान्तनाशनम्।

बोधनं चित्त पद्मस्य, समस्तार्थ प्रकाशनम्॥4॥

अर्थ जिनेन्द्र रूपी सूर्य का दर्शन संसार रूपी अंधकार को नष्ट करने वाला है, हृदय रूपी कमल को विकसित करने वाला है और समस्त पदार्थों को प्रकाशित करने वाला है।

दर्शनं जिन चन्द्रस्य, सद्धर्मामृत-वर्षणम्।

जन्मदाह विनाशाय, वर्धनं सुख वारिधेः॥5॥

अर्थ जिनेन्द्र रूपी चन्द्रमा का दर्शन सत् धर्म रूपी अमृत को बरसाने वाला है, जन्म रूपी दान को नाश करने के लिए सुख रूपी समुद्र को बढ़ाने वाला है।

जीवादितत्त्वं-प्रतिपादकाय, सम्यक्त्व-मुख्याष्ट-गुणार्णवाय।

प्रशांत रूपाय दिगम्बराय, देवाधि देवाय नमो जिनाय॥6॥

अर्थ जीव आदि सात तत्वों का स्वरूप बताने वाले, सम्यक्त्व आदि आठ गुणों के आश्रय, प्रशान्त रूप तथा दिगम्बर मुद्रा के धारी (देवाधि देव) जिनेन्द्र भगवान को नमस्कार हो।

चिदानन्दैक रूपाय, जिनाय परमात्मने।

परमात्म प्रकाशाय, नित्यं सिद्धात्मने नमः॥7॥

अर्थ ज्ञानानन्द ही जिसका स्वरूप है, आठ कर्मों को जीतने वाले हैं, परम तत्व आत्मा को प्रकाशित करने वाले हैं, ऐसे सिद्ध भगवान को सदैव नमस्कार है।

अन्यथा शरणं नास्ति, त्वमेव शरणं मम।

तस्मात्कारुण्य भावेन, रक्ष रक्ष जिनेश्वर॥8॥

अर्थ हे भगवान्! आप ही मेरे लिए शरण हैं, मुझे अन्य कोई शरण प्राप्त नही है। इसीलिए हे जिनेश्वर! करुणा भाव से मेरी रक्षा करो, रक्षा करो।

नहि त्राता नहि त्राता, नहि त्राता जगत्त्रये।

वीतरागात्परो देवो, न भूतो न भविष्यति॥9॥

अर्थ तीनों लोकों में जीवों का कोई रक्षक नहीं है, रक्षक नहीं है, रक्षक नहीं है, तो वीतरागी देव के सिवाय अन्य कोई देव न है और न हुआ है, और न ही होगा।

जिनेभक्ति-र्जिनेभक्ति-र्जिनेभक्ति-र्दिने-दिने।

सदामेऽस्तु सदामेऽस्तु, सदामेऽस्तु भवे-भवे॥10॥

अर्थ हे भगवान्! प्रतिदिन मेरी आप में भक्ति हो, भक्ति हो, भक्ति हो और जन्म-जन्म में सदैव हो, सदैव हो, सदैव हो।

जिन धर्म-विनिर्मुक्तो, मा भवेच्चक्रवर्त्यपि।
स्याच्चेटोऽपि परिद्रोऽपि, जिन धर्मानुवासितः॥11॥

अर्थ जिन धर्म रहित चक्रवर्ती पद भी मुझे प्राप्त नहीं हो। भले ही सेवक हो जाऊँ या दरिद्री भी हो जाऊँ, किन्तु जिन धर्म सहित रहूँ।

जन्म-जन्म कृतं पाप, जन्म कोटि मुपार्जितम्।
जन्म-मृत्यु-जरा रोगं, हन्यते जिन दर्शनात्॥12॥

अर्थ जन्म-जन्म में किए पाप, करोड़ों जन्मों में उपार्जित पाप और जन्म, मृत्यु, बुढ़ापा, रोग जिनेन्द्र देव के दर्शन से नष्ट हो जाते हैं।

अद्याभवत्सफलता नयन-द्वयस्य, देव त्वदीय-चरणाम्बुज-वीक्षणेन।
अद्य त्रिलोक-तिलक प्रतिभासते में, संसार वारिधिरयं चुलुक-प्रमाणमः॥

अर्थ हे देव! आपके चरण कमलों के दर्शन से आज मेरे दोनों नेत्र सफल हो गए हैं। हे त्रिलोकीनाथ! आज मुझे यह संसार रूपी सागर चुल्लू के बराबर छोटा सा जान पड़ता है अर्थात् आपके दर्शन के प्रताप से मैं संसार रूपी समुद्र से सहज ही पार हो जाऊँगा।

प0 पू0 अभीक्ष्ण ज्ञानोपयोगी आचार्य श्री वसुनन्दी जी मुनिराज द्वारा रचित, सम्पादित साहित्य

प्रथमानुयोग शास्त्र

1. नंगानंग कुमार चरित्र
2. मौन व्रत कथा
3. प्रभंजन चरित्र
4. चारुदत्त चरित्र
5. सीता चरित्र
6. सप्त व्यसन चरित्र
7. वीर वर्द्धमान चरित्र-भाग- 1, 2
8. देशभूषण कुलभूषण चरित्र
9. चित्रसेन पद्मावती चरित्र
10. सुदर्शन चरित्र
11. सुरसुन्दी चरित्र
12. करकण्डु चरित्र
13. नागकुमार चरित्र
14. भद्रबाहु चरित्र
15. हनुमान चरित्र
16. महापुराण भाग-1, 2
17. श्री जम्बूस्श्रमी चरित्र
18. यशोधर चरित्र
19. व्रतकथा संग्रह
20. रामचरित भाग 1, 2
21. रामचरित (संयुक्त प्रकाशन)
22. आराधना कथा कोष भाग 1, 2, 3
23. शांतिपुराण भाग 1, 2
24. सम्यक्त्व कौमुदी
25. धर्मामृत भाग 1, 2
26. पुण्यास्रव कथा कोष भाग 1, 2
27. पुराण सार संग्रह भाग 1, 2
28. सुलोचना चरित्र
29. गौतम स्वामी चरित्र
30. महिपाल चरित्र
31. जिनदत्त चरित्र
32. सुभौम चक्रवर्ती चरित्र
33. चेलना चरित्र
34. धन्यकुमार चरित्र
35. सुकुमाल चरित्र
36. क्षत्रचूड़ामणि (जीवंधर चरित्र)
37. चन्द्रप्रभ चरित्र
38. कोटिभट्ट श्रीपाल चरित्र
39. महावीर पुराण
40. वरांग चरित्र
41. पाण्डव पुराण
42. सुशीला उपन्यास
43. भरतेश वैभव
44. पार्श्वनाथ पुराण
45. त्रिवेणी
46. मल्लिनाथ पुराण
47. विमलनाथ पुराण
46. श्रेणिक चरित्र

काव्य शास्त्र

1. चैन की ज़िंदगी
2. हीरों का खजाना
3. कल्याणी
4. हाइकु
5. क्षरातीत अक्षर
6. न मैं चुप हूँ न गाता हूँ
7. मुक्तिदूत के मुक्तक

विधान/पूजन साहित्य

1. शांतिनाथ विधान
2. अजितनाथ विधान
3. णमोकार महार्चना
4. दुखों से मुक्ति (सहस्रनाम विधान)
5. चन्द्रप्रभ विधान
6. श्रद्धा के अंकुर

7. कलिकुण्ड पार्श्वनाथ विधान
8. श्रीजम्बूस्वामी विधान
9. श्रीवासुपूज्य विधान
10. संभवनाथ विधान
11. निर्ग्रन्थ भक्ति
12. पूजा-अर्चना

अन्य साहित्य

1. निज अवलोकन
2. धम्म रसायण
3. जिन श्रमण भारती
4. रयणसार
5. योगामृत भाग-1, 2
6. अध्यात्म तरंगिनी
7. योगसार भाग-1, 2
8. भव्य प्रमोद
9. सदार्चन सुमन
10. तत्त्वार्थ सार
11. तनाव से मुक्ति
12. आराधनासार
13. उपासकाध्ययन भाग-1, 2
14. नीतिसार समुच्चय
15. सिन्दूर प्रकरण
16. चार श्रावकाचार
17. स्वप्न विचार
18. समाधितंत्र
19. धर्मरत्नाकर
20. विद्यानंद उवाच
21. डाक्टरों से मुक्ति
22. आ जाओ प्रकृति की गोद में
23. तत्त्व ज्ञान तरंगिणी
24. सार समुच्चय
25. प्रबोधसार
26. भगवती आराधना
27. कुरल काव्य
28. प्रकृति समुत्कीर्तन
29. कर्म प्रकृति
30. व्रताधीश्वर रोहिणी व्रत
31. अन्तर्यात्रा
32. श्रीशांतिनाथ भक्तामर सम्मेदशिखर विधान
33. अरिष्ट निवारक विधान संग्रह
34. पंचपरमेष्ठी विधान
35. तत्त्व भावना
36. सुख का सागर चालीसा संग्रह
37. प्रश्नोत्तरश्रवकाचार
38. भावत्रय फलप्रदर्शी
39. तनाव से मुक्ति-भाग 1 (भजन)
40. इक दिन माटी में मिल जाना (भजन)
41. कर्म विपाक
42. सरस्वती उपासना
43. जैन वर्णमाला

प्रवचन साहित्य

1. सीप के मोती (महावीर जयंती)
2. चूको मत
3. जय बजरंग बली
4. शायद यही सच
5. वसुनंदी उवाच (प्रवचनांश)
6. सम्राट चन्द्रगुप्त
7. जीवन का सहारा
8. तैयारी जीत की
9. श्रुत निर्झरी
10. उत्तम क्षमा
11. मान महा विष रूप
12. तप चाहें सुर राय
13. जिस बिना नहीं, जिनराज सीजें
14. निज हाथ दीजे साथ लीजे
15. परिग्रह चिंता दुःख ही मानो
16. रंचक दगा बहुत दुःख दानी
17. लोभ पाप को पाप बखानो
18. सत्यवादी जग में सुखी
19. उत्तम ब्रह्मचर्य
20. नारी का धवल पक्ष

21. आईना मेरे देश का
22. दशामृत
23. न पिटना बुरा है न मिटना
24. गुरुत्तं 1, 2, 3, 4, 5
25. मीठे प्रवचन- 1, 2, 3, 4
26. बोधि वृक्ष
27. खोज क्यों रोज रोज
28. धर्म की महिमा
29. सफलता के सूत्र
30. आज का निर्णय (प्रवचनांश)
31. गुरु कृपा
32. गुरुवर तेरा साथ (प्रवचनांश)
33. स्वाति की बूँद
34. गागर में सागर (प्रवचनांश)
35. खुशी के आंसू

अनुवादित साहित्य

1. वसु ऋद्धि
2. तत्त्वोपदेश (छहढ़ाला)
3. दिव्य लक्ष्य
4. पंचरत्न
5. गुणरत्नाकर (रत्नकरण्डक श्रावकाचार)
6. तत्त्वार्थ सूत्र
7. विषापहार स्तोत्र
8. मूलाचार प्रदीप
9. पुरुषार्थ सिद्धियुपाय
10. जिनकल्पि सूत्रम्

रचित साहित्य

1. हमारे आदर्श
2. आहार दान
3. सर्वोदयी नैतिकधर्म
4. कलम पट्टी बुद्धिका
5. धर्म संस्कार
6. णंदिणंद सुतं
7. जिन सिद्धान्त महोदधि
8. सद्गुरु की सीख
9. धम्मस्स सुत्ति सग्गहो
10. आधुनिक समस्याओं को प्रमाणिक समाधान
11. धर्म बोध संस्कार-1,2,3,4
12. संस्कारादित्य
13. दान के अचिन्त्य प्रभाव
14. रट्ठसंति महाजग्गो

प्रेस में

1. तच्च सारो
2. विणय सारो
3. रदण सारो
4. नौनिधि
5. धर्मसंस्कार भाग-2
6. सुभाषित रत्न संदोह
7. जदि किदि कम्मो
8. अंते समाहि मरणं
9. सारांश

प०पू० आचार्य श्री वसुनंदी जी मुनिराज के जीवन चरित्र पर आधारित साहित्य

1. समझाया रविन्दु न माना
2. दृष्टि दृश्यों के पार
3. पग वंदन
4. अक्षर शिल्पी
5. वसुनंदी प्रश्नोत्तरी (प्रैस में)